रांची, शनिवार
04.05.2024
वर्ष : 9, अंक : 152 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.com | bihanbharat@gmail.com | @bihan_bharat | Bihan Bharat | RNI NO - JHAHIN/2015/73988

प्रधानमंत्री मोदी के रोड शो में उमड़ा जनसैलाब
लगे अबकी बार 400 पार के नारे लगे

बिभा संवाददाता

रांची। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार शाम चाईबासा में जनसभा को संबोधित करने के बाद राजधानी रांची पहुंचे। यहां बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से निकलने के बाद उन्होंने बिरसा चौक पर भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। साथ ही प्रतिमा की परिक्रमा कर लोगों का अभिवादन किया। इसके बाद उनका काफिला आगे बढ़ गया। इस दौरान लोगों ने अबकी बार 400 पार के नारे लगाए। वहीं, खुली जिप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लोगों को नमस्कार करते नजर आये और हाथ में कमल का निशान लिए थे, जो लोगों को दिखाते हुए और मुस्कुराते हुए मतदान की अपील कर रहे थे।

प्रधानमंत्री मोदी ने रांची के भारत माता चौक हरमू से रोड शो की शुरूआत की। काफिले में रांची लोकसभा के भाजपा उम्मीदवार संजय सेठ, भाजपा विधायक दल के नेता अमर कुमार बावरी ने खुली जीप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का स्वागत किया। काफिला जैसे-जैसे अपने निर्धारित कार्यक्रम स्थल रातू रोड चौराहे के करीब पहुंच रहा था लोगों में काफी उत्साह देखने को मिला। मोदी के आगमन पर भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों में खासा उत्साह रहा। उनकी एक झलक पाने

के लिए सड़क के दोनों ओर बड़ी संख्या में समर्थक और भाजपा कार्यकर्ताओं का जमावड़ा रहा। बिरसा चौक से लेकर रातू रोड तक सड़क किनारे लोग प्रधानमंत्री मोदी के आने का इंतजार करते रहे। जगह-जगह मोदी के स्वागत की तैयारी की गई थी। भाजपा के साथ आजसू के नेता और कार्यकर्ता भी प्रधानमंत्री के स्वागत में जुटे थे।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रातू रोड चौराहे के पास स्वागत कार्यक्रम रखा गया था, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत ढोल नगाड़े और लोकल डांस के साथ किया गया। इसके बाद प्रधानमंत्री का काफिला राजभवन की ओर बढ़ गया। बता दें कि रांची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार रोड शो किया। पहली बार साल 2019 में उन्होंने रोड शो किया था। दूसरी बार साल 2023 में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के मौके पर आए थे, तब उन्होंने रोड शो किया था।

बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से रोड शो शुरू होने के निर्धारित स्थल के बीच भाजपा कार्यालय है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत में भाजपा कार्यालय को आकर्षक तरीके से फूलों से सजाया गया था। बड़े-बड़े हॉर्डिंग और पोस्टर लगाए गए थे। भारत माता चौक से रातू रोड तक छह से सात जगहों पर स्वागत मंच बनाए गए थे। इस दौरान प्रधानमंत्री का स्वागत भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं ने किया।

पीएम मोदी के रोड शो को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। अभी से ही हरमू बायपास रोड में गाड़ियों की आवाजाही को रोक दिया गया था। रोड शो के निर्धारित रूट में आने वाले तमाम कट को बैरिकैडिंग कर बंद कर दिया गया था। सड़क के दोनों ओर डबल लेयर में सुरक्षा के इंतजाम किए गए थे। रूट के दोनों ओर जितने भी ऊंचे भवन हैं, वहां भी सुरक्षा बलों की तैनाती की गई थी। ये पूरे रोड शो के दौरान नजर रखे हुए थे। प्रमुख रोड शो के रूट के प्रमुख चौराहों में सुरक्षा बलों की तैनाती की गई थी।

नरेन्द्र मोदी ने दी गारंटी, उनके रहते कोई भी संविधान को हाथ नहीं लगा सकता

चाईबासा । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को दो दिवसीय दौरे पर चाईबासा पहुंचे। उन्होंने चाईबासा के टाटा कॉलेज मैदान में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। मोदी ने कहा कि कांग्रेस संविधान में बदलाव कर ओबीसी, आदिवासी और पिछड़े का हक छीन लेगी और मुसलमानों को दे देगी। कर्नाटक में रातों-रात एक फतवा निकाला गया, जिसमें ये कहा गया कि कर्नाटक में जितने भी मुसलमान हैं वह सब ओबीसी हैं। इसके बाद उन्हें ओबीसी आरक्षण दे दिया गया और पूरा देश देखता रह गया। उन्होंने कहा कि ये मेरी गारंटी है कि उनके रहते कोई भी संविधान को हाथ भी नहीं लगा सकता।

मोदी ने कहा कि झारखंड क्रांतिकारियों की धरती है। कांग्रेस ने झारखंड का कभी सम्मान नहीं किया है। कांग्रेस को आदिवासी विरोधी करार देते हुए कहा कि इंडी गठबंधन ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का विरोध किया था। साथ ही कहा कि

मेरा झारखंड दिल्ली से कम है क्या। उन्होंने कहा कि आपका यह प्यार और आशीर्वाद ही मोदी की ताकत है। भाजपा और झारखंड का रिश्ता दिल का है। झारखंड के लोगों की भावनाओं को यदि कोई समझता और सुलझाता है तो वो सिर्फ और सिर्फ भाजपा ही है। उन्होंने कहा कि झारखंड को अटल ने बनाया, भाजपा ने बनाया। कांग्रेस ने झारखंड का घोर विरोध किया। ये भाजपा की ताकत थी, अटल की दूरदृष्टि थी कि झारखंड बना।

मोदी ने कहा कि कांग्रेस को मंजूर नहीं था कि यहां के संसाधन आपके काम आएं। पहले वो एक रुपये देते थे तो उसमें से वो 85 पैसे मार लेते थे। आज मैं एक रुपये भेजता हूं तो पूरा 100 पैसा आपके अकाउंट में जाता है। उन्होंने झामुमो और कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस ओबीसी और पिछड़ों का हक मुसलमानों को दे देगी और घुसपैठियों के कारण झारखंड बंगाल बन जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

राहुल गांधी सात को आयेंगे गुमला के बसिया में करेंगे चुनावी सभा

रांची। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी सात मई को झारखंड आयेंगे। राहुल गांधी गुमला के बसिया में चुनावी सभा को संबोधित करेंगे। इस दौरान प्रथम चरण वाले चुनाव के सभी चार आईएनडीआईए उम्मीदवार राहुल गांधी के मंच पर मौजूद रहेंगे। इसके साथ ही राहुल गांधी के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन, पूर्व मुख्यमंत्री की पत्नी कल्पना सोरेन सहित इंडिया गठबंधन के अन्य नेता शामिल होंगे चौथे चरण के उम्मीदवारों में लोहरदगा से सुखदेव भगत, खूंटी से कालीचरण मुंडा, पलामू से राजद उम्मीदवार ममता भुइयां और सिंहभूम की झामुमो प्रत्याशी जोबा मांझी आदि मंच पर मौजूद रहेंगी। राहुल गांधी के इस कार्यक्रम को देखते हुए प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर दो दिनों में लोहरदगा, खूंटी, गुमला और सिमडेगा में बैठक कर चुके हैं। इसकी पुष्टि कांग्रेस के एक वरीय नेता ने शुक्रवार रात की है।

14 मई को नामांकन दाखिल करेंगे पीएम मोदी

नई दिल्ली: लोकसभा चुनाव पर सभी पार्टियां जोर लगा रही है और एक दूसरे पर खूब तानाशाही बरसा रही है। इस बीच एक बड़ी खबर सामने रही है कि पीएम मोदी 13 मई को वाराणसी में रोड शो करेंगे, अगले दिन यानि 14 मई को नामांकन दाखिल करेंगे। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तर प्रदेश की वाराणसी लोकसभा सीट से सांसद हैं। भारतीय जनता पार्टी ने पीएम मोदी को इसबार भी वाराणसी से ही उम्मीदवार बनाया है। वाराणसी में आखिरी चरण के दौरान मतदान होना है, यानी 1 जून को प्रधानमंत्री मोदी के निर्वाचन क्षेत्र में वोटिंग होगी ।

सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल को अंतरिम राहत देने पर विचार करने का दिया संकेत

नई दिल्ली : उच्चतम न्यायालय ने आम आदमी पार्टी (आप) नेता एवं मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की दिल्ली आबकारी नीति से संबंधित कथित धनशोधन एक मामले में गिरफ्तारी और हिरासत को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर अंतरिम जमानत देने पर विचार करने का शुक्रवार को संकेत दिया। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दिपांकर दत्ता की पीठ ने सुनवाई के दौरान मौखिक तौर पर कहा कि उसने अभी कोई फैसला नहीं किया, लेकिन सुनवाई लंबी चलने की संभावना के मद्देनजर वह अंतरिम जमानत के सवाल पर विचार कर सकती है।

जमशेदपुर से जेएमएम प्रत्याशी समीर मोहंती ने किया नामांकन
झारखंड की सभी सीटों पर इंडी गठबंधन की होगी जीत : मुख्यमंत्री

बिभा संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर लोकसभा सीट से झामुमो प्रत्याशी समीर मोहंती ने दो सेटों में शुक्रवार को नामांकन किया। नामांकन से पूर्व मोहंती ने आवास पर पूजा-अर्चना की। इस दौरान उनका पूरा परिवार उनके साथ रहा। उनके नामांकन में मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, विधायक रामदास सोरेन और सुप्रियो भट्टाचार्य मौजूद थे। समीर मोहंती के नामांकन से बाद साकची स्थित बोधि मैदान में आयोजित सभा में चम्पाई सोरेन ने कहा कि देश में महागठबंधन की सरकार बनने जा रही है। इंडी गठबंधन मजबूत है और हम पूरी मजबूती से लोकसभा चुनाव में लड़ रहे हैं। देश में किसी की लहर नहीं चल रही है। प्रधानमंत्री मोदी के चाईबासा दौरे के सवाल

पर उन्होंने कहा कि चुनावी माहौल है, कोई कहीं आ-जा सकता है। हमारे गठबंधन और प्रत्याशी पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। भाजपा की सरकार जुमलेबाजी की सरकार है। इस बार महागठबंधन झारखंड की सभी 14 सीटों पर कब्जा जमा रही है।

झामुमो महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने समीर मोहंती के जीत का दावा किया। उन्होंने कहा कि देश जुमलों की सरकार से त्रस्त हो चुका है। प्रधानमंत्री के पास आज कोई मुद्दा नहीं है, जिसे वे जनता के बीच रख सकें। अब वे चुनावी सभाओं में पाकिस्तान का जिक्र कर रहे हैं। दुनिया के सबसे बड़े बलात्कारी के साथ मंच साझा कर रहे हैं। भाजपा महिलाओं की सुरक्षा के मामले में पूरी तरह से विफल साबित रही है।

भट्टचार्य ने कहा कि जमशेदपुर की जनता इस बार मन बना चुकी है। समीर मोहंती को जीत से कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि समीर के नामांकन में लाखों की संख्या में जुटे गांव से लेकर शहर तक की जनता इस बात का गवाह है कि जमशेदपुर में बदलाव होने जा रहा है। ईडी के रडार पर आने के सवाल पर सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि बंगाली हूं, किसी से डरने वाला नहीं हूं। मैं हर तरह की जांच के लिए तैयार हूं।

राहुल गांधी ने रायबरेली सीट से नामांकन दाखिल किया

एजेंसी

रायबरेली : कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को रायबरेली लोकसभा सीट के लिये अपना नामांकन दाखिल किया।

श्री गांधी ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर अपना नामांकन दाखिल किया। इस अवसर पर उनकी मां सोनिया गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे मौजूद रहे।

गौरतलब है कि वर्ष 1999 से श्री राहुल गांधी की मां श्रीमती सोनिया गांधी इस सीट का संसद में प्रतिनिधित्व करती रही हैं हालांकि मौजूदा लोकसभा चुनाव में उन्होने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुये चुनाव लड़ने से मना कर दिया था। श्री राहुल गांधी का रायबरेली में मुकाबला भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दिनेश प्रताप सिंह से होगा जिन्होंने आज ही अपना नामांकन दाखिल किया है।

इससे पहले श्री गांधी 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की स्मृति ईरानी से चुनाव हार गये थे हालांकि वह केरल की वायनाड सीट से चुनाव जीत कर लोकसभा पहुंचे थे।

श्री गांधी के नामांकन जुलूस के दौरान हजारों समर्थकों की भीड़ मौजूद थी जबकि सड़क के दोनो ओर और छतों पर गांधी परिवार की एक झलक पाने के लिये चिलचिलाती गर्मी में हजारों लोग मौजूद रहे। इस दौरान समूचे रायबरेली के कई हिस्सों में जाम की स्थिति बन गयी। नामांकन जुलूस का नेतृत्व उनकी बहन एवं राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा कर रही थी। गौरतलब है कि रायबरेली की सांसद रही श्रीमती सोनिया गांधी ने स्वास्थ्य कारणों से राज्य सभा जाते हुए यहां की जनता को एक भावुक पत्र लिखा था कि उनके स्थान पर उनके परिवार का ही कोई व्यक्ति यहाँ से चुनाव लड़ेगा जिसके बाद से ही यहां श्री राहुल गांधी अथवा उनकी बहन प्रियंका गांधी के चुनावी रण में उतरने के कयास लगाये जाने लगे हैं।

चुनाव के प्रत्येक चरण के बाद मतदान प्रतिशत के आंकड़े समय पर जारी करना महत्वपूर्ण : निर्वाचन आयोग

एजेंसी

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने शुक्रवार को कहा कि यह प्रत्येक चरण के मतदान के बाद समय पर मतदान प्रतिशत के आंकड़ों को जारी करने को उचित महत्व देता है। निर्वाचन आयोग का यह बयान, मतदान प्रतिशत जारी करने में इसके देर करने और विसंगतियों के विपक्ष के आरोपों के बीच आया है।

वाम दल, तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस सहित विपक्षी पार्टियों ने दावा किया था कि निर्वाचन आयोग मतदान के आंकड़े को जानबूझ कर साझा नहीं कर रहा और 19 अप्रैल को हुए प्रथम चरण के मतदान के बाद आंकड़े साझा करने में देरी की गई। आयोग के बयान में कहा गया है, निर्वाचन आयोग के कामकाज में पारदर्शिता एक स्थापित परंपरा है। वैधानिक आवश्यकताओं के अनुसार, प्रत्येक मतदान केंद्र पर मतदान प्रतिशत को फॉर्म 17 सी में पूर्ण संख्या में दर्ज करना है।

पारदर्शिता के एक मजबूत उपाय के रूप में, निर्वाचन अधिकारी और सभी उपस्थित मतदान एजेंट द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित फॉर्म 17 सी की प्रतियां सभी उपस्थित मतदान एजेंट के साथ साझा की जाती हैं। आयोग ने कहा, ...यहां तक कि डाले गए मतों की वास्तविक संख्या का बूथ-वार आंकड़ा भी उम्मीदवारों के पास उपलब्ध है, जो एक वैधानिक आवश्यकता है।

अन्य हितधारकों और मीडिया को जानकारी सार्वजनिक करने की पहल के तहत राज्य, संसदीय क्षेत्र और विधानसभा क्षेत्रवार अस्थायी मतदान आंकड़े आयोग के वोटर टर्नआउट ऐप के माध्यम से उपलब्ध कराए जाते हैं, जिन्हें नियमित रूप से अद्यतन किया जाता है। बयान के अनुसार, आयोग समय पर मतदान प्रतिशत के आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है जो आगामी चरणों में मीडिया और अन्य हितधारकों के लिए उपयोगी हो।

निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को कहा था कि मौजूदा लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 66.14 प्रतिशत और दूसरे चरण में 66.71 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। कांग्रेस, माकपा और तृणमूल कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव के पहले और दूसरे चरण के मतदान के अंतिम आंकड़े जारी करने में देरी को लेकर उस दिन सवाल उठाया था। दूसरे चरण का मतदान 26 अप्रैल को हुआ था।

कांग्रेस ने कहा था कि पहली बार, प्रथम चरण के मतदान के 11 दिन बाद और दूसरे चरण के चार दिन बाद भी आयोग द्वारा अंतिम मतदान प्रतिशत प्रकाशित नहीं किया गया है। वहीं, आधिकारिक तौर पर मतदान का आंकड़ा साझा करते हुए, आयोग ने कहा था कि चुनाव के पहले चरण में, 66.22 प्रतिशत पुरुष और 66.07 महिला मतदाताओं ने मतदान किया।

वहीं तृतीय लिंग के 31.32 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान किया। वर्ष 2019 के चुनाव में पहले चरण में 69.43 प्रतिशत मतदान हुआ था। मौजूदा चुनाव के तहत, 26 अप्रैल को हुए दूसरे चरण के मतदान में पुरुषों का मतदान प्रतिशत 66.99 दर्ज किया गया, जबकि महिलाओं का 66.42 प्रतिशत रहा। जबकि 23.86 प्रतिशत तृतीय लिंग मतदाताओं ने वोट डाले। पिछले लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में 69.64 प्रतिशत मतदान हुआ था। मौजूदा आम चुनाव के पहले चरण में 102 सीट पर, जबकि दूसरे चरण में 88 सीट पर मतदान हुआ।

हेमंत सोरेन को छह मई को चाचा के श्राद्ध कर्म में शामिल होने की दी अनुमति

बिभा संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट ने शुक्रवार को जमीन घोटाले से जुड़े मामले में होटवार स्थित बिरसा मुंडा जेल में बंद पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को उनके चाचा के श्राद्ध कर्म में छह मई को पुलिस कस्टडी में शामिल होने की अनुमति दे दी। साथ ही हाई कोर्ट के जस्टिस रंगन मुखोपाध्याय की कोर्ट ने उनकी प्रोविजनल बेल की याचिका को खारिज कर दिया। पुलिस कस्टडी के दौरान कोर्ट ने मीडिया और गवाह से बात नहीं करने या कोई राजनीतिक बयान नहीं देने की बात भी कही है।

हेमंत सोरेन के चाचा राजा राम सोरेन का शनिवार की सुबह निधन हो गया था। हेमंत ने

चाचा के श्राद्ध कर्म में शामिल होने के लिए हाई कोर्ट से छह मई के लिए प्रोविजनल बेल मांगी थी। गत शनिवार को ईडी की विशेष अदालत ने चाचा के अंतिम संस्कार एवं क्रिया कर्म में शामिल होने के लिए हेमंत सोरेन की 13 दिनों की मांगी गई प्रोविजनल बेल को नामंजूर कर दिया था।

संक्षिप्त खबरें

वाहन जांच में मिले पांच करोड़ रूपए के सोने-चांदी के जेवर जांच में लगी अधिकारियों की टीम

रामगढ़ः रामगढ़ जिले के मांडू थाने के पास पुलिस ने गुरुवार को एक गाड़ी से करीब पांच करोड़ रुपए का जेवर बरामद किया है। ये जेवर सात पेटी में भरे हुए थे। इसे फिलहाल जब्त कर लिया गया है। लोकसभा चुनाव को लेकर राज्यभर में वाहनों की की सघन जांच चल रही है।इसी जांच के दौरान रांची-पटना रोड पर स्थित मांडू थाने के पास मजिस्ट्रेट दीपक कुमार और एएसआई निशिकांत शर्मा ने एक गाड़ी की तलाशी ली।

उसमें सात पेटियों में सोने-चांदी के जेवर मिले। जानकारी मिलते ही एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद भी मांडू पहुंचे। उधर, सूचना मिलते ही आयकर विभाग की टीम भी पहुंच गई। सभी अधिकारी वाहनों में रखे आभूषण और दस्तावेज खंगालने में जुट गए। देर रात तक कार्रवाई चल रही थी। इस संबंध में पूछने पर आयकर विभाग के अधिकारियों ने कहा कि करीब सात पेटी में जेवर हैं।जांच चल रही है। इसलिए अभी कुछ भी नहीं कहा जा सकता। उधर, गाड़ी में तैनात गार्ड आलोक सिंह ने बताया कि ये जेवर रांची एयरपोर्ट से रिसीव कर हजारीबाग पहुंचाया जा रहा था। इसे ऑर्डर पर कंपनी की ओर से हजारीबाग में विभिन्न दुकानों पर सप्लाई की जानी थी। गाड़ी में उनके अलावा ड्राइवर सुमन और स्कॉटर बिरेंद्र थे। इस संबंध में रामगढ़ के डीसी चंदन कुमार ने बताया कि जेवर मिलने पर आयकर विभाग के अधिकारी दस्तावेजों की जांच कर रहे हैं। जांच पूरी होने तक जेवर और वाहन को पुलिस कस्टडी में सुरक्षित रखा गया है। जांच पूरी होने के बाद ही इस संबंध में कुछ कहा जा सकता है।

हावड़ा- इंदौर स्पेशल ट्रेन की समय सारणी में किया गया बदलाव

धनबाद : गाड़ी संख्या 09336 हावड़ा- इंदौर स्पेशल ट्रेन की समय सारणी में बदलाव किया गया हैं कअब यह ट्रेन दिनांक 05.05.24(रविवार) को हावड़ा से 17.40 बजे खुलने के बजाय 09.35 बजे खुलेगी, 14.20 बजे धनबाद पहुंचेगी और यहाँ से 14.30 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 15.10 बजे गोमो पहुंचेगी और यहाँ से 15.15 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 15.30 बजे पारसनाथ पहुंचेगी और यहाँ से 15.35 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 16.20 बजे कोडरमा पहुंचेगी और यहाँ से 16.22 बजे आगे के प्रस्थान करेगी एवं सोमवार को 17.00 बजे इंदौर पहुंचेगी ।

कांके चौड़ी बस्ती में आदिवासी युवा सम्मेलन संपन्न

रांची। कांके प्रखंड की चौड़ी बस्ती में शुक्रवार को आदिवासी युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय ने कहा कि हमारी सरकार आते ही आदिवासी हितों की रक्षा निश्चित रूप से की जाएगी। कांग्रेस शुरू से ही आदिवासी हितों को लेकर कृत संकल्प है। इस मौके पर कांके विधानसभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी सुरेश कुमार बैठा, आदिवासी नेता प्रेम शाही मुंडा, शिवा कच्छप, अभय भुट्टकुवंर, नारायण उरांव, लाल महली, चमन तिर्की, अमर तिर्की, धर्मदेव भगत, संजू देवी, बुद्धेश्वर कारमाली, रामटहल नायक, मोदी उरांव ने भी अपनी बातों को रखा।कार्यक्रम की अध्यक्षता सुरेंद्र लिंडा जी ने की। कार्यक्रम का संचालन कुंदरसी मुंडा ने। किया

तीन दिवसीय स्पीचक्राफ्ट कार्यक्रम का आयोजन

रांची : जेसीआई यूथ के द्वारा आज से तीन दिवसीय स्पीचक्राफ्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन झारखण्ड चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष किषोर मंत्री ने किया। तीन दिनों तक चलनेवाले इस कार्यक्रम में लोगों को माइक पर बोलने, स्टेज पर खडे होकर संवाद करने की कला, विषय पर पकड, आत्मविष्वास जैसी चीजों को सिखाया जायेगा। लोगों को प्रषिक्षण देने के लिए कोलकाता, नागपुर, लखीमपुर से विषेषज्ञों की टीम भी बुलाई गई है। उक्त जानकारी जेसीआई यूथ के अध्यक्ष सोनल अग्रवाल ने देते हुए कहा कि एक बार में 30-35 लोगों को प्रषिक्षित किया जायेगा। जेसीआई यूथ के द्वारा इस आयोजित कार्यक्रम में लोगों का खूब रेस्पांस मिल रहा है। चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री ने जेसीआई यूथ के इस प्रयास की प्रषंसा करते हुए कहा कि इससे वैसे लोग जो स्टेज फियर के कारण लोगों के सामने बोलने में हिचकिचाते हैं, उनका आत्मविष्वास बढ़ेगा। प्रषिक्षुओं का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि जब आप स्टेज पर हों तो लोगों को जोडे रखने के लिए उनसे संवाद जरूरी है। मंच पर खडे व्यक्ति के संवाद करने से लोग जुडते हैं। यदि आपमें आत्मविष्वास है तो आप आसानी से अपनी बातों को रख सकते हैं। मौके पर चैंबर के उपाध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा और सह सचिव अमित शर्मा ने भी जेसीआई यूथ के इस तीन दिवसीय आयोजन की सराहना की। यह भी कहा कि जेसीआई और चैंबर के संयुक्त प्रयास से आगे भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की पहल की जायेगी। मौके पर जेसीआई यूथ की तरफ से पूर्व नेषनल प्रेसिडेंट राखी जैन, जोन प्रेसिडेंट वसुंधरा सिंह, कोलकाता से श्रेया झवर, नागपुर से दीपेश खंडेलवाल, लखीमपुर से विशाल सेठ समेत अन्य सदस्य उपस्थित थे।

झामुमो ने ओडिशा विधानसभा चुनाव के लिए घोषित किए पांच उम्मीदवारों के नाम

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने ओडिशा विधानसभा चुनाव के लिए पांच उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की है। इनमें सरसकना विधानसभा क्षेत्र से अंजनी सोरेन, रायरंगपुर विधानसभा क्षेत्र से सुनाराम टूडू, बंगरीपोशी विधानसभा क्षेत्र से विष्णु सिंह, मोरदा विधानसभा क्षेत्र से कृष्णा चंद्र दास और उदला विधानसभा क्षेत्र से चक्रधर सिंह शामिल हैं। झामुमो के अध्यक्ष शिबू सोरेन के निर्देश पर शुक्रवार को उम्मीदवारों की घोषणा की गयी है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व झामुमो ने 30 अप्रैल की रात लोकसभा चुनाव को लेकर ओडिशा राज्य के मयुरभंज लोकसभा क्षेत्र से अंजनी सोरेन को उम्मीदवार बनाया था। इसके वाबजूद उन्हें विधानसभा सीट से भी टिकट दिया गया है। अंजनी सोरेन झामुमो के अध्यक्ष शिबू सोरेन की बेटी हैं।

कल्पना सोरेन ने गांडेय विधानसभा क्षेत्र में चलाया जनसंपर्क अभियान

बिभा संवाददाता

गिरिडीह। गांडेय विधानसभा क्षेत्र उपचुनाव में झामुमो प्रत्याशी कल्पना सोरेन ने शुक्रवार को जनसंपर्क अभियान चलाया। मौके पर कल्पना सोरेन ने कहा कि 31 जनवरी को हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के बाद स्थिति काफी बदल गयी। पार्टी के कार्यकर्ता और नेता तनाव में थे कि आगे क्या होगा? कार्यकताओं ने मुझसे आगे आने का आग्रह किया। नेता के प्रति उनका प्यार देखकर मैंने सोचा कि जब तक हेमंत वापस नहीं आ जाते तब तक इस कमी को पूरा करना मेरी नैतिक जिम्मेदारी है और मैं राजनीति में आयी।

कल्पना ने कहा कि मैं हेमंत सोरेन से जेल में सप्ताह में एक बार मिलती हूं लेकिन वह एक मुलाकात मनोबल बढ़ाने और ताकत देने के लिए पर्याप्त है। यह चुनाव एक लड़ाई है। एक प्रतियोगिता है, जिसमें हमें झारखंड को विकास की राह पर आगे ले जाना है। सरकार चलाने के भाजपा के आरोप पर उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि भाजपा ने झूठ फैलाने का ठेका ले लिया है। ये जुमलेबाज सरकार सिर्फ झूठ बोलना जानती है। जब वे 2014 में चुनाव जीते तो उन्होंने इतने बड़े-बड़े वादे किये लेकिन वे सब भूल गये और झारखंड के बारे में सोचने की जहमत नहीं उठायी।

कल्पना सोरेन ने कहा कि मैं कहूंगी कि जिस तरह से सभी संवैधानिक संस्थाएं आज चल रही हैं वे केवल उन राज्यों में ही क्यों काम करती हैं, जो भाजपा शासित नहीं है? यदि वे भाजपा शासित राज्यों में कोई कार्रवाई करते हैं तो उसे जल्द ही रोक दिया जाता है। उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन के मामले में कोई सबूत नहीं है। कोई तथ्य नहीं है। यह पूरी तरह से साजिश का हिस्सा है।

इंडिया गठबंधन प्रत्याशी और तमाड़ विधायक ने चलाया डोर टू डोर जनसंपर्क अभियान

भाजपा के नेता आदिवासियों के जमीन को छीनने का प्रयास लगातार कर रहे है : विकास कुमार मुंडा

बिभा संवाददाता

बुंडू। खूंटी संसदीय सीट के इंडिया गठबंधन प्रत्याशी कालीचरण मुंडा और तमाड़ विधायक विकास कुमार मुंडा ने संयुक्त रूप से गुरुवार को बुंडू प्रखंड क्षेत्र में जनसंपर्क अभियान चलाया। प्रत्याशी कालीचरण मुंडा और विधायक विकास कुमार मुंडा ने नावाडीह, सारजमईकिर, जमड़ेया, उलिदा, सिंगारडीह, कदरूडीह, हेसादा, मैसूडीह, कांजीबारू, गीतीलडीह, हुमटा, बारूहातू, जाड़ेया, मौरंगाडीह, चीतोंडीह, तिलाईमाचा, रेलाडीह, खुदीमधुकाम आदि दर्जनों गांवो में डोर टू डोर जाकर जनसंपर्क करते हुये महागठबंधन के पक्ष में वोट करने की अपील किये। ग्रामीणों ने प्रत्याशी और तमाड़ विधायक का गांवो में भव्य स्वागत किया।

इंडिया गठबंधन प्रत्याशी कालीचरण मुंडा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी केवल काम की राजनीति करती है। भाजपा धर्म, जाति, मंदिर-मस्जिद, भ्रष्टाचार की राजनीति करती है। लेकिन काम की राजनीति नहीं की। कांग्रेस की जीत होते ही तेज रफ़्तार से धरातल पर दिखेगा विकास कार्य, यह मेरी गारंटी है। पिछले 10 वर्षों में खूंटी संसदीय क्षेत्र का विकास पूरी तरह ठप हो गया है। विकास के नाम पर लोगो के साथ सिर्फ धोका हुआ है। ग्रामीणों को संबोधित करते हुये विधायक विकास कुमार मुंडा ने कहा कि तमाड़ विधानसभा क्षेत्र में भाजपा ने जनता को छलने का काम किया है। भाजपा के नेता आदिवासियों के जमीन को छीनने का प्रयास लगातार कर रहे है। आदिवासी अब सबकुछ समझ चुके है। ग्रामीण हाथ छाप में बटन दबाकर भाजपा को कड़ा जवाब देंगे।भाजपा की जनविरोधी नीतियो के कारण आज हर वर्ग परेशान है। महंगाई, बेरोजगारी, अग्निवीर योजना सरकार की विफलता है। उन्होने भाजपा के पूर्व सांसद का पांच साल के कार्यकाल निराशाजनक बताकर कहा की अब जनता को समझ जाना चाहिए की कौन व्यक्ति उनके साथ हर कदम पर खड़ा है। उन्होने जनता से इंडिया गठबंधन के पक्ष में वोट कर जन समर्थन मांगा।

नदी घाटों से हजार सीएफटी बालू का रोज हो रहा है अवैध खनन

बिभा संवाददाता

चैनपुर। प्रत्येक नदी घाटों पर फैला बालू का भंडार... खनिज संपदा से समृद्ध चैनपुर की धरती । लेकिन, दशकों से इस खजाने की लूट मची है। नदी घाटों से भी हर दिन करीब हजार सीएफटी बालू का अवैध उठाव हो रहा है।बालू बेचने के लिए प्रखंड में किसी बालू घाट की नीलामी नहीं हुई, लेकिन गीले बालू से भरे बीसियों ट्रैक्टर रोज शहर से गांव तक सड़क पर दौड़ते मिलेंगे। शहर से लेकर गांव तक खुलेआम बालू बिक्री भी की जाती है। इन सबको रोकने लिए जिले में खनन टास्क फोर्स गठित है। इसमें प्रशासन, पुलिस और खनन विभागों के आला अफसर शामिल हैं। पर वे खनिज संपदा की इस लूट से आंखें फेरे रहते हैं। तमाम पार्टियों के नेता एक-दूसरे पर दोष मढ़ते हैं, पर इसे कभी चुनावी मुद्दा नहीं बनाते। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है कि क्या इन काले धंधों में पार्टियों के सफेदपोश भी तो शामिल नहीं। लोकसभा चुनावों के दौरान वोट मांगने आनेवाले नेताओं को भी इस सवाल से दो-चार होना पड़ सकता है

जिला खनन टास्क फोर्स की बैठकों में अवैध खनन और बालू परिवहन पर चिंता, फिर भी नहीं रुक रहा धंधा अवैध खनन व परिवहन पर लगाम लगाने के लिए जिले में खनन टास्क फोर्स गठित है। इसकी हर माह डीसी के नेतृत्व में बैठक में अवैध खनन रोकने पर चर्चा होती है, विशेष अभियान चलाने का निर्देश दिया जाता रहा है। दिखावे के लिए समय-समय पर बालू जब्त किया जाता है, लेकिन बड़े पैमाने पर न तो अवैध खनन रुका और न ही बालू का। आम जन के बीच यह चर्चा है क्या राजनीति पार्टियां बालू और कोयले के इस काले कारोबार को इस बार चुनावी मुद्दा बनाएगी...?

भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में दर्जनो गांवो में दौरा

बिभा संवाददाता

तमाड़। प्रखंड के विभिन्न गांवों का दौरा शुक्रवार को भाजपा रांची जिला उपाध्यक्ष लक्ष्मण सिंह मुंडा के नेतृत्व में दौरा किया गया। इनमे जोजोडीह, दिसीपीड़ी, जाराडीह , कासमबुरुडीह एवं मुरपा के साथ ही कई गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाकर खुंटी लोकसभा भाजपा के उम्मीदवार अर्जुन मुंडा के पक्ष में मतदान करने हेतु लोगों से अपील किया गया। जनसंपर्क में मोदी कार्य की रिपोर्ट कार्ड दिखाते हुए लोगों को बताया गया कि किस प्रकार केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार गरीब, किसान, युवा,नारी शक्ति के मजबूती हेतु निरंतर कार्य को गति देने रहे हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों के आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा के कारण भारत का मान नरेन्द्र मोदी सरकार ने बढ़ाया है। जनसंपर्क अभियान में जिला उपाध्यक्ष लक्ष्मण सिंह मुंडा के अलावे भाजपा के प्रकाश सिंह मुंडा, मदन सिंह मुंडा, हरि सिंह मुंडा, रामेश्वर अहीर आदि शामिल थे।

वामदलों ने श्रमिक नेताओं को हिरासत में लिए जाने की निंदा की

रांची। भाकपा और माकपा ने रांची पुलिस के जरिये सीटू के कार्यकारी अध्यक्ष और हटिया मजदूर युनियन के नेता भवन सिंह और एचईसी बचाओ मजदूर संघर्ष समिति के दिलीप सिंह को हिरासत में लेकर धुर्वा थाने में बैठाए रखने की कड़ी निंदा की है। साथ ही दोनों श्रमिक नेताओं को अविलंब रिहा करने की मांग की है। माकपा के राज्य सचिव प्रकाश विप्लव और भाकपा के राज्य कार्यकारणी के सदस्य अजय सिंह ने कहा कि पुलिस का कहना है कि यह कार्रवाई एहतियात के तौर पर पर की गई है लेकिन एचईसी के मजदूरों के जरिये प्रधानमंत्री के रोड शो के दौरान किसी प्रकार के विरोध कार्रवाई का कोई आह्वान भी नहीं किया गया था। नेताओं ने कहा कि एचईसी के अनुशासित मजदूर इस बात से अवगत हैं कि आम निर्वाचन की प्रक्रिया चल रही है और पूरे देश में आदर्श आचार संहिता लागू है।

जनता मजदूर संघ बनी सीसीएल में एचएमएस की सबसे बड़ी यूनियन

बिभा संवाददाता

खलारीः एनके एरिया में चेकअप प्रणाली से कटे सदस्यता आंकड़े के हिसाब से एच एम एस से सम्बद्धय जनता मजदूर संघ सबसे बड़ी यूनियन बन कर उभरी है।संघ के एरिया अध्यक्ष गोलटेंन प्रसाद यादव ने कहा कि सीसीएल के चेकअप प्रणाली के तहत शामिल यूनियनों के सदस्यता कटौती के आंकड़े सामने आने पर एच एम एस से जुड़े सीसीएल की तीन यूनियन जनता मजदूर संघ 3020, कोलफील्ड मजदूर यूनियन 1698,आर के एम यू 1573 तक सदस्य बने है।वही यूनियन के आंकड़े आने के बाद जनता मजदूर संघ प्रथम स्थान के शीर्ष पर रहा।सीसीएल में संचालित सभी यूनियनों में संघ चौथे स्थान पर इस वर्ष रहा है।बताया कि एनके एरिया में जनता मजदूर संघ सभी यूनियनों में प्रथम रहा है वर्ष 2023 के सदस्यता आंकड़े में सीसीएल में यूनियन के सफलता के लिये विशेष तौर पर संघ के सीसीएल अध्यक्ष सह जे सी एस सी सदस्य कमलेश सिंह का कुशल नेतृत्व व क्षेत्रीय पदाधिकारी के सहयोग के लिये अभिनंदन किया है।श्री यादव ने सभी कामगारों का आभार व्यक्त किया जिनके विशवास से यूनियन सीसीएल में प्रगति कर रहा।प्रथम होने पर बधाई देनेवालों में क्षेत्रीय सचिव डी पी सिंह अजय चौहान,टुपा महतो,चंद्रभूषण सिंह, बिरेन पासवान,बुटन चौहान,तपेश्वर कु यादव,अमिताभ चौहान,संजय कुमार, कंचन,बिरजू लोहार,रविन्द्र उराँव, मंतोष सिंह,आनन्द सिंह,संदीप सिंह उर्फ छोटू आदि शामिल है।

रांची विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में एसएसआर 2024 रिपोर्ट अपलोड किया, कहा

क्वालिटी एजुकेशन, शोध, वर्कशौप, सेमिनार, पेटेंट और युवा गतिविधियों पर हमारा फोकस

बिभा संवाददाता

रांचीः 03 मई 2024 को रांची विश्वविद्यालय द्वारा सेल्फ स्टडी रिपोर्ट (एस एस आर)माननीय कुलपति रांची विश्वविद्यालय के निर्देशन में अपलोड कर दिया गया। इस अवसर पर रांची विश्वविद्यालय के सभी प्रमुख वरीय पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। नैक मूल्यांकन के लिये स्व-मूल्यांकन रिपोर्ट (एसएसआर) को तैयार करना और उसे अपलोड करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है जिसे रांची विश्वविद्यालय ने सफलतापूर्वक समय पर संपन्न कर लिया है। इसके पूर्व एसएसआर रिपोर्ट को तैयार कर बुधवार 1 मई 2024 को अकादमिक काउंसिल में रखा गया था जिसे सर्वसम्मति से सभी सदस्यों द्वारा पहले ही स्वीकृति दे दी गयी थी। 3 मई 2024 को एसएसआर रिपोर्ट को पहले सिंडिकेट में स्वीकृति के लिये रखा गया ।सिंडिकेट से स्वीकृति के बाद रिपोर्ट को माननीय कुलपति की अध्यक्षता में अपलोड कर दिया गया। ज्ञातव्य है कि एसएसआर रिपोर्ट अपलोड करने के लिये नैक द्वारा 45 दिनों का समय दिया गया था। रांची विश्वविद्यालय द्वारा समय पर यह महत्वपूर्ण रिपोर्ट संपूर्णता से तैयार कर अपलोड कर दिया गया है।

रांची विश्वविद्यालय में आइक्यूएसी (इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस)टीम के सारे सदस्य कई दिनों से अथक परिश्रम कर इस रिपोर्ट को तैयार कर रहे थे। एसएस आर रिपोर्ट पांच शैक्षणिक वर्षों का मूल्यांकन कर बनाया जाता है । आइक्यूएसी की टीम ने मिशन मोड में वर्ष 18-19, से लेकर वर्ष 22-23 तक के पांच शैक्षणिक वर्षों का यह एसएसआर रिपोर्ट तैयार किया।

नैक मूल्यांकन के लिये पहले विश्वविद्यालयों को क्ब्द्धअ नैक के समक्ष प्रस्तुत करना होता है। क्ब्द्धअ में विश्वविद्यालय की संपूर्ण जानकारियां देनी होती हैं। इसे जमा करने के बाद विश्वविद्यालय को इसका अनुमोदन प्राप्त होता है।अनुमोदन के बाद ही 45 दिनों के अंदर एसएसआर रिपोर्ट अपलोड कर सकते हैं। रांची विश्वविद्यालय ने 8 फरवरी 2024 को क्ब्द्धअ जमा किया था और 21 मार्च को नैक ने इसे अप्रूव(अनुमोदित) कर दिया गया था और 3 मई 2024 को स्वमूल्यांकन(एसएसआर) रिपोर्ट को नैक के लिये सफ्लतापूर्व अपलोड कर दिया गया। है।

एसएसआर रिपोर्ट नैक के सात मानदंडों के अनुसार बनाना आवश्यक होता है। यह सातो मानदंड पाठ्यचर्या, शिक्षण सीखना मूल्यांकन, शोध अनुसंधान, बुनियादी ढाँचा, सीखने के संसाधन, छात्र की प्रगति, प्रशासन प्रबंधन और संस्थागत मूल्य विषयों पर आधारित होते हैं।

इस रिपोर्ट में कुलपति प्रो. डॉ. अजीत कुमार सिन्हा के निर्देशन में क्वालिटी एजुकेशन, शोध, स्टार्टअप, छात्राओं के लिये सुविधा जैसे विषयों पर जोर दिया गया है। साथ ही सेमिनार, शिक्षकों के विकास, युवा गतिविधयों को प्रोत्साहन, पेटेंट, ऑनलाइन अध्यापन, वर्कशॉप जैसे विषयों को विशेष कर शामिल किया गया है। माननीय कुलपति ने आइक्यूएसी टीम द्वारा तैयार किये गये एसएसआर रिपोर्ट की सराहना की है। अब रांची विश्वविद्यालय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद के लिये तैयार है।

एसएसआर रिपोर्ट अपलोड के अवसर पर माननीय कुलपति रांची विश्वविद्यालय प्रो. डा. अजीत कुमार सिन्हा, कुलसचिव डा.विनोद नारायण, डीएसडब्ल्यू /.आईक्यूएसी डॉयरेक्टर एस. के. साहु, प्रोक्टर डा. मुकुन्द चंद्र मेहता, डा.जीएस झा, प्रो पी के चतुवेर्दी डीन छंद्द, डॉ मनोज कुमार, प्राचार्य माड़वारी कॉलेज, डॉ बी के सिन्हा देकनीकल ऐक्सपर्ट, आईक्यूरसी सदस्य डॉ शिप्रा कुमारी, डॉ स्मृति सिंह, डा.सोनी तिवारी, डा. नीरज, डा. राजकुमार सिंह, डॉ विनोद महतो, डा.बी.आर.झा, डा.ब्रजेश कुमार, डा.बी.एन.सिन्हा, सुमन, फरहान, दीपक व अन्य उपस्थित थे।

अम्बेडकर पार्क में इंडिया गठबंधन की बैठक, यशस्विनी सहाय के नामांकन में होंगे कार्यकर्ता शामिल

बिभा संवाददाता

खलारी। डकरा अम्बेडकर पार्क में इंडिया गठबंधन की बैठक शुक्रवार को हुई। बैठक की अध्यक्षता रैयत विस्थापित मोर्चा अध्यक्ष बिगन सिंह भोगता ने किया।सचांलन इस्लाम अंसारी ने किया।बैठक के दौरान इंडिया गठबंधन में षामिल विभिन्न राजनीतिक दलों के लोगों ने रांची लोकसभा सीट से इंडिया गठंबधन की उम्मीदवार यशस्विनी सहाय को भारी से भारी मतों के साथ जीत दिलाने का संकल्प लिया।वहीं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने चुनाव की रणनीति को लेकर अपने-अपने विचार व्यक्त किया। साथ ही बैठक में निर्णय लिया गया कि इंडिया गठबंधन से कांग्रेस पार्टी की उम्मदीवार यशस्विनी सहाय के 6 मई को नामाकंन में खलारी प्रखण्ड क्षेत्र से इंडिया गठबंधन के अधिक से अधिक संख्या में लोग षामिल होंगे।बैठक में मुख्य रूप से ललन प्रसाद सिंह,राजन सिंह राजा,जालिम सिंह,अब्दुल्ला अंसारी,इंदिरा देवी,राजेश सिंह मिंटु, अनिल पासवान,नरेश गंझू,रंथु उरांव, नन्दू मेहता,जगरनाथ महतो,बीएन पाण्डेय,तनवीर आलम,महेन्द्र चौहान, राजकुमार उरांव,सुभाश उरांव, इस्माइल अंसारी,मिथलेश पासवान, रंजीत कुमार,नीलू देवी, सुधा देवी, रमेश चौहान, सुनील सिंह,सोनू पाण्डेय,रंजन सिंह बिट्ठु,विक्की सिंह, सलामत अंसारी,मोनू रजक, बाबू खान,तजमूल अंसारी,रामा उरांव, नीरज उरांव,किसुन मंडा, सुभाश प्रजापति,सुदेश्वर ठाकुर, भोला यादव, विजय मुंडा, राजेश गंझू, रिजवान अंसारी,अख्तर खान, रौशन लाल, लालचन्द विश्वकर्मा, रमेश तुरी, कुमूद रंजन,अरूण यादव,बिरेन्द्र यादव सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

स्नातक सेमेस्टर फोर के परीक्षाफल से असंतुष्ट विद्यार्थी यशस्विनी से मिले

रांची। रांची विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले विभिन्न कॉलेजों के छात्र-छात्राएं शुक्रवार को इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय और पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय से उनके आवास पर मिले और अपनी समस्याएं उनके सामने रखीं। उन्होंने बताया कि सेमेस्टर फोर की परीक्षा में विश्वविद्यालय प्रशासन की लापरवाही के कारण 75% से अधिक छात्र छात्राएं हर कॉलेज में फेल कर दिए गए हैं। जबकि उन्होंने पेपर अच्छा दिया है। उन्होंने मांग किया कि रिजल्ट का रिवाइज किया जाए। यशस्विनी सहाय ने उनकी बातें ध्यान से सुनीं। वहीं मौके पर उपस्थित सुबोध कांत सहाय ने रांची विश्वविद्यालय के कुलपति से फोन बातें की और छात्र-छात्राओं की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। कुलपति ने श्री सहाय को आश्वस्त किया कि एक सप्ताह के अंदर इन छात्रों की समस्याओं का समाधान हो जाएगा। सुश्री सहाय से मिलने वालों में संत पौल कॉलेज, डोरंडा कॉलेज, निर्मला कॉलेज, गोस्सनर कॉलेज, योगदान कालेज और राम लखन सिंह यादव कॉलेज के छात्र छात्राएं शामिल थे। इनमें पूनम कुमारी, नम्रता बाजोरिया, निकक्की कच्छप, प्रमिला कुमारी राज तिर्की, योगेश कुमार, रितेश कुमार, विकास कुमार, हेमा कुमारी मुख्य रूप से उपस्थित थीं।

द्वितीय उपविजेता बन कर रांची लौटने पर झारखंड राज्य चौकबाल टीम का भव्य स्वागत

रांची : 26 से 28 अप्रैल 2024 तक जालंधर पंजाब के पुलिस डीएवी पब्लिक स्कूल पाप कैम्पस में आयोजित 13 वी सब जूनियर बालक बालिका एवं 14 वी जूनियर बालक बालिका राष्ट्रीय चौकबॉल प्रतियोगिता हो रही थी जिसमे झारखंड के जूनियर वर्ग में बालक बालिका टीम भगा ले रही थी साथ ही पूरे भारत से 20 राज्यो की बालक बालिका टीम प्रतिभाग कर रहे थे जिसमे झारखंड के बालिका टीम ने द्वितीय उपविजेता बनने गौरव हासिल की ' द्वितीय उपविजेता बन कर टीम रांची के अपने चौकबॉल कोर्ट जयपाल सिंह मुंडा खेल परिसर कचहरी रोड रांची पहुंची तो सभी खिलाड़ियों एवं पधाधिकारी को फूल माला पहनाकर एवं मिठाई खिला कर भव्य अविवादन एवं स्वागत किया गया स्वागत करने वालो में पूर्व डी.एस.पी. श्री अरुण कुमार, आशा संस्था के डायरेक्टर श्री अजय जायसवाल, समाज सेवी श्री शशि वर्मा, ओम एक्वा कल्चर के सी. एम.डी. श्री प्रसांत कुमार प्रधान, संघ के श्री दीपक वर्मा एवं अंश वर्मा ने की यह जानकारी झारखंड राज्य चॉकबॉल के महासचिव ब्रजेश गुप्ता ने दी।

रांची संसदीय क्षेत्र से अब तक 10 उम्मीदवारों ने किया नामांकन

रांची। रांची संसदीय क्षेत्र के लिए अधिसूचना जारी होने के पांचवें दिन शुक्रवार को अब तक कुल 10 उम्मीदवारों ने अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया है। शुक्रवार को चार उम्मीदवारों ने नामांकन किया। समाहरणालय ब्लॉक-ए स्थित निवार्ची पदाधिकारी के कार्यालय में अभ्यर्थियों के जरिये नामांकन दाखिल किया गया। नामांकन करनेवाले उम्मीदवारों में आदिवासी किसान मजदूर पार्टी से अंजनी पांडे, गांधीर, मेरा अधिकार राष्ट्रीय दल से धनंजय भगत,निर्दलीय से मनोरंजन भट्टाचार्य और निर्दलीय से मनोज कुमार शामिल है।

मतदान जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए द वॉल ऑफ डेमोक्रेसी शिविर का आयोजन

रांची : विकास भवन रांची में मतदाता जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए द वॉल ऑफ डेमोक्रेसी शिविर लगाया गया है, जो 3 दिनों तक चलेगा। सेंट जेवियर कॉलेज, विमेंस कॉलेज और गोस्सनर कॉलेज के छात्र/छात्राओं ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसमें अन्य कॉलेजों के भी शामिल होने की उम्मीद है। छात्र-छात्राओं ने पूरे उत्साह के साथ दीवारों पर सुंदर-सुंदर कलाकृतियां बनाईं। इस आयोजन में कुल-18 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इनके द्वारा कुल-07 पेंटिंग की गई। स्वीप नोडल पदाधिकारी - सह- उप विकास आयुक्त रांची, श्री दिनेश कुमार यादव द्वारा बताया गया कि इस तरह का आयोजन चुनाव में नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। इसमें अन्य कॉलेजों को निमंत्रण देकर आमंत्रित किया गया है। जीवंत चित्रों और सम्मोहक संदेशों के माध्यम से, यह कार्यक्रम व्यक्तियों को अपने मतदान अधिकारों के बारे में जाग्रत करेगा एवं लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करेगा।

हाइकोर्ट ने 23 जनवरी को सभी पक्षों को सुनने के बाद मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था

रांची। झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य के महाधिवक्ता एवं अपर महाधिवक्ता पर आपराधिक अवमानना मामला चलाने से संबंधित कोर्ट के स्वतः संज्ञान पर शुक्रवार को फैसला सुनाया। हाई कोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने महाधिवक्ता राजीव रंजन और अपर महाधिवक्ता सचिन कुमार को मामले में राहत देते हुए उनके खिलाफ अवमानना याचिका को सुनवाई योग्य नहीं माना। हाइकोर्ट ने 23 जनवरी को सभी पक्षों को सुनने के बाद मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था। हाईकोर्ट के जस्टिस एसके द्विवेदी की अदालत ने एक सितंबर, 2021 को एक मामले में सुनवाई के दौरान स्वतः संज्ञान लेते हुए इन दोनों पर अवमानना का मामला चलाने का निर्देश दिया था। साथ ही अदालत ने हाईकोर्ट रूल्स के अनुसार अवमानना का मामला चलाने के लिए मामले को वर्ष 2021 में खंडपीठ में भेज दिया था। साहिबगंज की महिला थाना प्रभारी रूपा तिर्की की मौत मामले में याचिकाकर्ता ने अदालत में महाधिवक्ता और अपर महाधिवक्ता के खिलाफ अवमानना चलाने के लिए हस्तक्षेप याचिका (आईए) दाखिल की थी।

केवल डेटा पर नहीं, मौके पर जाकर बीएलओ के द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा करें पदाधिकारी : के. रवि कुमार

बिभा संवाददाता

रांची। हर मतदाता तक पहुंचते हुए वोटर गाईड एवं वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप का वितरण सुनिश्चित कराएं। विगत के मतदान में किन कारणों से मतदान कम हुए थे, उसका निराकरण करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने का कार्य करें। पदाधिकारी केवल डेटा पर नहीं, मौके पर जाकर बीएलओ के कार्यों की समीक्षा करें। यह बातें मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कही। वह शुक्रवार को निर्वाचन सदन से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पांचवें और छठे चरण के मतदान से संबंधित जिले खूँटी, सरायकेला-खरसावां, राँची, पश्चिमी सिंहभूम, गढ़वा, गुमला, पलामू, सिमडेगा और लोहरदगा में चल रहे स्वीप कार्यक्रमों की समीक्षा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि टारगेटेड स्वीप एक्टिविटी से मतदाताओं को जागरूक करने से वोटिंग प्रतिशत बढ़ेगा। पदाधिकारी मतदाता सहभागिता के लिए कोई कसर नहीं छोड़ें। पदाधिकारी कम मतदान वाले मतदान केन्द्रों का भौतिक निरीक्षण करें और संबंधित क्षेत्र के मतदाताओं को जागरूक करते हुए मतदान के लिए प्रेरित करना सुनिश्चित कराएं। साथ ही बूथ लेवल अवेयरनेस ग्रुप के मेंबर्स को मतदाताओं को प्रेरित करते हुए मतदान केंद्र तक लाने की जिम्मेवारी सौंपे। वहीं इंटर पर्सनल कम्युनिकेशन से मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करें। ऐसी पहल से मतदान प्रतिशत बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि मतदान केन्द्रों को इस तरह तैयार करें कि लगे वह मतदाताओं को मतदान के लिए पुकार रहा हो।

उन्होंने कहा कि कम मतदान वाले क्षेत्रों में प्रत्येक घरों तक पहुँच बनाते हुए लोगों को मतदान के लिए प्रेरित करें। कोई भी मतदाता मतदान करने से नहीं छूटे। इसके लिए विशेष कार्ययोजना तैयार कर मूर्त रूप दें । राँची के बुंडू में कम मतदान वाले मतदान केंद्रों पर विशेष अभियान चलाकर मतदाताओं को जागरूक करने का निर्देश दिया। वहीं खूँटी जिले के कम मतदान वाले मतदान केंद्रों का भौतिक निरीक्षण करते हुए वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप का वितरण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। सरायकेला-खरसावां के जिला स्वीप पदाधिकारी को मतदान केंद्र संख्या 147 एवं 148 का भौतिक निरीक्षण कर संबंधित कारणों का निराकरण करने तथा लोहरदगा के प्रवासी मजदूरों को मतदान में भाग लेने के लिए प्रेरित करने पर बल दिया।

अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ. नेहा अरोड़ा ने कहा कि पदाधिकारी मतदाताओं से पारस्परिक संपर्क कर कम मतदान वाले मतदान केंद्रों के लिए इनोवेटिव आईडिया के साथ सभी मतदाताओं तक पहुँचे। बूथ लेवल अवेयरनेस ग्रुप के मेंबर्स को मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करते हुए मतदान केंद्र तक लाने की जिमेवारी सौंपे।

बैठक में संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुबोध कुमार, ओएसडी गीता चौबे, सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देवदास दत्ता, उप निदेशक जनसम्पर्क आनंद सहित संबंधित जिलों के स्वीप से संबंधित पदाधिकारी वीडियो कांफ्रेंसिंग में उपस्थित थे।

पार्टी एक को उम्मीदवार बनाती है लेकिन चुनाव हर कार्यकर्ता लड़ता है : गुलाम अहमद मीर

बिभा संवाददाता

रांची। कांग्रेस के गुमला,सिमडेगा और खूंटी जिले के कार्यकताओं की चुनावी समीक्षा बैठक जिला मुख्यालय में शुक्रवार को हुई। मौके पर कांग्रेस के झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा कि पार्टी किसी एक को उम्मीदवार बनाती है लेकिन चुनाव संगठन का हर कार्यकर्ता अपने-अपने मोहल्ले,वार्ड,प्रखंड में लड़ता है, ताकि पार्टी की जीत हो सके। दस वर्षों के कुशासन से निकलने का यह सुनहरा अवसर है और हमें इसे किसी भी हाल में जाया नहीं होने देना है।

उन्होंने कहा कि आप सभी पूरे वर्ष संगठन में काम करते हैं और पिछले पांच वर्षों से केंद्र की भाजपा सरकार के कार्यों से त्रस्त जनता के बीच रहकर संघर्ष कर रहे हैं। अब समय है कि उन संघर्षों का परिणाम बूथ से जीत के रूप में निकले। पांच वर्षों तक संगठन का निर्माण प्रखंड और बूथ स्तर पर किया गया है और आज जरूरत है कि संगठन के जरिये बूथ स्तर कार्यकताओं के बीच आपसी समन्वय को बेहतर तरीके से बनाया जाए ताकि चुनाव के दौरान प्रत्याशी और बूथ एजेंट के बीच सीधा संवाद अभी से लेकर मतदान के दिन तक लगातार होता रहे।

इस दौरान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि इस चुनाव में हमें राहुल गांधी के विश्वास पर खरा उतरना है। उन्होंने जनता की समस्याओं के तह तक पहुंचने के लिए पूरे भारत का पैदल भ्रमण किया है और समस्याओं को खत्म करने के लिए आवश्यक कार्ययोजना को कांग्रेस के घोषणा पत्र में शामिल किया गया है।

बैठक को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि मोदी सरकार के मंत्री पूरे देश में घूम-घूम कर झूठ बोल रहे हैं वो नहीं चाहते हैं कि इस देश में आदिवासियों दलितों का उत्थान हो।

राज्य में पांचवें चरण के नामांकन के अंतिम दिन 26 प्रत्याशियों ने भरा पर्चा

बिभा संवाददाता

रांची। लोकसभा चुनाव के लिए शुक्रवार को राज्य में कुल 41 नॉमिनेशन हुए जबकि गांडेय उपचुनाव के लिए छह प्रत्याशियों ने नामांकन किया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने शुक्रवार को प्रेस को संबोधित हुए बताया कि झारखंड में पांचवें चरण के नॉमिनेशन के अंतिम दिन 26 प्रत्याशियों ने नॉमिनेशन किया।

रवि कुमार ने बताया कि अब तक पांचवें चरण में कुल 172 नामांकन फॉर्म जमा हुए, जिसमें 68 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें चतरा से 31, हजारीबाग से 19 और कोडरमा से 18 प्रत्याशी मैदान में उतरे हैं। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि पांचवें चरण के स्क्रूटनी की तिथि चार मई है और नाम वापसी की अंतिम तारीख छह मई है। छह मई के बाद ही पांचवें चरण में कितने प्रत्याशी हैं, वो साफ हो पाएगा।

छठे चरण के लिए शुक्रवार को झारखंड से 15 प्रत्याशियों ने नामांकन किए। गिरिडीह से तीन, धनबाद से चार, रांची से चार और जमशेदपुर से चार प्रत्याशियों ने नॉमिनेशन किए। अब तक छठे चरण में गिरिडीह में आठ, धनबाद में 12, रांची में 10 व जमशेदपुर में 11 प्रत्याशियों ने नामांकन किया जबकि गांडेय उपचुनाव के लिए अब तक 13 प्रत्याशियों ने नामांकन किया है। नामांकन के अंतिम दिन छह प्रत्याशियों ने फॉर्म भरा।

चाईबासा की जनता प्रधानमंत्री को नकारने का काम किया : राजेश ठाकुर

बिभा संवाददाता

रांची: प्रधानमंत्री के झारखंड दौरे पर झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि चाईबासा की जनता प्रधानमंत्री को नकारने का काम किया। रैली की भीड यह साबित कर दिया कि अब झारखंड प्रधानमंत्री का झूठ नहीं सुनना चाहती है।

उन्होंने कहा कि फिर से 2014 और 2019 वाला झूठ प्रधानमंत्री ने आज चाईबासा में बोला। आदिवासियों के प्रति झूठा प्रेम जताया लेकिन मणिपुर के आदिवासी भाइयों एवं बहनों की चित्तकार पर प्रधानमंत्री क्यूं खामोश रहे यह नहीं बताया। उन्होंने प्रधानमंत्री के आरक्षण पर दिये गये बयानों पर कहा कि प्रधानमंत्री अगर आरक्षण पर इतना गंभीर हैं तो प्रधानमंत्री यह बतायें क्या आप दलित, आदिवासी और ओबीसी के लिए आरक्षण के 50 प्रतिशत सीमा को हटाएंगे, हमने ऐसा करने की गारंटी दे दी है। प्रधानमंत्री ने आदिवासियों भाईयों एवं बहनों को डॉक्टर और इंजीनियर बनने की सलाह तो दे दिये हैं लेकिन उनकी अस्मिता से जुड़ी सरना धर्म कोड की बात प्रधानमंत्री नहीं की है क्योंकि उन्हें झूठ बोलकर नकली प्रेम प्रदर्शित करना था।

उन्होंने प्रधानमंत्री पर तंज कसते हुए कहा कि प्रधानमंत्री भ्रष्टाचारियों एवं बलात्कारियों के साथ मंच साझा करते है और यह कहते है कि इनको जीताने से हम मजबूत होंगे तो यह समझा जा सकता है कि प्रधानमंत्री का अपार समर्थन दुराचारियों और भ्रष्टाचारियों के साथ है और बहुत ही साफगोई से विपक्ष के ऊपर लगाते हैं और तमाम भ्रष्टाचारियों को प्रधानमंत्री स्वंय सम्मानित करते हैं। उन्होंने कहा कि यही है मोदी की गारंटी।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में बेसिक कंप्यूटर साक्षरता पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

बिभा संवाददाता

रांची। विश्वविद्यालय कर्मियों में कौशल विकास के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग द्वारा बेसिक कंप्यूटर साक्षरता एवं जागरूकता विषय पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शनिवार को समापन सत्र में पशु चिकित्सा संकाय के अधिष्ठाता डॉ सुशील प्रसाद ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किया और कहा कि भविष्य में और भी ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। आयोजन सचिव डॉ नंदनी कुमारी ने बताया कि बीएयू के प्रशासन निदेशालय, अनुसंधान निदेशालय, नियंत्रक कार्यालय एवं पशु चिकित्सा महाविद्यालय के कुल 21 कर्मियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

एजीबी विभाग के शिक्षकों डॉ बसंत कुमार, डॉ नन्दनी कुमारी, डॉ थानेश उरांव, डॉ अबसार अहमद, डॉ नरेंद्र प्रताप सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को कंप्यूटर संचालन और उसपर विभिन्न प्रकार के कामकाज करने की तकनीकी जानकारी दी। अंग्रेजी की सहायक प्राध्यापक डॉ सुरभि सिन्हा ने बेसिक फंक्शनल इंग्लिश की जानकारी दी।

इस अवसर पर एसोसिएट डीन डॉ आलोक कुमार पांडेय तथा प्रशाखा पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार सिंह भी उपस्थित थे।

हेमंत सोरेन के ऊपर हुए बेबुनियाद आरोप द्वारा जबरन जेल भेजे जाने का विरोध वोट मे दिखेगा : झामुमो

बिभा संवाददाता

रांची : रांची लोकसभा के लिए कठऊक्रअ गठबंधन समर्थित कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय जी के समर्थन मे रांची महानगर की बैठक झामुमो रांची जिला अध्यक्ष मुस्ताक आलम जी की अध्यक्षता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय जी की उपस्थिति मे संपन्न हुई। बैठक मे कांग्रेस महानगर अध्यक्ष कुमार राजा साथ ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विनय सिन्हा दीपू उपस्थित रहे।

मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय जी ने कहा हमे देश के तानाशाह सरकार को हटाना है। झारखंड मे भी आपने देखा को किस तरह से हेमन्त सोरेन जी को झूठे आरोप लगाकर जेल भेजा गया। हमे अपने वोट से करारा जवाब देना है और देश में इंडिया गठबंधन की सरकार बनाना है।

झामुमो रांची जिलाध्यक्ष मुस्ताक आलम जी ने कहा हम सभी इंडिया गठबंधन के साथियों को एकसाथ केंद्र की तानाशाह सरकार को उखाड़ फेंकना है। जिस तरह हमारे नेता हेमंत सोरेन जी को जेल भेजा गया और एक आदिवासी मुख्यमंत्री को अपमानित किया गया है इसे लेकर पूरे झारखंडियों में विरोध है जो वोट के रुप मे सबके सामने आयेगा।

इस बैठक मे मुख्य रूप से झामुमो रांची जिला से केंद्रीय सदस्य पवन जेडिया, चिंतामणि सांगा, जिला उपाध्यक्ष अश्विनी शर्मा, जनक नायक, रामानंद बेदिया, जिला सचिव डॉ हेमलाल कु मेहता, रामशरण विश्वकर्मा, आफताब आलम, जिला प्रवक्ता अरविंद सिंह देवल, लालजी रमन, अरुण वर्मा, विक्रम सिंह, संयुक्त सचिव आदिल इमाम, पप्पू गद्दी, अल्पसंख्यक मोर्चा जिला अध्यक्ष फरीद खान, उपाध्यक्ष परवेज आलम गुड्डू, परविंदर नामधारी, महादेव मुंडा, जीत गुप्ता, कैथरीना तिर्की, युवा मोर्चा रांची जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह, उपाध्यक्ष आशुतोष वर्मा, सचिव सोनू मुंडा, अशोक मुंडा, कोषाध्यक्ष अजीत नायक, संगठन सचिव विश्वजीत गोप, अजीत लकड़ा, सुजीत कुजूर, क्रीड़ा मोर्चा जिला अध्यक्ष प्रदीप मिर्धा, राकेश सिंह, अजय सोनी, महिला मोर्चा जिला सचिव शांति तिर्की, उपाध्यक्ष सालो देवी , सोहेल खान, मो कयूम अंसारी, महताब अंसारी, निजाम, अंशु लकड़ा, महानगर अध्यक्ष संध्या गुड़िया, उपाध्यक्ष रोमा सरकार, संगठन सचिव राधा हेंब्रम, सुनीता लिंडा, राधा बाउरी, संयुक्त सचिव अनिमा केरकेट्टा, अबुतालिब अंसारी, अजीत लकड़ा, लक्ष्मण राम, संजय ठाकुर, साहिल यादव, भोलू मलिक, राकेश वर्मा, अल्ताफ राजा, भास्कर महतो, मो यूनुस खान, रवि कुमार, तबरेज अहमद, ओमकार कुमार, मंजय राम, विजय रविदास, गोगा साह, दिगंबर मुंडा, प्रमाणिक गोप, ओम शर्मा, मंजीत राज यादव, मासूम मेराज एवं अन्य कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

झारखंड हाई कोर्ट से पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बड़ा झटका, गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका खारिज

बिभा संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट से पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को राहत नहीं मिली है। उनकी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका को हाई कोर्ट ने शुक्रवार को खारिज दी है। इस रिट पिटिशन पर दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद हाई कोर्ट ने 28 फरवरी को फैसला सुरक्षित रख लिया था। एक्टिंग चीफ जस्टिस एस. चंद्रशेखर और जस्टिस नवनीत कुमार की खंडपीठ ने हाइब्रिड मोड में याचिका को खारिज कर दिया।

हेमंत सोरेन की ओर से देश के वरीय अधिवक्ता कपिल सिब्बल और हाई कोर्ट के अधिवक्ता पियूष चित्रेश ने बहस की थी जबकि ईडी की ओर से एएसजीआई एसवी राजू और अमित दास ने बहस की। हेमंत सोरेन की ओर से दलील दी गई थी कि जिस मामले में उनकी गिरफ्तारी हुई है, वह शिड्यूल ऑफेंस नहीं है। उनके खिलाफ मनी लांड्रिंग का भी मामला नहीं बनता है।

बगड़ाई अंचल की जिस जमीन की बात की जा रही है, उसके दस्तावेज में उनके नाम का भी जिक्र नहीं है। हालांकि, ईडी की ओर से दलील दी गई थी कि समन के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पावर और पोजिशन का गलत इस्तेमाल कर साक्ष्य को नष्ट कराने की कोशिश की थी।

झारखंड हाई कोर्ट द्वारा इस मामले में 28 फरवरी को फैसला सुरक्षित रखने के बाद फैसला आने में देरी के खिलाफ हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका दाखिल की है, जिसमें कहा गया है कि फैसला नहीं आने से वह लोकसभा चुनाव प्रचार में भाग नहीं ले पा रहे हैं। हेमंत सोरेन को 31 जनवरी को ईडी ने गिरफ्तार किया था, जिसके खिलाफ उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें हाई कोर्ट जाने को कहा था।

संक्षिप्त खबरें

डीएवी-6 के नन्हे-मुन्ने ने ऑनलाइन आम बनकर मनाया मैंगो डे

बोकारो : डीएवी पब्लिक स्कूल सेक्टर 6 बोकारो में पाठ्य सहगामी क्रिया कलाप के अतंर्गत कक्षा एलकेजी एवं यूकेजी के नन्हे मुन्ने बच्चों ने काफी उत्साहित होकर ऑनलाइन मैंगो डे प्रतियोगिता में भाग लिया । जिसमें श्रद्धानंद, दयानन्द, हंसराज विवेकानन्द के बच्चों ने हरे और पीले मैंगो के रूप में तैयार होकर हिंदी व अंग्रेजी में कविता वाचन किया । इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य बृज मोहन लाल दास ने बच्चों द्वारे ऑनलाइन माध्यम से मैंगो डे सेलिब्रेशन की प्रशंसा की । उन्होंने कहा कि इस तरह के एक्टिविटी में भाग लेने से बच्चों में उच्चारण संबंधी दोष का निवारण होगा, उनके लैंग्वेज स्कील का भी विकास होगा । मौके पर शिक्षिका भावना घले ने बच्चों को विभिन्न प्रकार के आम के बारे में उनके द्वारा बनाए व्यंजन के बारे में आम उत्पादन के लिए खास मौसम के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका अराधना कुमारी ने किया । इस अवसर पर कक्षा एलकेजी से अभिनंदन सिन्हा, अर्नव मिश्रा, रोशन राज, सृष्टि कुमारी, सुष्मिता बेसरा, वंशिका कुमारी, विद्यांशु कुमार, विवेक उरांव, निखिल सिंह, मेवान कुमार, जतिन कुमार व कक्षा यूकेजी से आरव, आरोही, अखिल, आकृति, अनु, अंश कुमार, दक्षिता, दिशांत, हर्ष पलक, परिधि, राजवीर रौनक रिधिमा रिहान रोनित, निरंजन, साहिल कुमार सक्षम, शानवी मिश्रा, शिवांश कुमार, श्रेया , श्रेयस कुमार, सोनम कुमारी, यश, श्रीशैली, युग, वेद ने भाग लिया । इस कार्यक्रम में भावना घले, अराधना कुमारी, सीमा मिश्रा ने पूरा सहयोग किया ।

डॉ राधाकृष्णन बीएड महाविद्यालय में स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन

बोकारो : रोटरी क्लब चास की अध्यक्ष पूजा बैद ने कहा की स्वस्थ रहने के लिए नियमित स्वास्थ्य की जांच बेहद आवश्यक है। महाविद्यालय के सचिव बिनय सिंह ने सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। डॉ एसपी वर्मा और डॉ निशांत कुमार ने उपस्थित छात्र-छात्राओं को नियमित एवं निरंतर स्वास्थ जांच के लिए प्रेरित किया। डॉ वर्मा ने कहा कि छात्रों को युवा अवस्था में खान-पान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। डॉ वर्मा ने जंक फूड खाने से बचने की सलाह छात्रों को दी जिससे वे मोटापा से बच सके। उन्होंने फलों का उपयोग अधिक से अधिक करने की सलाह दी। डॉ वर्मा ने कहा कि मोटापा आज विश्व की सबसे बड़ी बीमारी है। डॉ वर्मा ने कहा कि नियमित स्वास्थ्य जांच से की कई बीमारियों का समय पर पता चल जाता है, और समय पर उनका इलाज संभव है। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ गायत्री कुमारी ने कहां की आधुनिक युग में बाहर खाने का प्रचलन बढ़ गया है, जिसके कारण बीमारियां बढ़ गई है। चास रोटरी की सचिव डिंपल कौर ने कहा कि रोटरी ने अपने सामाजिक दायित्व के तहत स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चला रखा है। स्वास्थ्य शिविर में मुकेश अग्रवाल धनेश बंका, माधुरी सिंह,नरेंद्र सिंह, अर्चना सिंह, प्रेम शंकर, सुबिनय डे, नवकांत कुमार, डॉ चायना डे, एवं महाविद्यालय के शिक्षक उपस्थित थे।

जेवियर आइडल 2024-25 का आयोजन, झूम उठे विद्यार्थी

बोकारो : संत जेवियर्स स्कूल बोकारो में हर वर्ष की तरह जेवियर आइडल 2024-25 का आयोजन इंटरैक्ट क्लब द्वारा किया गाया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडली में वरिष्ठ शिक्षक आशुतोष तिवारी, नोएल जोन्स और राहुल थे। प्रतियोगिता का श्री गणेश इंटरैक्ट क्लब की को ऑर्डिनेटर श्रीमती चंद्रिमा रे ने प्रतिभागियों का हौसला अफजाई करते हुए किया और उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता से निकले कई विद्यार्थी आज टी-सीरीज जैसे बड़े म्यूजिक कम्पनी में काम कर रहे है। विभिन्न वर्गो के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेकर अपने कला के उम्दा प्रस्तुती से समा बिखेर दिया। विद्यार्थियों ने हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषा के संगीत को अपने सुरिली आवाज में प्रस्तुत किया। चांद सा रौशन चेहरा , रफ्ता-रफ्ता, लाल इश्क और दिल में हो तुम जैसे गाने आकर्षण का केंद्र रहे। प्रतियोगिता का परिणाम कुछ इस प्रकार रहा जूनियर श्रेणी से इशिता ने प्रथम, संटू और एलेना ने द्वितीय और तृतीय स्थान हर्ष और मोहना ने प्राप्त किया। सीनियर श्रेणी में गौरी ने प्रथम, अक्सा ने द्वितीय और आयुषी पटनायक और शाकिर ने सयुक्त तौर से तृतीय स्थान प्राप्त किया। दर्शक स्वरूप ग्यारवी और बारहवीं के छात्र-छात्रा ने प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ा कर समर्थन किया। मौके पर प्रधानाचार्य फॉदर अरुण ने सभी को शुभकामनाएं दी और उज्ज्वल भविष्य की कामना की ।

बालू अवैध खनन को लेकर विभाग द्वारा की गई छापेमारी

बोकारो : जिले के गोमिया अंचल अंतर्गत महुआतांड थाना के विभिन्न क्षेत्रों में अवैध खनन के रोकथाम हेतु खनन विभाग ने छापामारी अभियान चलाया गया, जिसमे कानीडीह स्थित दामोदर बालू घाट से एक ट्रैक्टर को अवैध रूप से बालू का उत्खनन करते हुए पकड़ा गया, जिसे जप्त कर पुलिस बल के सहयोग से थाना लाया गया एवम सम्बन्धित के विरुद्ध थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई। उक्त अभियान में खान निरीक्षक, जितेन्द्र कुमार, थाना प्रभारी, रंजीत कुमार एवम पुलिस बल मोजूद थे।

तथ्यों से खिलवाड़ और झूठ, छल-प्रपंच की बजाय आदिवासियों के हित की बात करें प्रधानमंत्री : बंधु

बिभा संवाददाता

रांची : पूर्व मंत्री, झारखण्ड सरकार की समन्वय समिति के सदस्य एवं झारखण्ड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आदिवासी मुद्दों पर बात करने के दौरान तथ्यों से खिलवाड़ करने और झूठ, छल-प्रपंच के आधार पर अपनी बातों को रखने की बजाय आदिवासियों के हित की बात करनी चाहिये. श्री तिर्की ने कहा कि यदि प्रधानमंत्री मोदी को आदिवासियों से इतना ही प्रेम है और उन्हें आदिवासी हित की इतनी ही चिंता है तो वह सरना धर्म कोड, यूसीसी जैसे आदिवासियों के उन अनेक न्यायोचित मुद्दों पर बात क्यों नहीं करते जिसे भारतीय जनता पार्टी और आरएसएस ने एक प्रकार से विवादास्पद बना डाला है.

आज झारखण्ड के दो दिवसीय दौरे पर चाईबासा पहुँचे प्रधानमंत्री द्वारा एक चुनावी सभा के दौरान दिये गये वक्तव्य पर श्री तिर्की ने कहा कि यह बहुत दुर्भाग्य की बात है कि प्रधानमंत्री जैसे उच्च पद पर बैठा हुआ व्यक्ति भी तथ्यों की बजाय केवल और केवल आदिवासियों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहा है. उन्होंने कहा कि बेहतर तो यह होता कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथ्यों के आधार पर बात करते हुए बताते कि उन्होंने पिछले 10 साल में आदिवासी हित में आखिर वैसे कौन-कौन से काम किये हैं जिसके आधार पर आदिवासियों को उन्हें और भाजपा को वोट देना चाहिये.

श्री तिर्की ने कहा कि झारखण्ड विधानसभा के द्वारा सरना धर्म कोड को लागू करने के संबंध में प्रस्ताव पारित कर केन्द्र सरकार को जाने कब का भेजा जा चुका है लेकिन केन्द्र सरकार उसपर कुंडली मारे बैठी है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने आदिवासियों के हित में वनाधिकार कानून जैसे अनेक वैसे कानून बनाये जो जनआकांक्षाओं की पूर्ति करती है पर भाजपा और केन्द्र सरकार उसे कमजोर कर रही है या फिर उसे कमजोर करने की साजिश कर रही है. श्री तिर्की ने कहा कि झारखण्ड में भी जब रघुवर दास के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार थी तो सीएनटी और एसपीटी एक्ट में संशोधन की जैसी कोशिश की गयी उससे भाजपा का चाल, चरित्र और चेहरा पहले ही उजागर हो चुका है.

उन्होंने कहा कि इसके अलावे भी जब-जब अवसर मिला तब-तब केन्द्र सरकार, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी के साथ ही भाजपा के सभी छोटे-बड़े नेताओं ने आदिवासियों का भावनात्मक रूप से दोहन करने और उनका अपमान करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है. चाहे मध्य प्रदेश में एक आदिवासी के सिर पर भाजपा के नेता द्वारा अवांछित आचरण अपनाकर एक आदिवासी के सिर पर पेशाब करने की बात हो या फिर मणिपुर जातीय हिंसा में महिला अपमान की बात हो. यहाँ तक कि देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर बैठी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हाथों न तो नये संसद भवन का उद्घाटन करवाया गया, ना ही श्री राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में उन्हें आमंत्रित किया गया और इससे भी ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो तब हुई जब वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित करने के दौरान जहाँ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं अन्य भाजपा नेता के साथ ही सभी लोग बैठे रहे वही श्रीमती द्रौपदी मुर्मू खड़ी रहीं और यह देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद के साथ ही महिला सम्मान और आदिवासी स्वाभिमान के साथ ही भावनात्मक दृष्टिकोण से सभी के खिलाफ है. श्री तिर्की ने कहा कि केवल और केवल गौरव दिवस मनाकर धरतीआबा भगवान बिरसा मुण्डा की जन्म भूमि पर पहुँचकर वहाँ की मिट्टी को सिर पर लगाने से ही जनजातियों का सम्मान नहीं होता. यदि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आदिवासियों के विकास और उनके हित की इतनी ही चिंता है तो उन्हें भावनात्मक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं कानूनी दृष्टिकोण से भी आदिवासियों को मजबूत बनाना चाहिये और तभी उनके द्वारा यदि कोई भी वक्तव्य दिया जाता है तो उसकी सार्थकता होगी अन्यथा यह नाटक से ज्यादा कुछ भी नहीं है.

बोकारो स्टील प्लांट के ब्राउनफील्ड विस्तारीकरण के लिए प्रमुख हितधारकों और बिडर्स के शिखर सम्मेलन का आयोजन

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के ब्राउनफील्ड विस्तारीकरण के लिए प्रमुख हितधारकों और बिडर्स के शिखर सम्मेलन का आयोजन मानव संसाधन विभाग के मेन ऑडिटोरियम में किया गया. सम्मलेन का शुभारम्भ श्रीमती अनिमा कुशवाहा, मुख्य महा प्रबंधक (परियोजनाएँ) के स्वागत भाषण तथा अधिशासी निदेशक (परियोजनाएँ एवं अतिरिक्त प्रभार सामग्री प्रबंधन) के द्वारा ₹सहयोगात्मक सफलता की ओर₹ विषय के अंतर्गत साझा की गई अंतर्दृष्टि के साथ शिखर सम्मेलन को औपचारिक रूप से शुरू किया गया. श्री अनूप कुमार अधिशासी निदेशक (कोलियरीज), श्री एस मुखोपाध्याय अधिशासी निदेशक (परियोजनाएँ) भिलाई स्टील प्लांट , श्री अलोक वर्मा अधिशासी निदेशक (माइंस) ओ जी ओ एम ,श्री एस के वर्मा अधिशासी निदेशक (सी ई टी), श्री तरुण मिश्रा अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राउरकेला स्टील प्लांट तथा श्री पी के रथ अधिशासी निदेशक (एस आर यू) आज आयोजित होने वाले शिखर सम्मलेन में प्रमुख रूप से उद्घाटन सत्र में शामिल थे.

शिखर सम्मेलन का प्राथमिक उद्देश्य बिडर्स, प्रमुख हितधारकों , सलाहकार और बीएसएल के बीच ब्राउनफील्ड विस्तारीकरण के लागत, निष्पादन समय सीमा, और समय पर परियोजना के लिए इष्टतम कार्यान्वयन रणनीति निर्धारित करना है.

कार्यक्रम में बीएसएल के महा प्रबंधक (ब्राउनफील्ड विस्तार) श्री नरेश कुमार बेहरा तथा मेसर्स एमएन दस्तूर के प्रतिनिधि के द्वारा कच्चे माल से स्टील बनाने और डायरेक्ट रोलिंग जैसे प्रमुख विषयों पर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डी पी आर) का प्रस्तुतीकरण किया गया. श्री पी एच शर्मा मुख्य महा प्रबंधक (परियोजनाएँ) श्री एस पी दास महा प्रबंधक(सी ई टी) तथा श्री एम टी राव, मुख्य महा प्रबंधक(परियोजनाएँ) सेल निगमित कार्यालय ने पैनल चचाओं में अपना अहम् योगदान किया.

बीएसएल के विस्तार के लक्ष्य में 4500 मीटर क्यूब का ब्लास्ट फर्नेस, 165-टन कैपेसिटी का दो बेसिक ऑक्सीजन फर्नेस (बी ओ एफ), सिंगल स्ट्रैंड का स्लैब कॉस्टर तथा डायरेक्ट रोलिंग जैसी प्रमुख इकाइयां स्थापित करना शामिल है. इसके अतिरिक्त कच्चे माल के भंडारण और हैंडलिंग की सुविधाओं में वृद्धि तथा इसकी सहायक प्रणाली का विस्तारीकरण करके कुशल परियोजना निष्पादन की योजना है.

आज के शिखर सम्मेलन ने सभी प्रतिभागियों को स्टील बनाने के लिए रणनीतिक रूप से कच्चे मॉल की उपलब्धता की योजना बनाना, नवोन्मेषी परियोजना प्रबंधन को अपनाना तथा समयबद्ध तरीके से परियोजना को पूरा करने के चर्चा के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया.

कार्यक्रम के समापन सत्र में बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी श्री बीरेंद्र कुमार तिवारी ने कहा कि सेल -बोकारो सहित देश की अन्य इस्पात कंपनियां भी अपनी क्षमता विस्तार की प्रक्रिया में है जो देश की भविष्य की मांग के अनुरूप है. उन्होंने कहा कि इस अहम कार्य की सफलता के लिए सभी सम्बंधित पक्षों के बीच कार्य योजना के विषय में स्पष्टता और सामंजस्य आवश्यक है।

अधिवक्ताओं से मिली धनबाद सांसद प्रत्याशी अनुपमा सिंह, समर्थन देने की अपील

बिभा संवाददाता

बोकारो : प्रत्याशियों ने प्रचार प्रसार अभियान तेज कर दिया है। जीत को लेकर भीषण गर्मी के बीच प्रत्याशी पसीना बहाने में लगे हुए हैं। देश में छठा और झारखंड में तीसरे चरण में धनबाद लोकसभा सीट पर चुनाव होना है। ऐसे में धनबाद से कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह अब बुद्धिजीवियों के बीच जाकर समर्थन मांग रही हैं । बोकारो के अधिवक्ताओं ने अनुपमा सिंह को बुलाकर उनका स्वागत किया। इस दौरान अधिवक्ताओं ने अपनी समस्याओं को कांग्रेस प्रत्याशी के समक्ष रखा। अधिवक्ताओं ने अनुपमा सिंह को स्वच्छ छवि की प्रत्याशी बताते हुए समर्थन का भरोसा दिया है। मीडिया से बात करते हुए अधिवक्ता दिनेश शर्मा ने बताया कि हमलोग अनुपमा सिंह को अधिवक्ताओं के समस्या से अवगत करा दिया है। हमे उम्मीद है की चुनाव जीतने के बाद वो अधिवक्ताओं की समस्या को दूर करेंगी. साथ ही अनुमपा सिंह ने बताया कि उन्हे लोगों का अपार समर्थन मिल रहा है। इशारों ही इशारों में उन्होंने बीजेपी प्रत्याशी ढुल्लू महतो पर साधा निशाना . कहा कि महिला कभी भी अपराध और अपराधियों को साथ नहीं दे सकती है। साथ ही अनुपमा सिंह ने कहा महिला से किसी व्यापारी को कोई भी परेशानी नहीं हो सकती हैं। ऐसे में लोग उन्हे जीत का आशीर्वाद दे रहे हैं।

कांग्रेस सेवा दल ने कांग्रेस प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित करने के लिए की गई बैठक

बोकारो : बोकारो जिला कांग्रेस सेवा दल की बैठक बोकारो जिला कांग्रेस कार्यालय दूँदीबाग बोकारो में संपन्न हुई, बैठक की अध्यक्षता बोकारो जिला कांग्रेस अध्यक्ष उमेश प्रसाद गुप्ता ने किया, संचालन मुख्य संगठक प्रशांत कुमार बाउरी ने किया एवं इस अवसर पर मुख्य अतिथि.. धनबाद लोकसभा प्रभारी पुर्नेन्दु सिंह एवं विशिष्ट अतिथि प्रमंडलीय प्रभारी भरत किशोर राउत उपस्थित हुए । इस बैठक का मुख्य उद्देश्य रहा कांग्रेसी कार्यकताओं से क्षेत्र में जाकर समपर्क स्थापित कर महागठबंधन प्रत्याशी अनुपमा सिंह जी को भारी मतो से विजयी करना है धन्यवाद ज्ञापन अशोक कुमार सिंह ने किया ।

मिथिला महिला समिति द्वारा समर ड्रिंक प्रतियोगिता आयोजित

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो प्रतिष्ठित सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो की इकाई मिथिला महिला समिति द्वारा समर ड्रिंक (ग्रीष्मकालीन पेय) प्रतियोगता का आयोजन किया गया। परिषद द्वारा संचालित सेक्टर 4 ई स्थित मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के विद्यापति सभागार में गुरुवार की शाम आयोजित इस प्रतियोगिता में मिथिला महिला समिति की सदस्याओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। प्रतिभागियों का स्वागत समिति की अध्यक्ष सीमा झा एवं सांस्कृतिक सचिव बीनू चौधरी ने किया। उन्होंने आगामी 17 मई को मिथिला सांस्कृतिक परिषद व मिथिला महिला समिति द्वारा मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के सभागार में जानकी (सीता) नवमी भव्यतापूर्वक मनाने के बारे में भी चर्चा की।

समर ड्रिंक प्रतियोगिता में चंदा चौधरी को प्रथम, मधुबाला झा को द्वितीय व गुड़िया झा को तृतीय स्थान का पुरस्कार मिला। प्रेरणा ओझा चतुर्थ और रेणुका एवं बबीता झा पांचवें स्थान पर रहीं। अमिता झा, नमिता झा, भारती झा, सुशीला रानी, कुमकुम झा, लीला सिंहा, मधु ठाकुर को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिता की जज इंदिरा झा, सविता मिश्रा, आभा झा ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर किरण मिश्रा, आशा झा, डॉ मंजू झा, पूनम झा, आशा पाठक, प्रतिभा झा, सुशीला रानी आदि उपस्थित रहीं।

डीवीसी चंदपुरा मे कार्यालय कार्य शत - प्रतिशत हिंदी में ही करें : मनोज कुमार ठाकुर

बिभा संवाददाता

बोकारो : दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र मे शत प्रतिशत हिंदी में ही कार्यालय कार्य किए जाने का निर्णय लिया गया है। शुक्रवार को तेजस भवन के सम्मेलन कक्ष में इस बावत राजभाषा नोडल अधिकारियों और सभी विभाग के अध्यक्ष की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ महाप्रबंधक और परियोजना प्रधान श्री मनोज कुमार ठाकुर ने की ।

बैठक को संबोधित करते हुए श्री ठाकुर ने उपस्थित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे सभी कार्यालय कार्यों का निपटारा हिंदी में हीं करें।

बैठक में हिंदी पत्रों का जवाब हिंदी में ही देने, मूल पत्राचार के अधीन और भेजें जाने वाले पत्र हिंदी में भेजा जाना सुनिश्चित करने , ई ऑफिस में नोटिंग हिंदी में प्रस्तुत करने , सर्विस बुक और नोट शीट में किया जाने वाला नोटिंग हिंदी में ही करने, कुल पुस्तक का खरीद का 50% हिंदी पुस्तकों की खरीद किए जाने , सभी नोडल पदाधिकारी व सदस्य अपने विभाग से निर्गत होने वाले सभी प्रकार के आदेश हिंदी में निर्गत करने, हिंदी पत्र तथा अपनी ओर से भेजे जाने वाले पत्रों की एक प्रति राजभाषा निरीक्षण व संसदीय समिति के निरीक्षण हेतु गार्ड फाइल में रखे जाने के अलावा सभी रबर मोहरे , नाम पट्ट , सूचना पट्ट, दो भाषा में बनाए जाने आदि पर चर्चा की गई । कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी रवि सिंहा ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ महाप्रबंधक श्री रामप्रवेश साह, उप महाप्रबंधक राजीव रंजन ओझा, संजीव कुमार, दिलीप कुमार, ललन प्रसाद गुप्ता, राजकुमार चौधरी, श्वेता रानी , मुकेश कुमार, अजय कुमार, प्रतिमा खालको श्रीवत्स, सुनीता कमारी, संजीव कुमार ,अक्षय कुमार , आर के निराला , प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, वसंत कुमार महापात्रा, प्रदीप श्रीवास्तव, बलदेव राम , रामजी रजक आदि उपस्थित थे।

अक्षय तृतीया से पूर्व राजस्थान हाई कोर्ट के आदेश का स्वागत करते हुए गैरसरकारी संगठनों ने उठाई मांग

बिभा संवाददाता

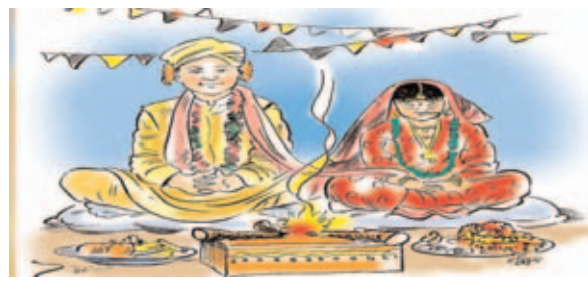

बोकारो : बाल विवाहों की रोकथाम सुनिश्चित करने के राजस्थान हाई कोर्ट के फौरी आदेश के बाद पूरे देश में इस तरह की आवाजें उठने लगी हैं कि झारखंड राज्य में भी इसी तरह के सख्त कदम उठाए जाएं। झारखंड केबोकारो में जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस के सहयोगी संगठन सहयोगिनी ने राज्य सरकार से अपील की कि वह भी इस नजीर का अनुसरण करते हुए सुनिश्चित करे कि अक्षय तृतीया के दौरान कहीं भी बाल विवाह नहीं होने पाए। हाई कोर्ट का यह फौरी आदेश जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस की जनहित याचिका पर आया है। इन संगठनों ने अपनी याचिका में इस वर्ष 10 मई को अक्षय तृतीया के मौके पर होने वाले बाल विवाहों को रोकने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की थी।

न्यायमूर्ति शुभा मेहता और पंकज भंडारी की खंडपीठ ने कहा, ह्लसभी बाल विवाह निषेध अफसरों से इस बात की रिपोर्ट मंगाई जानी चाहिए कि उनके अधिकार क्षेत्र में कितने बाल विवाह हुए और इनकी रोकथाम के लिए क्या प्रयास किए गए। खंडपीठ का यह आदेश अक्षय तृतीया से महज 10 दिन पहले आया है।

याचियों द्वारा बंद लिफाफे में सौंपी गई अक्षय तृतीया के दिन होने वाले 54 बाल विवाहों की सूची पर गौर करने के बाद खंडपीठ ने राज्य सरकार को इन विवाहों पर रोक लगाने के लिए बेहद कड़ी नजर रखने को कहा है। यद्यपि इस सूची में शामिल नामों में कुछ विवाह पहले ही संपन्न हो चुके हैं। लेकिन 46 विवाह अभी होने बाकी हैं।

जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस के संस्थापक भुवन ऋभु ने कहा, ह्लबाल विवाह वह घृणित अपराध है जो सर्वत्र व्याप्त है और जिसकी हमारे समाज में स्वीकार्यता है। बाल विवाह के मामलों की जानकारी देने के लिए पंचों व सरपंचों की जवाबदेही तय करने का राजस्थान हाई कोर्ट का यह फैसला ऐतिहासिक है। पंच व सरपंच जब बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक होंगे तो इस अपराध के खिलाफ अभियान में उनकी भागीदारी और कार्रवाइयां बच्चों की सुरक्षा के लिए लोगों के नजरिए और बर्ताव में बदलाव का वाहक बनेंगी। बाल विवाह के खात्मे के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदम पूरी दुनिया के लिए एक सबक हैं और हाई कोर्ट का यह फैसला इस दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है।ह्व

जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस पांच गैरसरकारी संगठनों का एक गठबंधन है जिसके साथ 120 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठन सहयोगी के तौर पर जुड़े हुए हैं जो पूरे देश में बाल विवाह, बाल यौन शोषण और बाल दुव्यार्पार जैसे बच्चों की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर काम कर रहे हैं।

सहयोगिनी के निदेशक गौतम सागर ने कहा, ह्लराजस्थान हाई कोर्ट का यह आदेश ऐतिहासिक है जिसके दूरगामी नतीजे होंगे। देश में शायद पहली बार ऐसा हुआ है जब पंचायती राज प्रणाली को यह शक्ति दी गई है कि वह मुखिया या सरपंचों को अपने क्षेत्राधिकार में बाल विवाहों को रोकने में विफलता के लिए जवाबदेह ठहरा सके। जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस के सहयोगी के तौर पर हम पूरे देश के जिलाधिकारियों से इसी तरह के कदम उठाने की अपील करते हैं। जमीनी स्तर पर हमारी पहलों ने यह साबित किया है कि बाल विवाह जैसे मुद्दों के समाधान में सामुदायिक भागीदारी सबसे अहम है। यह अदालती आदेश बच्चों की सुरक्षा के लिए समुदायों को लामबंद करने में स्थानीय नेतृत्व की जवाबदेही की जरूरत को रेखांकित करता है।

संक्षिप्त खबरें

जनजागरण के नाम मोटरसाइकिल जत्था ने किया भ्रमण

खूँटी । तोरपा में मतदाता जनजागरण रैली निकाला गया। यह रैली मोटरसाइकिल से तोरपा ब्लॉक से शुरू होकर मुख्य पथ, मस्जिद गली, कर्रा मोड, कर्रा रोड, खसुवा टोली, बड़ाईक टोली सहित कई स्थानों में 30 से अधिक मोटरसाइकिल सवार लोग ग्रुप बैनर लहराते हुए भ्रमण किया। जो मतदाताओं को जागरूक करने का प्रयास किया गया।

उम्मीदवारों के निर्वाचन व्यय लेखा पंजी की हुई प्रथम जाँच

खूँटी । लोकसभा निर्वाचन 11- खूँटी (अ०ज०जा०) क्षेत्र' 2024 से निर्वाचन हेतु उम्मीदवारों के निर्वाचन व्यय लेखा पंजी की प्रथम जाँच दिनांक-02.05.2024 को समाहरणालय के विकास भवन स्थित सभागार मे व्यय प्रेक्षक एवं सहायक व्यय प्रेक्षकों के निर्देशन में की गयी। उक्त जाँच में भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवार अर्जुन मुण्डा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उम्मीदवार कालीचरण मुण्डा, बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार सावित्री देवी, झारखण्ड पार्टी के उम्मीदवार अर्पणा हंस, भारत आदिवासी पार्टी के उम्मीदवार बबीता कच्छप, निर्दलीय उम्मीदवार पास्टर संजय कुमार तिर्की, व निर्दलीय उम्मीदवार बसंत कुमार लोंगा द्वारा स्वयं अथवा अपने निर्वाचन अभिकर्ता के माध्यम से निर्वाचन व्यय से संबंधित लेखा पंजी की जाँच हेतु उपस्थित हुए। इस दौरान जारी दिशा - निदेर्शों के संबंध में सभी को अवगत कराया गया।

शहरी एवं ग्रामीण मतदाताओं के बीच वितरित की जा रही है मतदाता सूचना पर्ची एवं मतदाता मार्गदर्शिका

खूँटी । जिला अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान चलाए जा रहे 'वोट जैसा कुछ नहीं, वोट जरूर डालेंगे हम' की थीम से अवगत कराते हुए सभी को मताधिकार का प्रयोग करने को लेकर जागरूक किया। खूंटी जिला अन्तर्गत सभी बूथों पर मतदाता सूचना पर्ची एवं मतदाता मार्गदर्शिका का वितरण किया जा रहा है। बीएलओ घर - घर पहुंचकर मतदाताओं को मतदान तिथि 13 मई को अपने मतदान केंद्र पहुंचने के लिए जागरूक कर रही हैं। साथ ही सुबह 7 से शाम पांच, इस बार दिन भर मतदान के संदेश दे रही हैं। इसके अलावा जिले के विभिन्न क्षेत्रों में स्वास्थ्य कैंप लगाकर जागरूकता अभियान के दौरान ग्रामीण मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। मतदान प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, ताकि जिला अंतर्गत लोकतंत्र के महापर्व में सभी मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित हो तथा सशक्त लोकतंत्र के उद्देश्यों की पूर्ति हो।

दिव्यांग जनों को घरों में जाकर कराया गया मतदान

खूँटी । निर्वाचन प्रक्रिया में मतदान देना लोकतंत्र के लिए 18 वर्ष की आयु से अधिक उम्र के लोगों को मतदान करना आवश्यक है। वहीं चुनाव आयोग के दिशा निदेर्शानुसार दिव्यांगों और 85 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के असहाय लोगों को घरों में मतदान कराने के लिए निर्देशित किया गया है। जिसमें शुक्रवार को खूंटी प्रखण्ड क्षेत्र के विभिन्न गाँवों में घरों तक जाकर मतदान कराया गया। इस निमित्त प्रखण्ड विकास पदाधिकारी ज्योति कुमारी ने बताया कि दिव्यांगों व 85 वर्षों की आयु से अधिक उम्र के लोगों को मतदान कराया गया। जिसमें चार गाँवों में खटंगा, कामंता, खूँटी टोला, रेवा में कुल 06 मतदाताओं ने मतदान कराया गया है।

विहिप ने किया जिले के मातृशक्ति संगठन विस्तार

खूँटी । जिले के तोरपा प्रखंड में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा वृहस्पतिवार को बैठक किया गया। जिसमें महावीर मंदिर तोरपा प्रांगण में विहिप द्वारा दूर्गा वाहिनी व मातृशक्ति का विस्तार किया गया। जिसमें सीमा देवी को मातृ शक्ति प्रमुख व भानुमति देवी को दुर्गा वाहिनी संयोजिका सर्वसम्मति से बनाया गया। साथ में मातृशक्ति सह प्रमुख देवंती देवी रूपा देवी,सत्संग प्रमुख रिंकी देवी , सेवा प्रमुख मंजु देवी संपर्क प्रमुख संगीता ठाकुर कार्यक्रम प्रमुख पल्वी किरण एवं सह संयोजिका आरती देवी शक्ति प्रमुख रानी देवी विधि प्रमुख प्रीति कुमारी संपर्क प्रमुख चांदनी कुमारी के साथ 23 महिला सदस्य के साथ में महिलायें उपस्थित थीं। मौके पर विहिप जिला अध्यक्ष विनोद जयसवाल व उपाध्यक्ष विकास मिश्रा प्रखंड अध्यक्ष एमपी सिंह बजरंग दल संयोजक मोहित जयसवाल जयकुमार सिंह उपस्थित थे।

हाथ को साफ कर चुन लेना है कमल, संगठन के बातों को कर लेना है अमल : कोचे मुंडा

बिभा संवाददाता

रनिया । तोरपा विधानसभा क्षेत्र के रनिया में भारतीय जनता पार्टी का लोकसभा चुनावी कार्यालय का उद्घाटन पूजा अर्चना के बाद फीता काटकर विधायक कोचे मुंडा के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। मौके पर तोरपा विधानसभा चुनाव प्रभारी अरुण चंद्र गुप्ता ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री पुनः नरेंद्र मोदी को बनाने और भाजपा के खूँटी लोकसभा प्रत्याशी अर्जुन मुंडा को जीतने के लिए पार्टी के हर कार्यकर्ता को बुथ स्तर पर मेहनत करने की जरूरत है। मोदी में विश्वास कर कमल का बटन दबाकर देश में चार सौ सीट जीतने का सपना साकार करें।क्योंकि देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही देश का विकास करने में संकल्पित है।विधायक कोचे मुंडा ने उपस्थित भाजपा कार्यकर्ता को संबोधित कर कहा की देशभर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा चलाए जा रहे कल्याणकारी योजना से विपक्षी घबरा गए हैं।प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश सुरक्षित है। महिलाओं के सम्मान के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही है। जैसे उज्ज्वल, पीएम आवास, किसान सम्मान निधि जिससे जुड़कर लोग लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने बुथ स्तर के कार्यकताओं जन जन तक पहुँचकर कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लोगों को देकर प्रत्याशी अर्जुन मुंडा के पक्ष में समर्थन जिताने की बात कही।

मजबूत देश के लिए सभी का समर्थन एक मतदान कमल के नाम हो : अरुण

मौके पर, लोकसभा निर्वाचन तोरपा प्रभारी अरुण चन्द्र गुप्ता ने देश के महान सपूतों का उदाहरण देते हुए स्थानीय भाषा में ओजस्वी भाषण से लोगों को कार्य के लिए जागृत कर दिया। उन्होंने कहा कि हमारा देश एक शुरू से ही राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव रखने वाले महान सपूतों वाला देश है। इन सपूतों को जन्म देने वाली माँ भारत माँ है। और किसी भी देश को मन नहीं कहा जाता है लेकिन भारत वीर सपूतों ज्ञानी सपूतों को जन्म देने वाली जननी है। हम सभी को अपनी मां की रक्षा के लिए कार्य करना है यही कार्य नरेंद्र मोदी अपने कर्तव्य का पालन करते हुए कर रहे हैं यही कारण है कि कल का ऋणी भारत आज हर दृष्टिकोण से शक्तिशाली हो रहा है। तो यह देन है तो देश के करोड़ों मतदाताओं के मतदान सहृदय समर्पण के कारण हुआ है। आज मतदाता अपना समर्थन मतदान के माध्यम से देते और न ही देश शक्तिशाली होता?। इसलिए देश को और भी गौरवशाली बनाना है तो अपना समर्थन अपना मतदान के माध्यम से देना हो। और देश का बेटा नरेंद्र मोदी के माध्यम से देश को और भी गौरवशाली बनाना होगा। तभी विदेश में कोई दूसरा व्यक्ति पीछे पीछे छाता लेकर चलेगा। इसलिए उत्तिष्ठः जागृतः चरैवेति चरैवेति को याद करके आगामी 13 मई को केवल और केवल कमल का बटन देख मतदान करें जैसे अर्जुन ने मछली की आँख में तीर मारकर लक्ष्यभेदन कर सफलता पाई थी।

इस चुनावी कार्यालय का उद्घाटन के मौके पर भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य संतोष जायसवाल, सांसद प्रतिनिधि नारायण साहू, भागीरथ राय, सुशीला देवी, विनोद भगत, शशांक शेखर राय, बागुन साहू, डोमन सिंह, विश्वनाथ स्वांसी, सीताराम नाग, कृष्णा सिंह,जसपति देवी,अहिल्या देवी, किशोर साहू, राज किशोर सिंह भुईया, अनिमा देवी, शिव अवतार सिंह सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे। कार्यक्रम का अध्यक्षता रनिया भाजपा मंडल अध्यक्ष निखिल कंडुलना के द्वारा किया गया।

डिस्पैच सेंटर से लेकर कलेक्शन सेंटर तक निर्वाचन की संपूर्ण प्रक्रिया की दी गई जानकारी

बिभा संवाददाता

खूँटी । लोक सभा चुनाव 2024 को स्वतंत्र, निष्पक्ष व स्वच्छ संपन्न कराने के निमित प्रशिक्षण कोषांग, खूंटी द्वारा 60-खूंटी एवं 59-तोरपा विधानसभा क्षेत्र के लिए प्रतिनियुक्त पीठासीन पदाधिकारियों के लिए बिरसा कॉलेज, खूंटी एवं लोयला इंटर कॉलेज परिसर में अलग-अलग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पीठासीन पदाधिकारियों को डिस्पैच सेंटर से लेकर कलेक्शन सेंटर तक निर्वाचन की संपूर्ण प्रक्रिया की जानकारी दी गई।

आज से सुविधा केंद्रों पर पोस्टल वोटिंग का शुभारंभ हुआ। पोस्टल वोटिंग के लिए आवेदन करने वाले पीठासीन पदाधिकारियों ने संबंधित प्रशिक्षण केंद्र स्थापित सुविधा केंद्र पर पोस्टल बैलेट के द्वारा अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण कोषांग के मास्टर ट्रेनरों द्वारा डिस्पैच सेंटर से मतदान के दिन मतदान केंद्र और मतदान के बाद कलेक्शन सेंटर पर कार्य निष्पादन एवं दायित्वों से पीठासीन पदाधिकारियों को अवगत कराया गया। चुनाव कार्य में उपयोग में लाये जाने वाले विभिन्न प्रपत्रों की चर्चा करते हुए उन प्रपत्रों के संधारित करने की विधि से अवगत कराया गया। बताया गया कि प्रपत्रों को भरने में विशेष सावधानी की जरुरत होती है। प्रशिक्षण के दौरान चुनाव कार्य में उपयोग में लाये जाने वाले विभिन्न प्रपत्रों के डम्मी प्रपत्र का प्रयोग कर संधारित करने के तरीका की व्यवहारिक जानकारी दी गई।

पीठासीन पदाधिकारियों को मॉक पोल, सिलिंग और वास्तविक मतदान, मतदान समाप्ति के बाद प्रपत्रों का पैकेटिंग से संबंधित प्रक्रियाओं के संबंध में विस्तार से बताया गया। उन्हें ईवीएम के माध्यम से मतदान की संपूर्ण प्रक्रियाओं से अवगत कराते हुए सीयू, बीयू एवं वीवीपैट के संयोजन एवं कार्यप्रणाली की व्यवहारिक जानकारी दी गई। हैंडस आन कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 59-तोरपा एवं 60-खूंटी विधानसभा क्षेत्र के लिए प्रतिनियुक्त क्रमशः 280 एवं 328 महिला-पुरुष पीठासीन पदाधिकारी शामिल हुये।

पोस्टल वोटिंग आरंभ होने से पूर्व प्रशिक्षण कोषांग के वरीय पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक, आईटीडीए, खूंटी श्री आलोक शिकारी कच्छप, कार्मिक कोषांग के वरीय पदाधिकारी सह डीडीसी, खूंटी श्री श्याम नारायण राम , प्रशिक्षण कोषांग के प्रभारी पदाधिकारी सह जिला भू-अर्जन पदाधिकारी परवेज सहित अन्य अधिकारियों द्वारा सुविधा केंद्रों पर पोस्टल वोटिंग हेतु की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया और संबंधित अधिकारियों का आवश्यक निर्देश दिया गया।

इससे पूर्व चुनाव कार्य संपादन से संबंधित 50 प्रश्नों के माध्यम से पीठासीन पदाधिकारियों की कार्य कुशलता की जांच के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया।

तोरपा रोड में भाजपा ने चलाया चुनावी जनसंपर्क अभियान

प्रधानमंत्री के लिए पूरा देश है परिवार , इसलिए कहते हैं डेढ़ सौ करोड़ देशवासियों : सुरेश

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर पंचायत क्षेत्र के तोरपा रोड में भाजपा नगर अध्यक्ष सुरेश जायसवाल की अगुवाई में वृहस्पतिवार को चुनावी जनसंपर्क अभियान चलाया गया। लोकसभा निर्वाचन में भाजपा प्रत्याशी अर्जुन मुंडा की जीत सुनिश्चित कराने के लिए जन-जन के दिलों में भाजपा के सुकार्य को बतलाने का काम किया गया। मौके पर, तोरपा रोड, छत्रु कोचा, के महिला पुरूष सभी ने इस अभियान में आगे बढ़कर साथ दिया। वहीं महिलाओं ने भी चर्चा करते हुए बतायी कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अच्छे योजनाओं का लाभ सभी जाति धर्म समुदाय के लिए मिलता रहा है। मौके पर, सुरेश जायसवाल ने कहा कि आपका मतदान ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मजबूत बनाया है। जिसका नतीजा हुआ कि देश काफी विकास किया लोगों को इसका लाभ मिला है। केंद्र सरकार की योजना सभी के लिए होती है। दूसरे पार्टी के लोग हिंदू मुस्लिम सिख इसाई बोलकर बाँटते हैं। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक ही वाक्य होता है। डेढ़ सौ करोड़ देशवासी भाई बहन। इसका मतलब, जिसमें सभी लोगों को वो समान नजरिए से देखते हैं। और पूरा देश को अपना परिवार मानते हैं। और यही कारण है कि प्रधानमंत्री मध की बात में आम जनता के साथ सीधे जुड़ते हैं। और लोगों के मन की बात को पूरे देश में सभी लोग देख लेते हैं।

इस दौरान, भाजपा के जिला महामंत्री विनोद नाग, भीम साहू, प्रशांत कुमार, रुपेश जायसवाल, हरिहर सिंह , बैजू पंडित, सुशीला देवी, रंजीता देवी सहित काफी संख्या में लोग शामिल थे।

बसों का परिचालन ठप्प होने से होगी यात्रियों को परेशानी : अरुण

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिला बस ऑनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष राजकुमार जायसवाल की अध्यक्षता में शुक्रवार को बैठक कर मतदान करने व कराने के लिए विचार किया गया ताकि आने वाले 13 मई को मतदान कार्य में सभी लोग बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें।

मौके पर, अरुण कुमार साबू ने कहा कि मतदान देना हमारा भारतीय होने का पहला पहचान व परिचय है कि हम भारत के नागरिक है।

उन्होंने कहा कि पूरे राज्य में मात्र एक खूँटी जिला ऐसा जिला बन रहा है जहाँ पब्लिक ट्रांसपोर्ट को जिला परेशान कर रही है सिस्टम के अनुकूल कार्य नहीं हो रहा है। जनता को मतदान करने अपने गाँव तक आने जाने नहीं दिया जायेगा। खूँटी प्रशासन पूरे जिले में नाकाबंदी कर सभी बसों को पकड़ रहे है जिला के द्वारा यदि बसों का नैतिकता के आधार पर अधिग्रहण हो तो लोग आने गाव पहुँच पाएंगे अन्यथा बस का परिचालन ही ठप्प हो जायेगा तो वोट के दिन तक कैसे जायँगे लोग कैसे अयणगे मतदान करने । इसपर मुख्य चुनाव आयुक्त का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया गया कि पूरे मार्ग को बंद चुनाव करना क्या सन्देश देता है रांची से खुनलने वाली बस चाईबासा , सिमडेगा इन दो मार्ग पर खूंटी होकर जाती है जिसकी बसों को पकड़ कर रखा जने से मार्ग में परिचालन ठप्प होने की प्रक्रिया बनाई जा रही है । ऐसे में बस मालिक सुबिधा देने में असमर्थ हो रहे है और मार्ग में बसों का परिचालन वोट से लगभग 5 दिन पहले ही ठप्प हो जायेगा। एक भी बस नहीं चलेगी । इससे जनता को और चुनाव कार्य में लगे पदाधिकारी को आने जाने में ऑटो का सहारा लेना होगा। उस ऑटो में अनैतिक किराया में वृद्धि होगी। अरुण साबू ने कहा कि जनता से अपील है कि मतदान का प्रयोग करने हेतु आप अपने आने जाने की सुबिधा का ख्याल रखें।

लोकसभा निर्वाचन के निमित्त तैयारियों की बैठक

बिभा संवाददाता

खूँटी । लोकसभा आम चुनाव 2024 की तैयारियों की समीक्षा को लेकर कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, कार्यपालक अभियंता, विद्युत विभाग, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, अतिरिक्त शिक्षा कार्यक्रम पदाधिकारी के साथ बैठक की गई। इस दौरान जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने मतदाता सूची पर्ची वितरण को लेकर जानकारी ली।

बैठक में बताया गया कि माइक्रो प्लान तैयार कर आपसी समन्वय स्थापित करते हुए बीएलओ के माध्यम से शत प्रतिशत मतदाता पर्ची का वितरण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। इस दौरान उपायुक्त ने कहा कि प्रतिनियुक्ति पदाधिकारी एवं कर्मी निर्वाचन संबंधित दायित्वों का निर्वाह सजगता के साथ पूरी ईमानदारी से करें। उन्होंने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें, ताकि सभी तैयारियां ससमय पूर्ण कर जिले में निर्भीक एवं शांतिपूर्ण वातावरण में चुनाव संपन्न कराया जा सकें। उन्होंने मतदान की तिथि को किए जाने वाले कार्यों की बिंदुवार समीक्षा की गई। एएमएफ, वोटर्स फैसिलेटेशन पोस्टर, कम्युनिकेशन प्लान को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि हर स्तर पर तैयारियों को पूर्ण रूप प्रदान करें। क्लस्टर एवं बूथों पर सुचारू प्रबंधन सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि चुनाव को लेकर उत्सव का माहौल बनायें। मतदाताओं को इसके लिए भी प्रेरित करें कि लोकतंत्र के इस त्योहार को उत्साह के माहौल में अपने परिवार के सदस्यों के साथ मतदान कर मनाएँ।

केंद्र सरकार गरीबों को राशन देती है पर इस राज्य में गरीबों के राशन का किया जाता है कटौती : अर्जुन

बिभा संवाददाता

खूँटी । केंद्रीय मंत्री और खूँटी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी अर्जुन मुंडा आज चुनावी दौरा के दौरान बन गनालोया गाँव पहुँचे। इस दौरान जुरदाग, वन गनालोया, भोंडा, कर्रा आदि के ग्रामीण जन उपस्थित थे। मौके पर बन गनालोया की महिलाओं ने हर्षोल्लास के साथ प्रत्याशी का स्वागत की। इस गाँव में विगत 25 वर्षों से कोई भी विधायक सांसद नहीं पहुँचे थे वहीं अर्जुन मुंडा के पहुँचने पर लोग काफी खुश थे। मौके पर अर्जुन मुण्डा ने विपक्ष की महागठबंधन की राज्य सरकार के करनी सवाल खड़ा करते हुए जमकर निशाना साधा। जिस प्रकार क्षेत्र की जनता के साथ राज्य के महागठबंधन की सरकार ने जनता का हित को मारने का काम किया उसे अर्जुन मुंडा ने जनता के सामने रखते हुए कहा कि केंद्र सरकार गरीब जनता के लिए पूरी राशन भेजती है पर, यहां लोगों को राशन कम दिया जाता है। वहीं उन्होंने कहा कि जनता को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो इसके लिए पूरी राशि दी गयी है लेकिन आज भी कई ऐसे गाँवों में राज्य सरकार के अधिकारी बढ़िया तरीके से काम नहीं किया और लोगों को पानी? नहीं मिल पा रहा है। विपक्ष के लोग क्षेत्रों में जाते हैं लेकिन ये नहीं बतलाते हैं कि देश के लिए क्या करना है देश के लिए क्या विजन है। ये नहीं बतलाते हैं कि इतने लम्बे वर्षों तक शासन में रहे तो उन्होंने देश के लिए क्या किया।

इस मौके पर, जनसंघी कार्यकर्ता विनोद प्रसाद सोनी, मनोज कुमार, रंथु गोप, सुमेश्वर गोप, हरिहर गंझू, बिरेंद्र सिंह, विष्णु प्रसाद सोनी, दिलीप सिन्हा, दमेश्वर गोप, गजेन्द्र सिंह, जगदीश महतो, जगरनाथ महतो, प्रकाश साव, कैलाश राम, कलिंद्र राम, घुरन महतो, विनोद सिंह, राजू महतो, द्वारिका साव, उर्मिला देवी, बासमती देवी, रुक्मिला सारु, रंजीता देवी आदि सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

हाथ छाप को वोट देना यानि बीजेपी को वोट देना, कांग्रेस बिकने वाली पार्टी: एनोस

बिभा संवाददाता

तोरपा । तोरपा में साहु लाइन होटल के सामने झारखंड पार्टी चुनावी कार्यालय का उद्घाटन संयुक्त रूप से फीता काटकर झारखंड पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सह पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री एनोस एक्का, प्रदेश महासचिव अशोक भगत, झारखंड पार्टी खूँटी जिला महिला मोर्चा अध्यक्ष असीमा तोपनो, खूँटी लोकसभा सीट के प्रत्याशी अपर्णा हंस के द्वारा किया गया। मौके पर एनोस एक्का ने झारखंड पार्टी के कार्यकताओं को संबोधित कर कहा कि सरकार में बीजेपी हो या कांग्रेस, वर्तमान समय में भ्रष्टाचार हावी है। भाजपा के 45 वर्षों के शासन में कोई भी विकास के काम नहीं हुआ समय आ गया है। भाजपा और कांग्रेस को जवाब देने का बदलाव का यह लोकसभा चुनाव संकेत है। उन्होंने खूँटी लोकसभा क्षेत्र के लोगों को झारखंड पार्टी के पक्ष में मतदान कर प्रत्याशी अपर्णा हंस को विजयी बनाने का अपील किया। मौके पर एनोस ने कहा कि महा गठबंधन का प्रत्याशी कालीचरण मुंडा 2019 में चुनाव में जीता हुआ वोट को भाजपा के पास करोड़ों रुपए में बेच डाला था। कालीचरण मुंडा कांग्रेस प्रत्याशी बनाकर ईसाई मिशनरी को गुमराह कर रहे हैं। वहीं कालीचरण का भाई नीलकंठ मुंडा बीजेपी में रहकर आरएसएस के लिए काम कर रहे हैं।कांग्रेस पार्टी देश में बिकने वाली पार्टी बनकर रह गई है।

हिन्दू विवाह पर सर्वोच्च अदालत का स्वागतयोग्य फैसला

ललित गर्ग

हाल के वर्षों में, भारत में हिन्दू विवाह परम्परा एवं संस्कृति से अनेक विसंगतियां एवं विकृतियां जुड़ गयी है, डेटिंग संस्कृति की शुरूआत के साथ, लव-मेरिज का प्रचलन बढ़ा है। संभावित दूल्हा और दुल्हन अपने दम पर जीवनसाथी चुनना पसंद करते हैं। आज के रोमांटिक-रिश्ते वास्तव में विवाह नहीं हैं, बल्कि एक नई प्रथा है, जिसके विपरीत प्रभाव से परिवार-संस्था बिखरने लगी है। विवाह के साथ प्रीवेडिंग का प्रचलन भी अनेक विकृतियों का वाहक बना है, बड़े-बडे. भव्य आयोजन एवं होटल संस्कृति ने भी विवाह की पवित्रता को धुंधलाया है। आयोजनों में शराब एवं अन्य नशों का बड़ा प्रचलन भी दुर्घटनाओं का कारण बना है। जिनके कारण विवाह होने से पहले ही उसमें दरारें पड़ते हुए देखी गयी है।

देश की सर्वोच्च अदालत ने हिन्दू विवाह को लेकर बड़ा फैसला देकर न केवल हिन्दू विवाह के संस्कारों एवं पारंपरिक रिवाजों को पुष्ट किया है बल्कि उन्हें कानूनी दृष्टि से आवश्यक स्वीकार किया है। आज जबकि हिन्दू विवाह की पवित्रता एवं परम्परा तथाकथित आधुनिक जीवन एवं प्रभाव के कारण धुंधली होती जा रही है, पाश्चात्य संस्कृति की आंधी में हिन्दू विवाह की पवित्रता समाज में समय के साथ घटी है और उसमें सुधार एवं सुदृढ़ता की जरूरत है। जो लोग विवाह को मात्र एक पंजीकरण मानते हैं, उन्हें चेत जाना चाहिए। उन्हें सात फेरों का अर्थ समझना होगा। बिना सात फेरों, हिन्दू रीति-रिवाजों एवं वैवाहिक आयोजनों के कोर्ट की दृष्टि में भी विवाह मान्य नहीं होगा। हिंदू विवाह पर कोर्ट का ताजा फैसला न केवल स्वागतयोग्य है बल्कि इसके दूरगामी परिणाम सुखद होंगे। इससे हिन्दू संस्कृति एवं संस्कारों को बल मिलेगा। पारिवारिक-संस्था को मजबूती मिलेगी।

हिंदू विवाह से जुड़ा यह फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि शादी ह्यगाने और डांसह्न, ह्यशराब पीने और खानेह्न का आयोजन या अनुचित दबाव डालकर दहेज और गिफ्ट्स की मांग करने का मौका नहीं है। विवाह कमर्शियल ट्रांजैक्शन नहीं है। यह एक गंभीर बुनियादी सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आयोजन है, जिसे एक पुरुष और एक महिला के बीच संबंध बनाने के लिए मनाया जाता है, जो भविष्य में एक अच्छे परिवार के लिए पति और पत्नी का दर्जा प्राप्त करते हैं। यह भारतीय हिन्दू समाज-व्यवस्था की एक बुनियादी इकाई एवं मजबूत सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आयाम है। दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया है कि बिना सात फेरों के हिन्दू विवाह को मान्यता नहीं मिल सकती है अर्थात शादी के लिए हिन्दू विवाह अधिनियम में जो नियम और प्रावधान बनाए गए हैं उसका पालन करना होगा। इस तरह कोर्ट ने अपने फैसले में हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के तहत हिंदू विवाह की कानूनी आवश्यकताओं और पवित्रता को स्पष्ट किया है। अधिनियम के अनुसार, एक हिंदू विवाह किसी भी पक्ष के पारंपरिक संस्कारों और समारोहों के अनुसार संपन्न किया जाएगा। समारोहों में सप्तपदी (दूल्हा और दुल्हन द्वारा पवित्र अग्नि के चारों ओर संयुक्त रूप से सात कदम उठाना) शामिल है, और जब वे सातवां चरण एक साथ लेते हैं तो विवाह पूर्ण और बाध्यकारी हो जाता है। कुल मिलाकर हिन्दू विवाह एक संस्था है, संस्कार है और विवाह कोई व्यावसायिक लेन-देन नहीं है।

कोर्ट ने जोर दिया है कि हिंदू विवाह की वैधता के लिए

सप्तपदी (पवित्र अग्नि के चारों ओर सात फेरे) जैसे उचित संस्कार और उससे जुड़े समारोह जरूरी है। विवाद की स्थिति में समारोह के प्रमाण पेश करना जरूरी है। कोर्ट की सात फेरों और उससे जुड़े समारोह का मूल्य समझाने की यह कोशिश हिन्दू विवाह को न केवल मजबूती प्रदान करेंगी बल्कि आधुनिकता की आंधी में धुंधलाते मूल्यों को नियंत्रित करने का काम करेगी। इसमें कोई शक नहीं कि विवाह संस्कार का मूल महत्व पहले की तुलना में कम हुआ है, अब विवाह बहुतों के लिए एक दिखावा, मजबूरी या समझौता भर रह गया है। न्यायमूर्ति बी नागरत्ना ने अपने प्रासंगिक एवं उपयोगी फैसले में बिल्कुल सही कहा है कि हिंदू विवाह एक संस्कार है, जिसे भारतीय समाज में एक महान मूल्य की संस्था के रूप में दर्जा दिया जाना चाहिए। पारंपरिक संस्कारों या सात फेरों जैसी रीतियों के बिना हुए विवाह को हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 7 के अनुसार हिंदू विवाह नहीं माना जाएगा। इस वजह से कोर्ट ने युवा पुरुषों और महिलाओं से आग्रह किया हैं कि वो विवाह की संस्था में प्रवेश करने से पहले इसके बारे में गहराई से सोचें और भारतीय समाज में उक्त संस्था कितनी पवित्र है, इस पर विचार करें।

प्रश्न है कि हिन्दू विवाह को लेकर कोर्ट को जागरूक होने एवं हिन्दू संस्कारों को मजबूती देने की जरूरत क्यों पड़ी? हिन्दू विवाह से जुड़े संस्कारों एवं पारंपरिक रीति-रिवाजों को लेकर अनेक मामले कोर्ट की चौखट पर आते रहे हैं, हर बार कोर्ट सजगता, दूरदर्शिता एवं विवेक से विवाह-संस्था से जुड़े मामलों पर अपना नजरिया प्रस्तुत करती रही है। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने पिछले दिनों यह माना कि हिंदू विवाह अधिनियम के अनुसार, हिंदू विवाह को संपन्न करने के लिए कन्यादान का समारोह जरूरी नहीं है। उस फैसले में भी सप्तपदी के महत्व को दशार्या गया था। मध्यप्रदेश की एक परिवार अदालत के फैसले में महिला पक्ष को यह समझाया गया था कि सिंदूर लगाना एक विवाहित हिंदू महिला का धार्मिक कर्तव्य होता है। सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसले में ऐसी ही समझाइश की कोशिश झलकती है। कुल मिलाकर, न्यायालय का संदेश यह है कि फिजूल के तमाशे-दिखावे से बचते हुए विवाह के मूल अर्थ को समझना चाहिए। हिंदू विवाह को लेकर अब ज्यादा स्पष्टता की जरूरत है और विशेषतः हिन्दू संस्कारों एवं संस्कृति को बल देने की भी। क्योंकि भारत में परिवार संस्था कायम है तो इसका कारण हिन्दू संस्कार एवं परम्पराएं ही हैं। इस तरह कोर्ट ने अपने फैसले में हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के तहत हिंदू विवाह की कानूनी आवश्यकताओं और पवित्रता को स्पष्ट किया है।

हिन्दू विवाह एक आदर्श परम्परा एवं संस्कार है। हिंदू धर्म में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है। विवाह = वि $ वाह, अतः इसका शाब्दिक अर्थ है - विशेष रूप से उत्तरदायित्व का वहन करना। पाणिग्रहण संस्कार को सामान्य रूप से हिंदू विवाह के नाम से जाना जाता है। अन्य धर्मों में विवाह पति और पत्नी के बीच एक प्रकार का करार होता है जिसे विशेष परिस्थितियों में तोड़ा भी जा सकता है परंतु हिंदू विवाह पति और पत्नी क बीच जन्म-जन्मांतरों का सम्बंध होता है जिसे किसी भी परिस्थिति में नहीं तोड़ा जा सकता। अग्नि के सात फेरे लेकर और ध्रूव तारा को साक्षी मान कर दो तन, मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। यह दो परिवारों का भी मिलन है। हिंदू विवाह में पति और पत्नी के बीच शारीरिक सम्बंध से अधिक आत्मिक सम्बंध होता है और इस सम्बंध को अत्यंत पवित्र माना गया है।

हिन्दू विवाह का न केवल पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व है, बल्कि उसका गहन आध्यात्मिक महत्व भी है। हिंदू धर्म ने चार पुरुषार्थ (जीवन की चार बुनियादी खोज), यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष निर्धारित किया है। विवाह संस्कार का उद्देश्य ह्यकामह्न के पुरुषार्थ को पूरा करना और फिर धीरे-धीरे ह्यमोक्षह्न की ओर बढ़ना है। एक पुरुष और महिला के जीवन में कई महत्वपूर्ण चीजें शादी से जुड़ी होती हैं; उदाहरण के लिए, पुरुष और महिला के बीच प्यार, उनका रिश्ता, संतान, उनके माता-पिता, उनके जीवन में विभिन्न सुखद घटनाएं, सामाजिक स्थिति और समृद्धि। हिंदू समाज में एक विवाहित महिला को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उसके माथे पर कुमकुम-सिन्दूर के साथ एक महिला की दृष्टि, उसके गले में एक मंगलसूत्र पहने हुए, हरी चूड़ियाँ, पैर के अंगूठे के छल्ले और छह या नौ-यार्ड साड़ी स्वचालित रूप से एक पर्यवेक्षक के मन में उसके लिए सम्मान उत्पन्न करता है। हिंदू विवाह के सात वचनों में से, कम से कम तीन ऐसे हैं, जहां जोडे अपने बुजुर्गों की देखभाल करने का वादा करते हैं। पांचवां वचन अपनी संतान पैदा करने और उसकी देखभाल करने का है।

हाल के वर्षों में, भारत में हिन्दू विवाह परम्परा एवं संस्कृति से अनेक विसंगतियां एवं विकृतियां जुड़ गयी है, डेटिंग संस्कृति की शुरूआत के साथ, लव-मेरिज का प्रचलन बढ़ा है। संभावित दूल्हा और दुल्हन अपने दम पर जीवनसाथी चुनना पसंद करते हैं। आज के रोमांटिक-रिश्ते वास्तव में विवाह नहीं हैं, बल्कि एक नई प्रथा है, जिसके विपरीत प्रभाव से परिवार-संस्था बिखरने लगी है। विवाह के साथ प्रीवेडिंग का प्रचलन भी अनेक विकृतियों का वाहक बना है, बड़े-बडे.भव्य आयोजन एवं होटल संस्कृति ने भी विवाह की पवित्रता को धुंधलाया है। आयोजनों में शराब एवं अन्य नशों का बड़ा प्रचलन भी दुर्घटनाओं का कारण बना है। जिनके कारण विवाह होने से पहले ही उसमें दरारें पड़ते हुए देखी गयी है।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

आदर्श संहिता उल्लंघन मामले में पहली कार्रवाई

निर्वाचन आयोग ने प्रधानमंत्री के बांसवाड़ा में दिए भाषण पर भाजपा से जवाब मांगा है। कांग्रेस और वामदलों ने नरेन्द्र मोदी के भाषण को विभाजनकारी और महाहानिकर बताते हुए आयोग से शिकायत की थी। इसी पर संज्ञान लेते हुए आयोग ने नोटिस दिया है। किसी पदेन प्रधानमंत्री के विरु द्ध आदर्श संहिता उल्लंघन मामले में यह पहली कार्रवाई है। आयोग का अपनी याददाश्त के आधार पर ऐसा दावा है। दूसरी तरफ, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और उनकी पार्टी के नेता राहुल गांधी के विरु द्ध भाजपा की शिकायतों पर जवाब मांगा गया है। ये जवाब 29 अप्रैल तक दिए जाने हैं। इस तरह से आयोग ने निष्पक्षता एवं पारदर्शिता का एक कठिन पड़ाव पार कर लिया है। उसे इसका श्रेय मिलना चाहिए कि उसने संहिता उल्लंघन पर प्रधानमंत्री तक को नहीं बख्शा। यह आरोप भी कमजोर हुआ है कि आयोग विपक्ष और कमजोर दलों के नेता को ही निर्देशित करने में आगे रहता है। पर उसका निर्णायक इम्तिहान दोनों दलों के जवाब पर की जाने वाली कार्रवाई में होगा जो आयोग की शक्ति और क्षेत्र को परिभाषित करने वाला होगा। सार्वजनिक जीवन में गरिमा-मर्यादा और नियम-कायदे का आग्रही तबके ही नहीं, पूरे देश ने देखा-सुना कि बांसवाड़ा में और फिर अलीगढ़ तक में खास समुदाय और धर्म के लोगों के बारे में क्या-क्या न कहा गया। माना कि चुनाव बाद एक प्रधानमंत्री के रूप में आप समुदाय-धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करते पर यही भाव चुनावी सभाओं में भी रहना बुरा नहीं होता। यह सामान्य जन अपेक्षा है कि प्रधानमंत्री को तमाम विभाजनों और दोष-रेखाओं से ऊपर होना चाहिए। तब आयोग को भी रिकार्ड बनाने का मौका नहीं मिलता। चुनाव की घोषणा करते हुए आयोग ने भाषणों में सभ्यता के निर्वाह का अनुरोध दलों से किया था, जिसका पालन किसी ने नहीं किया। विपक्ष में स्थितिजन्य आक्रामकता स्वाभाविक ही होती है। सत्ता अपने व्यवहार से उसको परिमार्जित करती है। खरगे और राहुल सरकार की नीतियों की आलोचना के अधिकार के प्रयोग में सभ्यता भूलते रहे हैं। वे न केवल प्रधानमंत्री को निजी स्तर चोट पहुंचाने वाली भाषा का धड़ल्ले से प्रयोग करते सुने-देखे गए हैं, बल्कि तू-तड़ाक पर भी उतर आए हैं। यह भी रिकार्ड है कि नरेन्द्र मोदी देश के सर्वाधिक आलोच्य प्रधानमंत्री हैं। अगर यही एक परिपक्व लोकतंत्र की भाषा है तो यह वाकई बेहद पीड़ादायक परिदृश्य है।

चिंतन-मनन

संत की उदारता

संत बेनजोई के पास कई बालक शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। वह अपने सभी शिष्यों की शिक्षा पूर्ण करने के बाद ही उन्हें वहां से जाने की अनुमति देते थे। वह उद्दंड व शरारती शिष्यों को भी आज्ञाकारी और संस्कारी बनाकर ही दम लेते थे। एक बार उनके आश्रम में बहुत ही शरारती और बदतमीज लड़का आया। एक दिन वह चोरी करते हुए पकड़ा गया। बेनजोई ने उसे चोरी की बुराइयों से अवगत कराया और क्षमा कर दिया, लेकिन वह लड़का इतना बिगड़ैल था कि उस पर बेनजोई की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने दोबारा चोरी की और एक शिष्य को बेवजह पीट दिया। यह शिकायत बेनजोई तक पहुंची तो उन्होंने उसे फिर बुलाकर प्रेम से समझाया और एक बार फिर क्षमा कर दिया। यह देखकर आश्रम के अन्य शिष्य आगबबूला हो गए। शाम की प्रार्थना के समय सभी शिष्य एकजुट होकर बोले, गुरुजी, यह बार-बार चोरी करता रहेगा, हमें पीटता रहेगा और आप उसे क्षमा करते रहेंगे। यह कैसा न्याय है? यदि आप इसे आश्रम से नहीं निकाल सकते तो हम सभी यह आश्रम छोड़कर चले जाते हैं।

इस पर बेनजोई विनम्रता से बोले, मैंने माना कि तुम सब अच्छे हो, संस्कारी हो। कभी किसी कुसंग में न रहने के कारण दुष्कर्मों से दूर हो। यह अबोध किशोर अपने दुर्व्यसनी पिता और भाइयों द्वारा ठुकराया हुआ है। इसे मैं सुधारने, संस्कारित करने के उद्देश्य से यहां लेकर आया हूं। मुझे यह भी मालूम है कि तुम यदि इस आश्रम से चले गए तो अन्य किसी शिक्षक से शिक्षा प्राप्त कर सकते हो, किंतु इस बिगड़ैल लड़के को कौन अपने यहां रखेगा? इसे सुधरने का मौका कैसे मिलेगा? वह किशोर भी यह सब सुन रहा था। उसकी आंखें भर आईं। वह उनसे क्षमा मांगते हुए बोला, गुरुजी, मुझे माफ कर दीजिए। फिर कभी आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। उसने अन्य शिष्यों से भी माफी मांगी।

संसद के अंगने में गरीबों का क्या काम

सनत जैन

संसद के अंदर साल दर साल करोड़पति सांसदों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। चुनाव खर्च भी चुनाव आयोग बढाता जा रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव में चुनाव आयोग ने अधिकतम खर्च की सीमा 95 लाख तय कर दी है। जिस तरह से लोकसभा और विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं। लोकसभा और विधानसभा का चुनाव लड़ना, मध्यम एवं निम्न वर्गीय ईमानदार व्यक्ति के लिये चुनाव लड़ने की बात सपने में भी नहीं सोच सकता है। लोकसभा में 2004 में 156 सांसद करोड़पति और अरबपति थे। 2009 में यह संख्या बढ़कर 315 हो गई है। 2014 में संख्या बढ़कर 443 हो गई। रही सही कसर 2019 के लोकसभा चुनाव में करोड़पतियों और अरबपति सांसदों की संख्या बढ़कर 475 हो गई। 2024 के लोकसभा चुनाव चल रहे हैं। इसमें भी अरबपति और करोड़पति उम्मीदवार बड़ी संख्या में सांसद का चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव आयोग द्वारा खर्च की अधिकतम सीमा प्रत्येक उम्मीदवार के लिए 95 लाख तय की गई है। राजनीतिक दल अपने उम्मीदवार के चुनाव खर्च के लिए अलग से खर्च करते हैं। राजनीतिक दलों द्वारा जिस तरह से पूंजीपतियों को टिकट दी जा रही है। राजनीतिक दलों में सामान्य कार्यकर्ता और नेता हैं, उसे राजनीतिक दलों की टिकट नहीं मिलती है। टिकट लेने के लिये पार्टी फंड में दान करने और स्वयं चुनाव खर्च उठाने वाले उम्मीदवारों को पंजीकृत राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पार्टियों द्वारा टिकट दी जाती है। सांसद और विधानसभा के अंदर मध्य और निम्न वर्ग की आवाज उठाने वाला सांसद अथवा विधायक निर्वाचित होकर सदन में नहीं पहुंच रहे है। कुछ इसी तरीके की स्थिति जिला पंचायत, जनपद पंचायत और पार्षद के चुनाव में भी देखने को मिलने लगी है। पंचायत के चुनाव में भी लाखों और करोड़ों रुपए के खर्च होने की बात सामने आती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव लगातार महंगे होते चले जा रहे हैं। चुनाव में जब उम्मीदवार लाखों और करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। चुनाव जीतने के बाद फिर वह धंधे तरह खर्च की भरपाई करने के लिए हर संभव कोशिश करते हैं। जिसके कारण जनसेवा भी एक धंधा बन गया है। जिसके फल स्वरुप चुनाव से धीरे-धीरे मध्य और निम्न वर्ग के लोग बाहर होते चले जा रहे हैं। संसद और विधानसभा जहां कानून बनते हैं। वहां केवल करोड़पति और अरबपतियों की संख्या बहुतायत में होने के कारण, निम्न एवं मध्यम वर्ग प्रतिनिधित्व अब सांसद और विधानसभा में करने वाला भी कोई नहीं रहा। पिछले 20 साल में यह स्थिति तेजी के साथ बदली है। पिछले 10 साल में संसद में 204 फीसदी की दर से करोड़पति और अरबपति सांसदों की संख्या बढी है। 2019 के लोकसभा चुनाव की बात करें, तो कुल 21 फीसदी सांसद ऐसे थे जिनकी संपत्ति एक करोड रुपए से कम थी यदि आरक्षण की व्यवस्था लागू नहीं होती, तो इनका भी चुना जाना संभव नहीं होता। राजनीतिक दल एसटी और एससी वर्ग के जो उम्मीदवार खड़ा करते हैं। उनके लिए पार्टी फंड से उन्हें चुनाव लड़ाया जाता है। ऐसी स्थिति में वह पार्टी में बंधक के रूप में रहते हैं। वह अपनी बात मुखर होकर पार्टी के अंदर भी नहीं कह पाते हैं। विधानसभा और लोकसभा में विहिप में बंधे होने के कारण उनकी अपनी अलग से कोई आवाज नहीं होती है। भारतीय लोकतंत्र के लिए यह सबसे बड़ी चिंता का है। 542 सांसदों में से यदि 475 सांसद करोड़पति और अरबपति हैं। शेष 21फीसदी सांसद आरक्षित वर्ग से आते हैं। जिसके कारण लोकसभा और विधानसभा में सभी वर्गों को समान प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए यही कहा जा सकता है, लोकतंत्र के अंगने में गरीबों का क्या काम है।

आम चुनाव और मुस्लिम तुष्टीकरण का विकृत खेल

आम चुनाव के मतदान के दो चरण समाप्त हो जाने के बाद सभी राजनीतिक दलों को जनता के मध्य अपनी स्थिति की वास्तविकता का कुछ सीमा तक पता चल गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की सम्भावना वाली भारतीय जनता पार्टी को रोकने के लिए विपक्ष ने एक बार फिर मुस्लिम तुष्टीकरण का विकृत खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया है। तथाकथित इंडी गठबंधन में शामिल दलों के नेता लगातार भड़काऊ और नफरत भरी बयानबाजी कर रहे हैं, जिसमें अब वोट जिहाद और तालिबान भी आ गया है। दिल्ली के मंडी हाउस इलाके में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ आतंकी फंडिंग मामले में सजा काट रहे यासीन मलिक का फोटो लगाया गया है।

पोस्टर में यासीन मलिक की रिहाई के साथ कांग्रेस को वोट देने की अपील की गई है। हालांकि जानकारी मिलते ही दिल्ली पुलिस ने यह पोस्टर हटा दिया। आतंकी यासीन मलिक कुख्यात अलगवावादी है जिससे 2006 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने मुलाकात की थी। अब मलिक आजीवन कारावास की सजा काट रहा है और अभी उस पर कई और मुकदमे चल रहे हैं। कांग्रेस केरल में प्रतिबंधित पीएफआई जैसे संगठनों का सहयोग ले रही रही है और सनातन विरोधी बयानों पर चुप्पी साधे हुए है।

मुस्लिम तुष्टीकरण का यह खुला खेल कांग्रेस ही नहीं अपितु भारत की सभी वामपंथी और अधिकांश क्षेत्रीय पार्टियां जमकर खेल रही हैं फिर चाहे वो उत्तर प्रदेश हो बिहार हो या पश्चिम बंगाल। विगत 10 वर्ष और अटल जी के कार्यकाल को छोड़ दें तो केंद्र तथा राज्यों में कांग्रेस व उसके गर्भ से निकले दलों व नेताओं ने ही सत्ता पर एकछत्र राज किया। ये सभी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भाजपा को हराने की बात करने वालों तथा कट्टरपंथियों का समर्थन कर मतदान को मजहब के आधार पर प्रभावित किया करते थे। भाजपा द्वारा धर्मनिरपेक्षता की सच्ची रेखा खींचने के बाद इन दलों के नेताओं के सामने अपना राजनीतिक अस्तित्व बचाने का संकट खड़ा हो गया है और ये वोट जिहाद की अपील कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में अभी तक सपा, बसपा, कांग्रेस सहित विभिन्न दल अतीक अहमद, मुख्तार अंसारी जैसे माफिया को अपने राजनीतिक लाभ के लिए पाला पोसा करते थे अब उनके लिए फातिहा पढ़ रहे हैं और धूर्तता के साथ उन्हें गरीबों का मसीहा बताकर मुसलमानों का वोट मांग रहे हैं । पहले ये माफिया बूथ लूटकर व मतदान के समय बम, गोलियां दागकर वोट जिहाद किया करते थे अब उनके नेता व गुर्गे इनको शहीद बताकर मुस्लिम समाज को भड़का रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के फरुर्खाबाद में कायमगंज के अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्र में इंडी गठबंधन के प्रत्याशी के समर्थन में पूर्व विदेशमंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी सपा नेता मारिया आलम खां ने वोट जिहाद का नारा देकर समाजवादियों की मुश्किल बढ़ा दी है। मारिया आलम खां ने कहा कि हर महिला और हर पुरुष वोट जिहाद करके संविधान बचाने की इस जंग को लड़ेगा।

प्रदेश में वोट जिहाद शब्द को लेकर राजनीतिक बयानबाजी अब काफी तल्ख हो गई है। सपा-कांग्रेस गठबंधन हो जाने के कारण इस बार सलमान खुर्शीद का परिवार चुनावी मैदान से भले ही दूर हो गया हो किंतु अपने सहयोगी दलों के उम्मीदवारों के लिए चुनाव प्रचार कर रहा है। सलमान खुर्शीद का परिवार कई बार विवादों के घेरे में रहा है। खुर्शीद की पत्नी लुईस खुर्शीद पर दिव्यांगों की सहायता करने के नाम पर घोटाला करने का मुकदमा चल रहा है।

सलमान खुर्शीद बाटला हाउस एनकाउंटर व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी विवादित बयानबाजी कर चुके हैं। जब लुईस खुर्शीद को इस बात का आभास हो गया था कि इस बार उनके परिवार को टिकट नहीं मिलने जा रहा तब उन्होंने मीडिया के सामने अपने कार्यकर्ता से कहा था कि अगर कांग्रेस का कोई पदाधिकारी उनसे मिलने आए तो उसे चप्पल से मारें। अब उसी परिवार की भतीजी मारिया एक बार फिर वोट जिहाद की अपील कर रही हैं।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के संभल से पूर्व सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान वर्क के पोते एवं सपा प्रत्याशी जियाउर्रहमान वर्क अपनी नुक्कड़ सभा के वायरल वीडियो में मुख्तार अंसारी, अतीक अहमद और शहाबुद्दीन की मौत को कुर्बानी बता रहा है। वीडियो वायरल हो जाने के बाद वर्क पर मुकदमा दर्ज हो गया है। उसके बाद भी वह नहीं रुका और उसने चुनाव आयोग के अधिकारियों को धमकी देते हुए बयान दिया कि जब वक्त बदलेगा तब बदला लिया जाएगा। बहुजन समाजवादी पार्टी अपनी नैया पार लगाने व जनता के मध्य अपनी उपस्थिति को दर्ज कराने के लिए चुनावी मैदान में अपने युवा कोआर्डिनेटर, पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के भतीजे आकाश आनंद के नेतृत्व में रण मे उतरी है और कुछ-कुछ बदली बदली सी नजर आ रही है। पार्टी ने 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अपनी जमीन को फिर से प्राप्त करने के लिए, सवर्णो को खुश करने के लिए रामनाम का विरोध नहीं किया था किंतु वह अब काफी पीछे छूट चुका है।

बसपा ने इस बार नया नारा दिया है,ह्न बहुजन हिताय बहुजन सुखाय काह्न किंतु पार्टी का एक मुश्त मुस्लिम मतों का लालच छूटा नहीं है इसलिए बसपा ने सबसे अधिक मुसलमानों को अपना उम्मीदवार बनाया है। बसपा के युवा नेता आकाश आनंद मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए आक्रामक बयानबाजी कर रहे हैं जिसके कारण उनके खिलाफ सीतापुर जिले में केस भी दर्ज हो गया है। सीतापुर की एक जनसभा में आकाश ने अपनी सभी सीमाओं को लांघते हुए उत्तर प्रदेश सरकार की तुलना तालिबान से कर डाली। अतीक, मुख्तार अंसारी व शहाबुद्दीन जैसे माफिया का राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग बसपा ने भी समय -समय पर किया है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

कटहल की खेती दे भरपूर फायदे

गुरदासपुर के एक किसान ने अपने खेत में कटहल के वृक्ष लगाए। यह वृक्ष लगभग 13 से 15 वर्षों के दरम्यान भरपूर फल देने लगता है। यह फल लगभग 12 रुपये से लेकर 50 रुपये किलो के हिसाब से बिकता है। सब्जी मंडी वाले स्वयं ही फल तोड़कर ले जाते हैं। एक कटहल तीन किलो से लेकर 16 किलो तक हो जाता है। यह वृक्ष बोहड़ या पीपल की भांति विशाल, ऊंचा–चौड़ा होता है।

कटहल को अंग्रेजी में ब्रेड फ्रूट तथा संस्कृत में इसको 'पनस' कहते हैं जिसके अर्थ हैं कटहल या कांटा। कटहल के वृक्ष को फल जड़ से लेकर तनों तथा शाखाओं तक लगता है। एक वृक्ष से क्विंटलों के हिसाब से फल उतरता है तथा कई माह तक रहता है। बेशक कटहल एक फल है। इसका आचार तथा स्वादिष्ट सब्जी बनती है। पक जाने पर यह बीच से मीठा होता है। कटहल की ऊपरी चमड़ी रोएंदार, कील जैसी खड़ी खुरदरी होती है। भारत के पूर्व वाले क्षेत्र तथा बर्मा, बिहार, गोरखपुर में ज्यादा पाया जाता है। दक्षिण भारत का पूर्वी तथा पश्चिमी तट कटहल का असली घर है। पंजाब में भी कटहल की बिजाई कामयाब हो रही है। कटहल में कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, तेल, रेशे, विटामिन बी, सोडियम, लोहा, फासफोर्स, पोटाशियम, जिंक आदि तत्व पाए जाते हैं।

कटहल का वृक्ष 40 से 60 फुट ऊंचा हो जाता है। इस वृक्ष को मार्च-अप्रैल के दो माह दो प्रकार के नर तथा मादा अलग-अलग फल पड़ते हैं। इसके नर फल लम्बे तथा मादा गोल होते हैं। इसका फल मई से जुलाई तक सब्जी बनाने के काम आता है। इसके वृक्ष दो प्रकार के होते हैं। एक किस्म के वृक्ष के फल बीज वाले होते हैं तथा दूसरे में बीज नहीं होते। पंजाब में बीज वाले ही वृक्ष कामयाब हैं। यह गर्म क्षेत्र का वृक्ष है और पंजाब का जलवायु इसके लिए बहुत ही अनुकूल है। इस वृक्ष के नीचे लम्बे समय तक पानी खड़ा नहीं होना चाहिए। जून के माह यह वृक्ष फल से गुच्छों के रूप में भरपूर हो जाता है। अधिक पैदावार लेने के लिए दिसंबर-जनवरी के माह में इसकी कांट-छांट कर देनी चाहिए, अगर कांट-छांट न की जाए तो फल कम पड़ता है।

कटहल पौधों की बुआई कटहल के पक्के फल के बीजों से की जाती है तथा बिन बीज वाले पौधों की बुआई बिन बीज वाले कटहल के पौधों की जड़ से नए पौधे लिए जाते हैं। कटहल के बीज वाले फल को बीज पड़ते हैं तथा ऊपर ही पकने वाले फल से बीज निकाल कर बोए जाएं तो भी उगते हैं। फरवरी माह या फिर बरसातों में ही इसके पौधे खेतों में लगाएं।

प्रथम दो-तीन माह इनकी संभाल बहुत अनिवार्य है। एक से दूसरे पौधे की दूरी 40 फुट तक होनी चाहिए। जड़ से पैदा किए पौधे को 5-6 वर्षों बाद ही फल पड़ जाता है परन्तु बीज वाले पौधे को आठ से दस वर्ष बाद ही फल पड़ता है। इसके टूटे हुए फल को अगर खुली हवा में न रखा जाए तो एक सप्ताह में ही यह हल्का होकर पिचक जाएगा। इसकी लकड़ी पीले रंग की होती है तथा बहुत अच्छी किस्म की होती है। इसकी लकड़ी को दीमक नहीं लगता। इसकी लकड़ी से दरवाजे, खिड़कियां तथा फर्नीचर आदि बनता है। पॉलिश करने पर इसका काठ भव्य लगने लगता है। इसके बुरादे से एक प्रकार का पीला रंग बनता है जिससे बर्मा में आज बौद्ध-भिक्षु अपने वस्त्र रंगा करते हैं। इसकी छाल के काढ़े से भी रंग तैयार होता है।

कटहल की खेती अपनायें-खूब लाभ कमायें

कटहल के पौधे दीर्घ जीवी अधिक लाभ देने वाले विटामिन ए, सी तथा खनिज पदार्थों से भरपूर होते है। इनके फलों का उपयोग मुख्य रूप से सब्जी एवं अचार के लिए किया जा सकता है। यदि किसान कटहल का उत्पादन व्यवसाय रूप से करें तो उन्हें अधिक लाभ हो सकता है। वर्तमान में उद्यानिकी विभाग द्वारा विषेष तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता दी जा रही है। जिसका किसान लाभ ले सकें।

कटहल मध्यप्रदेश के सभी जलवायु क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। इसके लिए पानी के निकास वाली गहरी उपजाऊ दोमट भूमि अच्छी रहती है। यह पौध अधिक सर्दी, गर्मी सहन नहीं कर पाता है किन्तु पर्याप्त प्रकाष मिलने पर इसका उत्पादन अच्छा हो जाता है।

कटहल की दो किस्में होती है। कडे गूदे वाली व मुलायम गूदे वाली इसकी जो प्रमुख जातियां है उनमें रूद्राक्षी, सिंगापुर, मुत्तम, वारीखाल व खाजा। रूद्राक्षी के फल छोटे व कांटे वाले होते है इनका वजन 4 से 5 किलो तक होता है। पूर्ण अवस्था प्राप्त वृक्षों से 500 से अधिक फल प्राप्त होते यह सब्जी के लिए उपयुक्त किस्म है। सिंगापुर जाति का वजन 7 से 10 किलो तक होता है गूदा मीठा फुर्रफुरा व पीले रंग का होता है। मुत्तम औसत 7 किलोग्राम तक का फल लगता है। सबसे बडे फल वाली किस्म खाजा है यह इसमें सफेद कोये वाले फल का भार 25 से 30 किलोग्राम तक होता है। इसके कोये पकने पर दूध की भांति सफेद रसदार एवं कोमल होते है।

कटहल का उद्यान लगाने के लिए चयनित स्थान पर रेखांकन कर 10 मीटर कतार से कतार एवं 10 मीटर पौधे की दूरी पर एक मीटर लंबे चौडे एवं गहरे आकार के गड्ढों को खोदकर मई के अंतिम सप्ताह या जून के प्रथम सप्ताह में खेत की मिट्टी व गोबर की खाद के मिश्रण के साथ 500 ग्राम सुपर फासफेट, 500 ग्राम पोटास एवं 50 ग्राम ऐलडेग्स चूरण मिलाकर भर दिये जाते है। वर्षा ऋतु में पौध के रोपण हेतु उपयुक्त समय होता है। पौध रोपण के बाद मिट्टी को अच्छी तरह से दबा देते है और नियमित देखभाल की जाती है। पौधों में संतुलित मात्रा में 1 से 6 वर्ष तक गोबर की खाद एवं उर्वरक की मात्रा दी जाती है। पौधों की सिंचाई हेतु गर्मी में 15 दिन व सर्दी ऋतु में 1 माह में सिंचाई की जाती है। दो तीन वर्ष की उम्र के पौधों की गर्मी के समय 7 दिन व ठंड में 15 दिन में सिंचाई करना ठीक रहता है।

कटहल के वृक्ष में नर एवं मादा फूल आते है। नर पहले व मादा बाद में आते है। नर फूल बाद में झण जाते है। मादा फूल मुख्य तने से लेकर प्रारंभिक तथा सहायक शाखाओं में लगे रहते है। अच्छी फसल के लिए कीट व्याधी उपचार हेतु समय-समय पर दवाओ का छिडकाव जरूरी है। कटहल की उपज औसतन 10 से 15 वर्ष पष्चात् 100 से 250 फल प्रति वृक्ष प्राप्त होते है। फलों का भार 5 से 30 किलोग्राम तक होता है और मार्च से जून तक प्राप्त होते है।

बिना जुताई के बोआई करने वाली मशीन

आज के आधुनिक जहां हर क्षेत्र में नई नई तकनीके आ रही हैं वहीं कृषि क्षेत्र में भी उत्पादन बढ़ाने के लिए हमारे वैज्ञानिक भी लगे हुए हैं और सफल भी हुए हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि कम समय और कम लागत में कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सकता है और इसी को ध्यान में रखते हुए कई प्रकार के कृषि यंत्रों का निर्माण ही नहीं किया गया बल्कि उनसे कृषि उत्पादन बढ़ाने में कई अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। नए-नए कृषि यंत्रों से जहां किसानों का समय बचा है वहीं उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। भारत के किसानों ने खेती के उत्पादन बढ़ाने के लिए कई तरह के यंत्रों का उपयोग अपनी खेती किसानी के लिए किया है।

केरल, दक्षिण तमिलनाडु के तटीय हिस्सों में समुद्र में ऊंची लहरें उठने की चेतावनी

तिरूवनंतपुरम। केंद्रीय एजेंसियों ने केरल और दक्षिण तमिलनाडु के तटीय इलाकों में मछुआरों एवं स्थानीय निवासियों के लिए इस बारे में एक 'रेड अलर्ट' जारी किया है कि शनिवार और रविवार को समुद्र में ऊंची लहरी उठ सकती हैं। समुद्र में अचानक ऊंची लहरें उठने की इस परिघटना को 'कल्लक्कड़ल' नाम से जाना जाता है। अधिकारियों ने यहां बताया कि भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (आईएनसीओआईएस) और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने यह चेतावनी जारी की है। अधिकारियों ने इस चेतावनी के मद्देनजर मछुआरों और तटीय इलाकों के निवासियों से आवश्यक एहतियात बरतने का आग्रह किया है। केरल आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के एक अधिकारी ने कहा, ''समुद्र में ऊंची लहरें उठने की एनडीएमए-आईएनसीओआईएस से चेतावनी मिली है।'' मौसम एजेंसियों ने कहा कि शनिवार तड़के ढाई बजे से रविवार रात साढ़े ग्यारह बजे की अवधि के दौरान समुद्र में ऊंची लहरें उठने की संभावना है। अधिकारियों ने कहा कि इस अवधि के दौरान काफी तेज हवा चलने और समुद्र में ऊंची लहरें उठने की संभावना है। हालांकि, उन्होंने कहा कि यह सुनामी जैसी स्थिति नहीं है। इससे पहले दिन में, आईएनसीओआईएस ने कहा था कि समुद्र में 0.5 से 1.5 मीटर ऊंची लहरें उठने की संभावना है। आईएनसीओआईएस, एक केंद्रीय एजेंसी है जो देश में मछुआरों को समुद्री मौसम के बारे में चेतावनी जारी करती है। केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (केएसडीएमए) और अन्य मौसम एजेंसियों ने एक बयान में लोगों को अधिकारियों के निर्देश के अनुसार खतरनाक क्षेत्रों से दूर रहने की सलाह दी है क्योंकि समुद्र का मौसम ज्यादा खराब होने की संभावना है। बयान के अनुसार, ''नौकाओं के बीच एक सुरक्षित दूरी रखकर उनके आपस में टकराने को टाला जा सकता है। मछली पकड़ने के उपकरणों की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए।'' एजेंसियों ने लोगों को तटों से दूर रहने और समुद्र में नहीं उतरने की भी सलाह दी है। आईएनसीओआईएस के अनुसार, हिंद महासागर के दक्षिणी हिस्से में तेज हवाएं चलने के परिणामस्वरूप समुद्र में ऊंची लहरें उठती हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह के फर्जी वीडियो मामले में कांग्रेस के 05 कार्यकर्ता गिरफ्तार

नई दिल्ली । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के फर्जी वीडियो मामले में तेलंगाना पुलिस ने पांच कांग्रेस कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया है। तेलंगाना कांग्रेस के मीडिया प्रभारी कमल मेदागोनी ने कहा कि तेलंगाना इंटरनेट मीडिया संयोजक नवीन और तसलीमा सहित पांच लोगों को तेलंगाना भाजपा की शिकायत के आधार पर तेलंगाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इसके पहले दिल्ली पुलिस की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक आपरेशंस (कारड) यूनिट ने केंद्रीय मंत्री शाह के वीडियो से छेड़छाड़ करके प्रसार के संबंध में सात से आठ राज्यों में 16 व्यक्तियों को समन जारी किया था। कथित फर्जी वीडियो में केंद्रीय गृह मंत्री को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि भाजपा देश में आरक्षण के खिलाफ है। हालांकि, भाजपा ने वायरल क्लिप को फर्जी बताया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, तलब किए गए लोगों में मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी सहित तेलंगाना में सत्तारूढ़ कांग्रेस के छह सदस्य शामिल हैं। उन्हें कई राज्यों के अन्य व्यक्तियों के साथ एक मई को दिल्ली के द्वारका में आइएफएसओ इकाई में पूछताछ के लिए उपस्थित होने के लिए कहा गया था। वहीं केंद्रीय गृह मंत्री शाह का फेक वीडियो को प्रसारित करना जम्मू-कश्मीर राज्य कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष रमण भल्ला के बेटे जय सिद्ध भल्ला को भारी पड़ गया। एक वकील की शिकायत पर जम्मू त्रिकुटा नगर पुलिस थाने में जय भल्ला पर मामला दर्ज किया गया है। भल्ला कांग्रेस के जम्मू रियासी संसदीय क्षेत्र से प्रत्याशी हैं।

वाट्सऐप पर संदिग्ध मैसेज भेजने वालों का अकाउंट हो जाएगा लॉक, कुछ देर के लिए मैसेज जाना रुक जाएगा

नई दिल्ली । तमाम तरह के स्कैम और ठगी की गतिविधियों पर लगाम कसने के लिए वाट्सऐप कंपनी ने कई तरह के कदम उठाए हैं। इसी कड़ी में वाट्सऐप नया सेफ्टी फीचर भी लांच कर रही है, जो संदिग्ध मैसेज भेजने वालों के अकाउंट को कुछ देर के लिए लॉक कर सकती है और मैसेज जाना रुक जाएगा। एक रिपोर्ट के अनुसार वाट्सऐप एक नया फीचर ला रहा है, जो किसी टार्गेट यूजर को मैसेज भेजने से रोक सकता है। जैसे ही वाट्सऐप को कोई संदिग्ध मैसेज मिलेगा, तो वह संबंधित यूजर का अकाउंट अस्थायी रूप से ब्लॉक कर सकता है और ऐसे यूजर कोई मैसेज नहीं भेज सकेंगे। इस फीचर की खास बात ये है कि यूजर का अकाउंट ब्लॉक होने पर भी वाट्सऐप पर मैसेज रिसीव कर सकेंगे। इतना ही नहीं इस पर रिप्लाई भी किया जा सकेगा। यूजर किसी भी ग्रुप में रिप्लाई कर सकेंगे, जिससे जरूरी कम्युनिकेशंस बना रहेगा। यह फीचर वाट्सऐप के नए अपडेट में शामिल हो जाएगा। यूजर जल्द ही इस तरह के फंक्शन का इस्तेमाल कर सकेंगे।रिपोर्ट में कहा गया है कि ऐसे अकाउंट जिनसे कोई अपशब्द वाले व्यवहार किए जाएंगे या स्पैम अथवा अन्य वॉयोलेशन होगा, उसे नया फीचर आसानी से डिटेक्ट कर लेगा। हालांकि, इसके लिए कंटेंट या कॉल को एक्सेस नहीं किया जाएगा, लेकिन ऐप का एआई यूजर के व्यवहार का पैटर्न पकड़ लेगा और संदिग्ध दिखते ही मैसेज की सुविधा को ब्लॉक कर देगा। वाट्सऐप का नया फीचर स्?कैम या फॉड करने वालों को पहले चेतावनी देगा और फिर भी नहीं मानें तो उनका अकाउंट हमेशा के लिए बंद कर दिया जाएगा। अभी वाट्सऐप को ऐसी कोई संदिग्ध गतिविधि दिखती है तो वह संबंधित अकाउंट को ही ब्लॉक कर देता है। इस फीचर को अभी डेवलप किया जा रहा है और जल्द ही यूजर्स को इस्तेमाल के लिए पेश कर दिया जाएगा। बता दें कि वाट्सऐप तो आज हर आदमी की जरूरत बन चुका है। इस ऐप के बिना एक दिन भी गुजारना मुश्किल हो जाता है। लेकिन, आजकल इसका गलत इस्तेमाल होना भी शुरू हो गया है। तमाम तरह के स्कैम और ठगी के मामले सामने आते हैं, जिसमें वाट्सऐप का इस्तेमाल किया गया है।

रामलला के दर्शन कर भावुक हुए पाकिस्तानी श्रद्धालु, 33 शहरों के 223 श्रद्धालु पहुंचे अयोध्या

अयोध्या। पाकिस्तान के 33 शहरों के 223 श्रद्धालुओं ने अयोध्या पहुंचकर रामलला के दर्शन किए। श्रद्धालुओं का यह जत्था रायपुर पहुंचा। जहां से अमरावती व प्रयागराज होकर श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे हैं। इस यात्रा का अंतिम पड़ाव हरिद्वार होगा। रामलला के दरबार में जब पाक श्रद्धालु पहुंचे तब सभी श्रद्धालु रामलला के दर्शन कर भाव विभोर हो उठे। दर्शन के बाद श्रद्धालुओं ने बताया कि रामलला से प्रार्थना की है कि भारत व पाकिस्तान के रिश्ते जल्द से जल्द बेहतर हों। श्रद्धालु दो अलग-अलग जत्थों में अयोध्या पहुंचे और शुक्रवार की सुबह सरयू स्नान कर रामलला सहित विभिन्न मंदिरों में दर्शन-पूजन किया। अयोध्या की धार्मिकता से सभी श्रद्धालु बहुत ही प्रभावित दिखाई दिए। जत्थे का नेतृत्व कर रहे सदाणी दरबार के मुखिया साईं डॉ. युधिष्ठिर लाल ने बताया कि गुरु परंपरा के भक्त हर वर्ष यहां आते हैं। इस जत्थे में पाकिस्तान से कराची, लाहौर, सक्खर, घोटकी और हैदराबाद सहित कई शहरों के श्रद्धालु शामिल हैं। सबसे अधिक संख्या में सिंध प्रांत के आठ जिलों के श्रद्धालु शामिल हैं। अयोध्या पहुंचे पाक श्रद्धालुओं का सिंधी समाज की ओर से स्वागत किया गया। विहिप नेता गजेंद्र सिंह के निर्देशन में सभी श्रद्धालुओं को रामलला के दर्शन कराए गए। राममंदिर ट्रस्ट की ओर से सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर पाकिस्तानी पत्रकार ज्योति श्री माहेश्वरी ने बताया कि अयोध्या में जब प्राण प्रतिष्ठा हो रही थी, तब हमारे आंखों से आंसू गिर रहे थे। हम सभी इस क्षण के साक्षी बनना चाहते थे, लेकिन सीमाओं के बंधन के चलते नहीं आ सके। श्रद्धालुओं ने कहा कि हम भारत सरकार के शुक्रगुजार हैं, हमें अयोध्या आने का मौका मिला। सिंध प्रांत निवासी धनराज ने बताया कि वे 35 सालों से बेकरी चलाते हैं। पाकिस्तान में लोगों को धर्म-संस्कृति से जोड़ने की जरूरत है।

मां नरगिस की 43वीं पुण्यतिथि पर उन्हें याद कर भावुक हुए संजय दत्त

मुंबई। पिछले 44 साल से फिल्मों में सक्रिय संजय दत्त ने अपनी मां अभिनेत्री नरगिस दत्त की 43वीं पुण्यतिथि पर उन्हें याद कर फिर भावुक हो गए। संजय हर साल नरगिस की डेथ एनिवर्सरी पर काफी भावुक हो जाते हैं। संजय ने मां संग अपनी तस्वीरें शेयर कर एक भावुक पोस्ट लिखी है। संजय ने लिखा, मिस यू मां, हालांकि आप यहां नहीं हो, लेकिन आपकी मौजूदगी हर पल महसूस होती है, हमारे दिलों और हमारी यादों में बसी हैं मां, लव यू।

बूथ प्रबंधन से बेहतर चुनाव जीतने का कोई दूसरा रास्ता नहीं: अमित शाह

-बीजेपी कार्यकर्ता नये वोटरों और महिला मतदाताओं पर ध्यान दें

लखनऊ (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कानपुर की एक होटल में बीजेपी की संगठनात्मक बैठक में चुनावी रणनीति को लेकर पार्टी पदाधिकारियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने साफ तौर पर बताया कि बूथ प्रबंधन से बेहतर चुनाव जीतने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। उन्होंने बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं को जीत का मंत्र देते हुए कहा कि जो बूथ जीता वो चुनाव जीता।

शाह ने कहा कि पन्ना प्रमुख, मतदाताओं से संपर्क कर उन्हें बीजेपी का संकल्प पत्र देकर प्रधानमंत्री की गारंटी के बारे में बताएं और उनके घरों पर स्टीकर चिपकाएं। उन्होंने कहा कि जनता हमारे साथ है लोगों को मोदी की गारंटी पर भरोसा है। दो घंटे चली बैठक में अमित शाह ने पांचवें चरण की 14 लोकसभा सीटों की समीक्षा भी की। बरेली, बदायूं और सीतापुर में चुनावी जनसभाओं को संबोधित करने के बाद सीधे बैठक में पहुंचे अमित शाह ने कहा कि पहले दो चरणों का चुनाव बहुत अच्छा रहा है। बीजेपी की जीत के साफ संकेत मिल रहे हैं।

शाह ने कहा कि सामाजिक संपर्क को और बढ़ाएं। संपर्क के दौरान नये वोटरों और महिला मतदाताओं पर ध्यान दें। उन्हें पीएम मोदी की गारंटी के बारे में जरूर बताएं। पन्ना प्रमुखों के साथ-साथ बीजेपी नेता व कार्यकर्ता 100 फीसदी लोगों से संपर्क करेंगे और सुबह 7 बजे ही अपना, अपने परिवार के सभी मतदाताओं का मतदान कराएं। शाह ने कहा कि तीसरे चरण से लेकर अंतिम चरण तक हर सीट पर जीत का अंतर और बढ़ाना है। इसके लिए कार्यकर्ता पूरा जोर लगाएं। घर-घर संकल्प पत्र पहुंचाएं और मतदाताओं के साथ उनके घरों में चाय पर संकल्प पत्र को लेकर चर्चा करें। शाह ने पांचवें चरण की लखनऊ, मोहनलालगंज, रायबरेली, अमेठी, जालौन, झांसी, हमीरपुर, बांदा, फतेहपुर, कौशांबी, बाराबंकी, फैजाबाद, कैसरगंज और गोंडा सीट की समीक्षा की।

कोवैक्सीन का दावा : हमारी वैक्सीन का कोई साइड इफेक्ट नहीं

नई दिल्ली। एस्ट्रोजेनेका और भारत में कोविशील्ड पर सवाल उठने के बाद कोवैक्सीन बनाने वाली कंपनी भारत बायोटेक ने दावा किया कि हमारे कोरोना के टीके से खून का थक्का जमने, थ्रम्बोसायटोमेनिया, टीटीएस, वाआईटीटी, पेरिकार्डिटिज, मायोकार्डिटिज जैसा कोई खतरा नहीं है। भारत बायोटेक ने कहा कि सेफ्टी हमारे लिए सबसे पहले है। कंपनी ने कहा कि कोवैक्सीन एक मात्र हमारी वैक्सीन है, जिसका ट्रायल भारत में किया गया। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को एक याचिका दायर कर कोविशील्ड टीके के किसी भी संभावित दुष्प्रभाव और जोखिम कारकों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के रिटायर जज की देखरेख में एक चिकित्सा विशेषज्ञ समिति गठित करने का अनुरोध किया गया। याचिका के अनुसार ब्रिटेन मुख्यालय वाली दवा कंपनी 'एस्ट्राजेनेका' ने कहा है कि कोविड-19 के खिलाफ उसका टीका बहुत दुर्लभ मामलों में कम प्लेटलेट काउंट और रक्त के थक्के बनने का कारण बन सकता है। इस टीके को भारत में कोविशील्ड के रूप में लाइसेंस के तहत बनाया गया था। कोविशील्ड को लेकर केंद्र सरकार पर विपक्ष हमलावर है।

हैट्रीक पर राजनाथ सिंह की नजर, 5 बार सांसद रहे अटल बिहारी वाजपेयी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लखनऊ उत्तर प्रदेश के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। राज्य में 80 संसदीय सीटें हैं। लखनऊ सीट में पांच विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं जिनमें लखनऊ पश्चिम, लखनऊ उत्तर, लखनऊ पूर्व, लखनऊ मध्य और लखनऊ कैंट शामिल हैं। यह निर्वाचन क्षेत्र एक सामान्य सीट है और अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित नहीं है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), समाजवादी पार्टी (सपा), कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) इस निर्वाचन क्षेत्र में मुख्य दल हैं। इस सीट का प्रतिनिधित्व भाजपा के दिग्गज नेता और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लगातार पांच बार 1991, 1996, 1998, 1999 और 2004 में किया।

2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने 3,47,302 वोटों के अंतर से लगातार दूसरी बार सीट जीती। उन्हें 56.64त्न वोट शेयर के साथ 6,33,026 वोट मिले। उन्होंने सपा उम्मीदवार पूनम शत्रुघ्न सिन्हा को हराया, जिन्हें 2,85,724 वोट (25.57त्न) मिले थे। कुल वैध मतों की संख्या 11,16,445 थी। कांग्रेस उम्मीदवार आचार्य प्रमोद कृष्णम 1,80,011 वोट (16.11त्न) के साथ तीसरे स्थान पर रहे। 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने पहली बार इस सीट से जीत हासिल की। उन्हें 54.23त्न वोट शेयर के साथ 5,61,106 वोट मिले। कांग्रेस उम्मीदवार रीता बहुगुणा जोशी को 2,88,357 वोट (27.87त्न) मिले और वह उपविजेता रहीं।

सिंह ने जोशी को 2,72,749 वोटों के अंतर से हराया. इस निर्वाचन क्षेत्र में डाले गए वैध वोटों की कुल संख्या 10,33,883 थी। बसपा उम्मीदवार नकुल दुबे 64,449 वोट (6.23त्न) के साथ तीसरे और सपा उम्मीदवार अभिषेक मिश्रा 56,771 वोट (5.49त्न) के साथ चौथे स्थान पर रहे। आम आदमी पार्टी (आप) के उम्मीदवार और अभिनेता जावेद जाफरी महज 41,429 वोट (4.00त्न) के साथ पांचवें स्थान पर रहे।

इस बार का चुनाव

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, जो लखनऊ से दो बार के सांसद हैं, का सीधा मुकाबला इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार रविदास मेहरोत्रा ??से है, जो लखनऊ सेंट्रल विधानसभा सीट से समाजवादी पार्टी के विधायक हैं। सिंह प्रतिष्ठित संसदीय क्षेत्र से अपनी लगातार तीसरी जीत सुनिश्चित करने के लिए चुनाव लड़ेंगे, जिसका प्रतिनिधित्व 1991 से 2004 तक पांच बार दिवंगत प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया था।

लखनऊ विगत विजेता

लाल जी टंडन (भाजपा)= 2009, अटल बिहारी वाजपेई (बीजेपी)= 2004, अटल बिहारी वाजपेई (बीजेपी)= 1999, अटल बिहारी वाजपेयी (भाजपा)= 1998, अटल बिहारी वाजपेयी (भाजपा)= 1996, अटल बिहारी वाजपेयी (भाजपा)= 1991, मांधाता सिंह (जनता दल)= 1989, शीला कौल (कांग्रेस)=1984, शीला कौल (कांग्रेस)= 1980, हेमवती नंदन बहुगुणा (बीएलडी)=1977

अजमल और हुसैन को वोट देना नर गाय से दूध की उम्मीद करने जैसा

-सीएम सरमा ने असम की धुबरी में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कही यह बात

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ) के मौजूदा सांसद बदरुद्दीन अजमल और कांग्रेस उम्मीदवार रकीबुल हुसैन पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि अजमल और हुसैन को वोट देना नर गाय से दूध की उम्मीद करने जैसा है। सरमा असम के मुस्लिम बहुल लोकसभा क्षेत्र धुबरी में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा, अजमल और हुसैन के लिए वोट करना नर गाय से दूध की उम्मीद करने जैसा होगा।

उन्होंने दावा किया कि सात मई को आम चुनाव के तीसरे चरण में असम गण परिषद (एजीपी), एआईयूडीएफ और कांग्रेस के उम्मीदवारों के बीच त्रिकोणीय मुकाबला होगा। मुख्यमंत्री सरमा ने कहा कि बीजेपी की सहयोगी एजीपी उन क्षेत्रों में समर्थन हासिल कर रही है, जहां पहले लोगों के बीच उनका कोई प्रभाव नहीं था। गोलकगंज में एक सार्वजनिक बैठक में उन्होंने क्षेत्र में एआईयूडीएफ और कांग्रेस के समर्थन में आई गिरावट पर कहा कि लोगों को एहसास हो गया है कि धुबरी में सांसद अजमल का अब दबदबा नही है और उन्हें रकीबुल हुसैन की भी जरूरत नहीं है। 13 उम्मीदवारों और 26 लाख से अधिक मतदाताओं के साथ राजनीतिक दौड़ ज्यादातर एआईयूडीएफ के बदरुद्दीन अजमल, कांग्रेस के रकीबुल हुसैन और एजीपी के जावेद इस्लाम के बीच है।

मुख्यमंत्री सरमा ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के माफिया राज वाले बयान पर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि प्रियंका गांधी ने कांग्रेस शासन के दौरान माफिया राज के दिन नहीं देखे हैं। आज राज्य में न कोई बम विस्फोट होता है, न कोई गोली चलती है, न कोई उल्फा है, और न कोई एनडीएफबी, सिर्फ रकीबुल हुसैन का माफिया राज था। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रियंका और राहुल गांधी को असम के लोगों के बीच कोई समर्थन नहीं मिल रहा है।

सीएम सरमा के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस उम्मीदवार रकीबुल हुसैन ने सरम की आलोचना करते हुए कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान के बाद उन्होंने अपना रुख बदल लिया है। हुसैन ने दावा किया कि धुबरी में सरमा की नई रुचि उनकी इस मान्यता से पैदा हुई कि बीजेपी को अन्य समुदायों से पर्याप्त समर्थन नहीं मिल रहा है। धुबरी से कांग्रेस ही जीतेगी।

चंद्रमा के सतह की तुलना में नीचे बर्फ कई गुणा ज्यादा

- भारतीय वैज्ञानिकों के नए शोध से सबको चौंकाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। हालिया अध्ययन से इस बात की उम्मीद जगी है कि चंद्रमा के ध्रुवीय गड्ढों में पहले के अनुमान से काफी अधिक उपसतह जल बर्फ हो सकती है। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के ताजा शोध से पता चलता है कि सतह के कुछ मीटर नीचे बर्फ की मात्रा सतह की तुलना में 5 से 8 गुना अधिक है।

यह दबी हुई बर्फ चंद्रमा पर लंबे समय तक मानव उपस्थिति को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। इसरो स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) के टी चक्रवर्ती ने कहा, इस बर्फ के वितरण और गहराई की सटीक जानकारी भविष्य में इन चंद्र वाष्पशील पदार्थों का पता लगाने और नमूना लेने के लिए लैंडिंग स्थलों का चयन करने में महत्वपूर्ण साबित होगा। नासा के चंद्र टोही ऑर्बिटर (एलआरओ) पर सवार सात उपकरणों से डेटा का विश्लेषण करते हुए टीम ने पाया कि उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में दक्षिणी ध्रुवों की तुलना में लगभग दोगुनी बर्फ है। माना जाता है कि बर्फ की उत्पत्ति प्राचीन चंद्र ज्वालामुखी के दौरान निकलने वाली गैस से हुई थी।

भारत के चंद्रयान-2 चंद्र ऑर्बिटर के रडार डेटा का उपयोग करते हुए निकाले गए निष्कर्ष संकेत देते हैं कि कुछ ध्रुवीय क्रेटर में बर्फ जमा हो सकती है। इसरो का कहना है कि नया अध्ययन चंद्रमा के वाष्पशील पदार्थों के इन-सीटू जांच के लिए उसकी भविष्य की योजनाओं का समर्थन करता है। पानी मानव जीवन के लिए एक बहुमूल्य संसाधन है। ऐसे में चंद्रमा की सतह के ठीक नीचे से बर्फ का होना एक नई संभावना पैदा करता है। बता दें कि चंद्रमा पर पानी की खोज को लेकर दुनियाभर के वैज्ञानिक सालों से खोज में जुटे हैं।

देवगौड़ा परिवार की करतूतों का खुलासा: लड़कियों के साथ घंटो बाथरुम में नहाता था प्रज्वल रेवन्ना

बेंगलुरु (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के पोते की काली करतूतों का परत दर परत खुलासा हो रहा है। सैकड़ों महिलाओं के यौन शोषण के आरोपों से घिरा प्रज्वल रेवन्ना विदेश भाग गया है लेकिन कथित कुकर्म उसका लगातार पीछा कर रहे हैं। सैकड़ों आपत्तिजनक वीडियो सामने आए हैं। इन वीडियो में प्रज्वल रेवन्ना महिलाओं का यौन शोषण करते नजर आ रहे हैं। हालांकि प्रज्वल रेवन्ना और उनके परिवार ने इन वीडियो को फेक बताते हुए परिवार की छवि खराब करने का आरोप लगाया है। कर्नाटक सरकार ने एसआईटी गठित कर दी है। प्रज्वल जर्मनी में हैं और उनके खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया गया है। एक शख्स अन्य शख्स ने बताया कि रेवन्ना के घर में काम करने वाली लड़कियां और महिलाएं घबराती थीं। वह उन्हें नहाते समय बाथरूम में आपने साथ ले जाता था। बाथरूम में उनका यौन शोषण करता था। जब वह नहाने जाता था तो घर की काम करने वाली महिलाएं यहां-वहां छिप जाती थीं ताकि वह बच सकें। कोई महिला या लड़की रेवन्ना से कोई मदद की आस लेकर आती थी तो वह उसे भी अपने जाल में फंसा लेता था।

वह महिलाओं और लड़कियों की मजबूरी का फायदा उठाता था। रेवन्ना परिवार की हनक के चलते हर कोई डरता था।

यहां के एक नागरिक ने बताया कि देवगौड़ा परिवार से यहां के लोग डरते हैं, क्योंकि बीते 20 साल से उनका यहां होल्ड रहा है। वह कहते हैं कि लोग एचडी देवगौड़ा का सम्मान करते हैं लेकिन रेवन्ना परिवार से डरते हैं।एक स्थानीय शख्स ने बताया कि ब्राह्मण वेद को मानते हैं। वह हर किसी को समान समझते हैं, गले लगाते हैं, लेकिन यह देवगौड़ा परिवार ब्राह्मण से भी खुद को ऊपर समझते हैं। रेवन्ना और उनके परिवार की संस्कृति ही अलग तरह की है। अगर दलित समुदाय का कोई शख्स उनसे मिलना चाहता है तो उसे सुबह जल्दी जाना पड़ता है, ऐसा इसलिए क्योंकि वह बिना नहाए ही दलितों से मिलते हैं। किसी कारण से रेवन्ना के घर जाकर उनसे मिल सुबह मिलता है। एक दूसरे स्थानीय शख्स ने बताया कि अगर सुबह उनके नहाने के बाद कोई दलित मिलने पहुंच गया तो वे नाराज हो जाते हैं। वह कहते हैं कि यह कोई समय है आने का? इस समय क्यों आए हो? वे अपने लोगों से हम लोगों को वहां से हटाने को कहते हैं। अगर कोई धोखे से उन्हें छू गया तो वह फिर से नहाते हैं। हालांकि ये लोग कहते हैं कि यह सिर्फ रेवन्ना परिवार के साथ है, देवगौड़ा ऐसे बिल्कुल नहीं हैं, वह हर किसी के साथ सामान व्यवहार करते हैं। लोगों ने बताया कि जब रेवन्ना यहां से जिला पंचायत सदस्य बने, विधायक और सांसद बनते गए, वैसे-वैसे वह देवगौड़ा को हम लोगों से दूर ले गए। वह सिर्फ वोक्कालिगा के लिए सोचते हैं, उनकी ही राजनीति करते हैं। कोई भी दलित उनके सामने बैठ नहीं सकता है। दलितों के बीच होने पर सिर्फ रेवन्ना परिवार के लिए ही कुर्सी होती है जबकि बाकी सबको खड़ा रहना पड़ता है।

अपना अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रहे धर्मावरम के बुनकरों को नई सरकार से है काफी उम्मीद

धर्मावरम (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश की रेशम नगरी के रूप में प्रसिद्ध धर्मावरम के बुनकर अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं लेकिन विधानसभा चुनाव से उनमें उम्मीद जगी है कि उनकी आवाज भी सत्ता के गलियारे में सुनी जाएगी। पारंपरिक रूप से हथकरघा से साड़ी बुनने में यहां के बुनकरों को महारत हासिल है और यह धर्मावरम के ही बुनकर थे जिन्होंने पहली बार 1918 में ऐसी साड़ी बुनी थी जिसे माचिस की डिब्बी में रखा जा सकता था। हाल ही में यहां के बुनकरों ने अयोध्या में नवनिर्मित रामलला के मंदिर के लिए 180 फीट लंबी और 16 किलोग्राम वजनी साड़ी बुनी थी।

धर्मावरम के बुनकरों को शानदार डिजाइन और बेहतर गुणवत्ता की साड़ी बुनने के लिए जाना जाता है और इसलिए उनकी बुनी साड़ियों की तुलना तमिलनाडु के कांचीपुरम में बुनी जाने वाली प्रतिष्ठित कांजीवरम साड़ियों से की जाती है। धर्मावरम में एक समय हथकरघा उद्योग फल-फूल रहा था जो अब कई समस्याओं का सामना कर रहा है जिनमें 'पावरलूम' के आने की वजह से सस्ते वैकल्पिक कपड़ों की आमद शामिल है। इस समस्या को बुनकरों की कमी और विकराल बना देती है क्योंकि नयी पीढ़ी अन्य स्थानों पर बेहतर अवसरों की तलाश में जा रही है।

यहां बाकी बचे बुनकर कच्चे माल की कीमतों में हुई बढ़ोतरी और सरकार की कम होती मदद के बाद अपने पेशे को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कोटापेटा कॉलोनी में रहने वाले 50 वर्षीय बुनकर के आदिनारायण ने कहा, ''हमारे लिए अपनी कला को बचाए रखना मुश्किल होता जा रहा है।'' उन्होंने बताया, ''राज्य सरकार ने 24 हजार रुपये की सलाना सब्सिडी बंद कर दी है जिसकी मदद से हम रेशम और जरी की कीमत में वृद्धि का मुकाबला करते थे।'' बुनकरों के मुताबिक रेशम की कीमत 2011 में 2600 रुपये प्रति किलोग्राम थी जो अब बढ़कर 5600 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है।

उन्होंने बताया कि यहां तक 2011 में जहां आधा किलोग्राम शुद्ध जरी 1200 रुपये में मिल जाता था अब उसकी कीमत पांच हजार रुपये हो गई है। आदिनारायण ने कहा कि जमानतदार नहीं होने की वजह से कच्चा माल खरीदने के लिए 'मुद्रा ऋण' योजना से 50 हजार रुपये भी प्राप्त करना मुश्किल हो रहा है। बुनकरों की मुश्किल बाजार में पावरलूम से बनी और धर्मावरम साड़ियों के नाम पर बेची जाने वाली सस्ती साड़ियों की बाढ़ ने भी बढ़ा दी है। एक अन्य बुनकर के. शंकरैया(50) ने भी कहा कि उन्हें दो साल से सब्सिडी नहीं मिली है। उन्होंने सरकार से नियमों को आसान बनाने की मांग की ताकि आसानी से ऋण प्राप्त की जा सके।

आगामी विधानसभा चुनाव से धर्मावरम के लोगों को हालात में सुधार होने की उम्मीद है। धर्मावरम में इस समय 48,000 बुनकर, 19,000 हथकरघा और 2,4820 साड़ी की दुकानें हैं। इस विधानसभा क्षेत्र से वाईएसआर कांग्रेस के मौजूदा विधायक के. वेंकट रामी रेड्डी दोबारा उम्मीदवार हैं जबकि कांग्रेस ने रंगना अश्वर्थ नारायण को मैदान में उतारा है। भाजपा की तरफ से यहां वाई. सत्य कुमार मैदान में हैं।

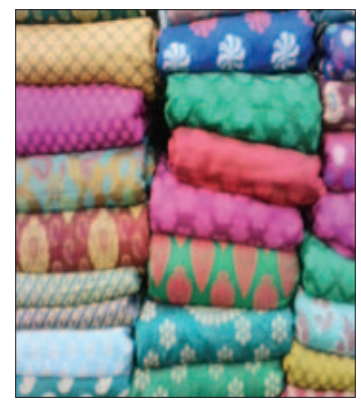

आंध्र प्रदेश की 175 सदस्यीय विधानसभा का चुनाव 13 मई को राज्य की 25 लोकसभा सीट के साथ होगा।

गोदरेज परिवार में कारोबार बंटवारे के बाद शेयरों का अधिग्रहण शुरू

- नादिर परिवार हासिल करेगा 20.84 फीसदी अतिरिक्त हिस्सेदारी

नई दिल्ली । गोदरेज परिवार ने अपने समूह के कारोबार के बंटवारे के बाद शेयरों का हस्तांतरण शुरू कर दिया है। स्टॉक एक्सचेंजों को दी गई जानकारी के अनुसार गोदरेज परिवार ने सूचीबद्ध कंपनियों में आदि गोदरेज, नादिर गोदरेज परिवार और जमशेद गोदरेज, स्मिता गोदरेज परिवार की हिस्सेदारी को अलग करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। गोदरेज इंडस्ट्रीज ने स्टॉक एक्सचेंजों को बताया कि शेयरों के अधिग्रहण की प्रक्रिया भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग से मंजूरी मिलने और 30 अप्रैल की सूचना के चार दिन बाद किसी भी समय पूरी करने का प्रस्ताव है। शेयरों का हस्तांतरण पारिवारिक निपटान समझौते के अनुसार किया जाएगा। आदि/नादिर परिवार गोदरेज इंडस्ट्रीज में 20.84 फीसदी अतिरिक्त हिस्सेदारी जमशेद/स्मिता परिवार से हासिल करेगा। इसके अलावा प्रवर्तक समूह की कंपनी अनामुडी रियल एस्टेट्स एलएलपी के साथ साझेदारी से गोदरेज परिवार के कुछ सदस्यों को हटाने की भी योजना है। प्रमोटर समूह की इस कंपनी की गोदरेज इंडस्ट्रीज में 0.57 फीसदी हिस्सेदारी है। इसके साथ ही आदि/नादिर परिवार की गोदरेज इंडस्ट्रीज में 52.01 फीसदी हिस्सेदारी हो जाएगी। गोदरेज इंडस्ट्रीज गोदरेज समूह की अन्य सूचीबद्ध इकाइयों की होल्डिंग कंपनी है। इसके अलावा आदि/नादिर परिवार प्रवर्तक समूह (प्रमोटर ग्रुप) की एक अन्य कंपनी आरकेएन एंटरप्राइजेज के साथ ब्लॉक डील के जरिये जीआईएल में 12.65 फीसदी अतिरिक्त हिस्सेदारी हासिल करना चाहता है। आदि/नादिर के चचेरे भाई रिशद नौरोजी आरकेएन एंटरप्राइजेज के निदेशक हैं। नौरोजी प्रवर्तक कंपनी अनामुडी रियल एस्टेट्स से हट जाएंगे और केवल आदि गोदरेज परिवार ही अनामुडी रिटायरल्स में साझेदार बना रहेगा। परिवार के मुखिया आदि गोदरेज की 0.18 फीसदी हिस्सेदारी पूरी प्रक्रिया के बाद भी ज्यों की त्यों बनी रहेगी।

न्यू स्विफ्ट के लिए प्री-बुकिंग शुरू

-इच्छुक ग्राहक 11,000 रुपये देकर करवा सकते हैं बुक

नई दिल्ली ।

मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने अपनी चौथी पीढ़ी की न्यू स्विफ्ट के लिए प्री-बुकिंग शुरू कर दी है। ग्राहक नई स्विफ्ट को 11,000 रुपये का भुगतान कर प्री-बुकिंग करा सकते हैं। इस नई स्विफ्ट को पहले से बेहतर डिजाइन और ड्राइविंग डायनामिक्स के साथ सिग्नेचर स्पोर्टी डिजाइन में पेश किया जाएगा। मारुति सुजुकी स्विफ्ट भारत की नंबर 1 प्रीमियम हैचबैक कार रही है। लॉन्च के बाद से इसकी 29 लाख से अधिक कारें बिक चुकी हैं। अपने बेशुमार प्रशंसकों के साथ, इस स्पोर्टी प्रीमियम हैचबैक ने स्पोर्टी और डायनेमिक ड्राइविंग पर्फोर्मेंस के मामले में अपने सेगमेंट में नए बेंचमार्क स्थापित किए हैं। अब एक नए अवतार में यह कार बाजार में लॉन्च होने के लिए पूरी तरह तैयार है। इस घोषणा पर मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के सीनियर एग्जिक्यूटिव ऑफीसर, मार्केटिंग एंड सेल्स, पार्थो बनर्जी ने कहा, ÷मारुति सुजुकी के लिए स्विफ्ट एक सबसे प्रतिष्ठित ब्रांड रहा है। यह एक ऐसा ब्रांड है जिसने बदलते समय के साथ ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए अपने में बड़े बदलाव किए हैं। 29 लाख ग्राहकों के साथ इसका मजबूत आधार और बीते वक्त में जीते गए विभिन्न पुरस्कार और सम्मान इस बात का प्रमाण हैं कि यह लोकप्रिय स्विफ्ट किस प्रकार लगातार बाजार में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है।÷ उन्होंने बताया कि न्यू स्विफ्ट को स्पोर्टी डीएनए के साथ पेश किया गया है। नई जनरेशन स्विफ्ट के साथ कंपनी का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर भी है।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं

नई दिल्ली ।

देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में शुक्रवार को कोई बदलाव नहीं देखा जा रहा है। देश के अलग-अलग राज्यों में पेट्रोल-डीजल की कीमतें भी अलग-अलग होती हैं। यह इसलिए क्योंकि पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा गया है। ईंधन पर राज्य सरकारें अपने मुताबिक टैक्स यानी वैट और अन्य कर लगाती हैं। राजधानी दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.76 रुपये और डीजल की कीमत 87.66 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.19 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.13 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.93 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.74 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.73 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.32 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। बेंगलुरु में पेट्रोल 99.82 रुपये प्रति लीटर और डीजल 85.92 रुपये प्रति लीटर है। नोएडा में पेट्रोल 94.81 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.94 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्राम में पेट्रोल 95.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.03 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.22 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.38 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.39 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63 रुपये प्रति लीटर, जयपुर में पेट्रोल 104.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 105.16 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.03 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 94.63 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर है।

एप्पल ने भारत में दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की: टिम कुक

वाशिंगटन ।

एप्पल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) टिम कुक ने कहा कि कंपनी ने भारत में मजबूत दोहरे अंक में वृद्धि दर्ज की है और मार्च तिमाही में नया राजस्व रिकॉर्ड बनाया है। कुक ने कहा कि भारतीय बाजार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एप्पल, डेवलपर से लेकर बाजार तथा परिचालन तक पूरे परिवेश तंत्र पर काम कर रहा है और वह वृद्धि आंकड़ों से बेहद खुश है। उन्होंने टेक कंपनी की दूसरी तिमाही की आय में भारत के योगदान पर कहा कि हमने मजबूत दोहरे अंक की वृद्धि दर्ज की। हम इससे बेहद खुश हैं। यह हमारे लिए मार्च तिमाही का नया राजस्व रिकॉर्ड है। क्यूपर्टिनो स्थित आईफोन निर्माता ने एक दर्जन से अधिक देशों और क्षेत्रों में रिकॉर्ड राजस्व दर्ज किए हैं। इनमें मार्च तिमाही के भारत, लैटिन अमेरिका और पश्चिम एशिया के साथ-साथ कनाडा, स्पेन और तुर्किये में दर्ज रिकॉर्ड राजस्व शामिल हैं। एप्पल के भारतीय प्रदर्शन पर कुक ने कहा कि कंपनी के परिचालन संबंधी कार्य और विभिन्न पहलों के साथ-साथ बाजार में प्रवेश की योजना जारी है। उन्होंने कहा कि हमने पिछले वर्ष कुछ स्टोर खोले हैं और हमें वहां अपार संभावनाएं नजर आ रही हैं। मार्च में समाप्त वित्त वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही के लिए अपने वित्तीय परिणामों

की घोषणा करते हुए एप्पल ने कहा कि उसने तिमाही में 90.8 अरब अमरीकी डॉलर का राजस्व दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में चार प्रतिशत कम है। एप्पल एक अक्टूबर से 28 सितंबर तक के वित्त वर्ष का अनुसरण करता है।

डाबर इंडिया का कंसोलिडेटेड नेट मुनाफा 16.5 फीसदी बढ़ा

मुंबई ।

भारत की दिग्गज एफएमसीजी सेक्टर की कंपनी डाबर इंडिया ने वित्त वर्ष 24 की अंतिम तिमाही के लिए रिजल्ट्स जारी किए हैं। कंपनी ने गुरुवार को बताया कि मार्च तिमाही में उसका कंसोलिडेटेड नेट मुनाफा 16.5 फीसदी बढ़कर 341.22 करोड़ रुपये हो गया है। पिछले साल की समान तिमाही में कंपनी ने 292.76 करोड़ रुपये का नेट मुनाफा दर्ज किया था। अगर पूरे वित्त वर्ष की बात करे तब वित्तीय साल 24 में कंपनी का नेट मुनाफा 1811.31 करोड़ रुपये रहा, जो कि पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले 6.46 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की है। कंपनी ने वित्तीय साल 23 में 1701.33 करोड़ का नेट मुनाफा दर्ज किया था। डाबर इंडिया ने बताया कि चौथी तिमाही वित्तीय साल 24 में उसका टोटल रवेन्यू सालाना आधार पर 5.11 फीसदी बढ़कर 2,814.64 करोड़ हो गया। पिछले साल की समान तिमाही (चौथी तिमाही वित्तीय साल 23) में कंपनी ने 2,677.80 करोड़ रुपये का रेवेन्यू दर्ज किया था। वित्त वर्ष 24 में रोजाना यूज के सामान बनाने वाली दिग्गज कंपनी ने 12404.01 करोड़ रुपये का ऑपरेशन से रेवेन्यू दर्ज किया, जो वित्तीय साल 23 के 11529.89 करोड़ रुपये के मुकाबले 7.58 फीसदी ज्यादा है। 31 मार्च, 2024 को समाप्त तिमाही के लिए कंपनी ने लाभांश (डिविडेंड) का भी ऐलान किया है। बोर्ड की तरफ से 1 रुपये की फेस वैल्यू पर 2.75 रुपये प्रति शेयर के डिविडेंड देने को मंजूरी दे दी है। अगर शेय,रहोल्डर्स की तरफ से मंजूरी मिल जाती है तो डिविडेंड की यह रकम निवेशकों के डीमैट

अकाउंट में क्रेडिट कर दी जाएगी। वित्त वर्ष 24 की चौथी तिमाही के दौरान कंपनी ने 2943.40 करोड़ रुपये की कुल आय दर्ज की, जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह 2798.52 करोड़ रुपये थी। इस लिहाज से कंपनी की कुल आय में भी 5.17 फीसदी का इजाफा हुआ है। इस तरह डाबर इंडिया के एबिटा मार्जिन में भी 1.30 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली है। जनवरी-मार्च 2024 तिमाही में कंपनी का एबिटा मार्जिन 16.6 फीसदी दर्ज किया। वहीं, इसका एबिटा 14 फीसदी बढ़कर 467 करोड़ रुपये हो गया है।

दो हजार के 97.76 फीसदी नोट वापस आए: आरबीआई

नई दिल्ली । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कहा कि बंद किए गए 2000 रुपये के 97.76 प्रतिशत नोट बैंकिंग प्रणाली में वापस आ गए हैं। केंद्रीय बैंक ने बताया कि सिर्फ 7,961 करोड़ रुपये के नोट अभी लोगों के पास हैं। आरबीआई ने बयान में कहा कि 19 मई, 2023 को 2000 रुपये के नोट को वापस लेने की घोषणा की गई थी। इस दिन के अंत में बाजार में मौजूद 2000 रुपये के नोटों का मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपये था। अब 30 अप्रैल, 2024 को बाजार में सिर्फ 7,961 करोड़ रुपये के नोट बाजार में हैं। बैंक ने कहा` कि इस प्रकार, 2000 रुपये के 97.76 प्रतिशत नोट वापस आ चुके हैं। हालांकि, 2000 रुपये का नोट वैध है। लोग देशभर में आरबीआई के 19 कार्यालयों पर 2000 रुपये के नोट जमा कर सकते हैं या उन्हें अन्य नोट से बदल सकते हैं। जनता 2000 के नोट भारतीय डाक के माध्यम से भी आरबीआई के किसी भी कार्यालय में भेजकर उनके बराबर मूल्य की राशि अपने बैंक खातों में जमा करा सकती है। आरबीआई द्वारा नवंबर, 2016 में 1000 रुपये और 500 रुपये के नोट बंद करने के बाद 2000 रुपये के नोट जारी किए गए थे।

चावल-मसालों और डेयरी सहित अन्य उत्पादों की भी होगी जांच

नई दिल्ली । एमडीएच और एवरेस्ट मसालों के बाद खाद्य नियामक एफएसएसएआई ने घरेलू बाजार में बेचे जाने वाले फोर्टिफाइड चावल, डेयरी उत्पादों व मसालों जैसे अन्य खाद्य पदार्थों की जांच शुरू करने की योजना बनाई है। फल व सब्जियों, मछली उत्पादों में साल्मोनेला जैसे खाद्य पदार्थों की भी निगरानी की जा सकती है। सूत्रों के मुताबिक, भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) मसाला, जड़ी-बूटियां, दूध और दूध से बने उत्पादों को भी जांच के दायरे में लाएगा। सिंगापुर और हांगकांग की गुणवत्ता संबंधी चिंताओं को देखते हुए एफएसएसएआई पहले से ही एमडीएच और एवरेस्ट सहित सभी ब्रांडों के मसालों के नमूने ले रहा है। सभी मसालों के नमूने इसलिए लिए जा रहे हैं, ताकि यह जांचा जा सके कि वे एफएसएसएआई मानदंडों को पूरा करते हैं या नहीं। पिछले हफ्ते एफएसएसएआई ने कहा था कि वह नेस्ले के सेरेलैक के नमूने एकत्र करने की प्रक्रिया में है। दावा है कि कंपनी उत्पाद में ज्यादा चीनी का उपयोग कर रही है। पिछले कुछ वर्षों में विश्लेषण किए गए नमूनों की संख्या 2020-21 में 1,07,829 से बढ़कर 2023-24 में 4,51,000 से अधिक हो गई है। इस आधार पर तीन गुना ज्यादा नमून लिए गए हैं। 2020-21 में 1,07,829 नमूने लिए गए। 2021-22 में 1,44,345 नमूनों का विश्लेषण किया गया। 2022-23 में 1,77,511 नमूनों का विश्लेषण किया गया। पिछले वित्त वर्ष में 4,51,296 नमूने लिए गए।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

सेंसेक्स 733 अंक , निफ्टी 172 अंक नीचे आया

मुम्बई ।

शेयर बाजार शुक्रवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों से बाजार की तेज शुरुआत हुई पर कुछ समय बाद ही दिग्गज कंपनियों के शेयरों में बिकवाली हावी होने से बाजार नीचे आने लगा। इसके बाद ये सिलसिल बाजार बंद होने तक चला। आज कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक और लार्सन एंड टुब्रो के शेयरों में जमकर बिकवाली हुई। आज इंट्रा-डे कारोबार के दौरान बीएसई सेंसेक्स 1,143 अंक नीचे आकर 73,468 के निचले स्तर पर पहुंच गया, जबकि निफ्टी-50 22,350 अंक से नीचे आ गया। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 732.96 अंक करीब 0.98 फीसदी टूटकर 73,878.15 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में आज 73,467.73 और 75,095.18 के बीच कारोबार हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 172.35 अंक तकरीबन 0.76 फीसदी नीचे आया। निफ्टी दिन के अंत में 22,475.85 अंक पर बंद हुआ। इसमें आज 22,348.05 और 22,794.70 के बीच कारोबार हुआ। दिग्गज कंपनियों में बिकवाली के दबाव में इक्विटी बेंचमार्क सूचकांकों में भी भारी गिरावट आई। वहीं शुरुआती कारोबार में बेंचमार्क इंडेक्स रिकॉर्ड हाई पर थे। यह दूसरी बार है जब निफ्टी 22,700 के स्तर को पार करने के बाद तेजी से नीचे आया है। ऐसे में बाजार जानकारों का मानना है कि निफ्टी आने वाले समय में सीमित दायरे में कारोबार करेगा। विदेशी संस्थागत निवेशकों के शेयर बेचने से भी बाजार पर दबाव आया। मार्च में ठहराव के बाद, विदेशी संस्थागत निवेशकों ने अप्रैल में घरेलू इक्विटी से 6,300 करोड़ रुपये निकाले। मई के पहले कारोबारी सत्र में भी निवेशकों ने 964 करोड़ रुपये के शुद्ध शेयर बेचे। वहीं गत दिवस बाजार मामूली बढ़त पर बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह वै श्विक बाजारों से ` मिले अच्छे रुझानों की वजह से बाजार की शुरुआत बढ़त के साथ हुई। बीएसई सेंसेक्स 400 अंक बढ़कर 75,070 पर और एनएसई निफ्टी 50 135 अंक गिरकर 22,783 पर पहुंच गया। बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, एमएंडएम, रिलायंस,

आईसीआईसीआई बैंक, एनटीपीसी, आरआईएल ने सेंसेक्स पर बढ़त हासिल की, जबकि पॉवेग्रिड, भारती एयरटेल और टेक महिंद्रा लाल निशान में कारोबार करते दिखे। दूसरी ओर, एनएसई निफ्टी 50 पर ओएनजीसी, बीपीसीएल और बजाज ऑटो टॉप गेनर्स रहे, जबकि कोल इंडिया और हेरोमोटोकॉर्प आज के टॉप लूजर्स रहे। बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांकों में क्रमशः 0.54 और 0.29 फीसदी की बढ़त के साथ व्यापक बाजार मजबूत खुले। निफ्टी फाइनेंशियल सर्विसेज, निफ्टी रियल्टी, निफ्टी ऑयल एंड गैस, निफ्टी बैंक और निफ्टी मेटल एनएसई पर सेक्टोरल बढ़त का नेतृत्व करते दिखे।

भारत के साथ व्यापार करना चाहते हैं अफगानिस्तान, कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान

-पाकिस्तान के रास्ते नहीं, नया ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर बनाएंगे

काबुल।

अफगानिस्तान ने दो मध्य एशियाई देशों कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के साथ पिछले हफ्ते एक त्रिपक्षीय बैठक आयोजित की। इस बैठक का मुख्य मुद्दा भारत के साथ व्यापार करने के लिए नए परिवहन गलियारे पर बातचीत करना था। बैठक में तुर्कमेनिस्तान और कजाकिस्तान के प्रतिनिधियों ने अफगानिस्तान में पारगमन और परिवहन बुनियादी ढांचे को बढ़ाने पर सहमति जताई है। बैठक में कजाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री सेरिक झुमंगारिन आगामी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट इनिशिएटिव पर प्रकाश डालते हुए ट्रैफिक फ्लो की गणना और पुर्नसंरचना की जरुरतों पर बल दिया। तीन पक्षों ने यह भी विचार कि वह भारत से व्यापार करना चाहते है।

ईरान के चाबहार बंदरगाह के जरिए ये संभव हो सकता है। उन्होंने कहा कि यह सब तुर्कमेनिस्तान के बुनियादी ढांचे और बेइनु-अक्टौ-बोलाशाक में हमारे बुनियादी ढांचे को विकसित करने में मदद करेगा। तीनों देशों ने यह माना कि अंतरराष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारे की पूर्वी शाखा ने रूस और बेलारूस से कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के जरिए से अफगानिस्तान, भारत और पश्चिम एशिया तक माल पहुंचाने के लिए एक मार्ग बनने के लिए नई प्रेरणा मिली है। वे आपस में पहले से सहमत समझौतों को लागू करने के लिए एक कार्य समूह स्थापित करने पर सहमत हुए।

कजाकिस्तान-तुर्कमेनिस्तान मार्ग आईएनएसटीसी की शाखाओं में से एक है। अफगानिस्तान, कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान को भारत के साथ सड़के के रास्ते व्यापार करने के लिए पाकिस्तान की जरूरत है। पाकिस्तान ने हमेशा से अपनी जमीन से होने वाले व्यापार को बाधित करने का प्रयास किया है। इसका ताजा उदाहरण 2022 की शुरुआत में भारत से अफगानिस्तान को भेजे गए खाद्यानों के दौरान देखने को मिला था। लेकिन, अब ईरान के चाबहार बंदरगाह वाला रास्ता खुलने से मध्य एशियाई देशों को पाकिस्तान के रास्ते जाने की कोई जरूरत नहीं होती।

बिड़ला एस्टेट्स ने मुंबई में 72 फ्लैट बेचकर 2,500 करोड़ कमाए

मुंबई । आदित्य बिड़ला समूह की कंपनी बिड़ला एस्टेट्स ने कहा कि उसने मुंबई स्थित अपनी लक्जरी आवासीय परियोजना में 72 फ्लैटों की बिक्री कर 2,500 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया है। कंपनी ने कहा कि ये फ्लैट आवासीय टावर सिलास में मौजूद हैं जो कि मध्य मुंबई में स्थित लक्जरी आवासीय परियोजना बिड़ला नियारा का हिस्सा है। सूत्रों के मुताबिक, इस टावर में कुल 148 फ्लैट हैं जिनमें से 72 अपार्टमेंट की बिक्री हो चुकी है। एक अपार्टमेंट की कीमत 30-45 करोड़ रुपये के बीच रही है। कंपनी के एक व रिष्ठ अ धिकारी ने कहा कि बिड़ला नियारा का सिलास टावर मुंबई में लक्जरी आवासीय क्षेत्र में नए मानक तय करेगा।

हीरो ने अप्रैल में बेचे 5.33 लाख वाहन

मुंबई । हीरो मोटोकॉर्प ने कहा है कि उन्होंने अप्रैल 2024 में 5,33,585 से अधिक यूनिट बेचकर नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत की है। यह अप्रैल 2023 की तुलना में 34.7 प्रतिशत की वृद्धि को दिखाता है, जब निर्माता ने 3.96 लाख यूनिट बेचे थे और मार्च 2024 की बिक्री के 9 प्रतिशत की क्रमिक वृद्धि दर्ज की गई थी, जो 4,90,415 यूनिट थी। देशी दोपहिया निर्माता की मोटरसाइकिलों की बिक्री अप्रैल 2024 में 4,96,542 यूनिट और अप्रैल 2023 में 3,68,830 यूनिट रही। स्कूटरों की बिक्री अप्रैल 2024 में 37,043 यूनिट और अप्रैल 2023 में 27,277 यूनिट रही। कुल घरेलू बिक्री अप्रैल 2024 और अप्रैल 2023 के लिए क्रमशः 5,13,296 यूनिट और 3,86,184 यूनिट थी।

एप्पल करेगा बड़ा बायबेक, फिर खरीदेगा 10 अरब डॉलर के शेयर

नई दिल्ली । विनिर्माता कंपनी एप्पल के स्टॉक में शानदार तेजी देखने को मिली है। दरअसल, कंपनी ने 10 बिलियन डॉलर के शेयर को बॉयबैक करने की घोषणा की। कंपनी के इस ऐलान के बाद निवेशक कंपनी के शेयर खरीदने में जुट गई। माना जा रहा है कि यूएस के इतिहास में पहली बार कोई कंपनी ने इतने ज्यादा स्टॉक को वापस खरीद रही है। एम-कैप के हिसाब से एप्पल दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी मानी जाती है। वर्ष 2018 में कंपनी ने 100 बिलियन डॉलर के शेयर को खरीदा था। अब कंपनी ने अपने पिछले रिकॉर्ड को पार करने वाली है। अगर अमेरिकी के इतिहास में टॉप-10 शेयर के बायबैक को देखा जाए तो उसमं से 6 एप्पल और 3 गूगल है।कंपनी ने शेयर बायबैक के साथ 25 सेंट के डिविडेंड का भी ऐलान किया है। कंपनी के सीईओ टिम कुक ने बताया कि एप्पल को इस तिमाही भी मुनाफा हुआ है, जिसके बाद कंपनी ने शेयरहोल्डर्स को लाभांश देने का फैसला लिया।

एचसीएलटेक और सिस्को की परवेसिव वायरलेस मोबिलिटी सेवा शुरू

नई दिल्ली । आईटी सेवा कंपनी एचसीएल टेक्नोलॉजीज और नेटवर्क दिग्गज सिस्को ने परवेसिव वायरलेस मोबिलिटी ऐज़-ए-सर्विस शुरू करने की घोषणा की है। यह विभिन्न उद्योगों के लिए सुरक्षित और निर्बाध उद्यम-व्यापी संपर्क स्थापित करेगी। खबर के अनुसार यह सेवा एचसीएलटेक की प्रबंधित नेटवर्क सेवा विशेषज्ञता को सिस्को की अल्ट्रा-रिलायबल वायरलेस बैकहॉल (यूआरडब्ल्यूबी) प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ती है ताकि नेटवर्क का एक ऐसा बुनियादी ढांचा तैयार किया जा सके जो मजबूत संपर्क प्रदान करे। एचसीएलटेक और सिस्को ने व्यापक वायरलेस मोबिलिटी को सेवा के रूप में पेश किया है। यह विविध उद्योगों के लिए सुरक्षित और निर्बाध उद्यम-व्यापी संपर्क स्थापित करेगी।

बजाज फाइनेंस के शेयरों में तेजी

नई दिल्ली । बजाज फाइनेंस के शेयर में शुक्रवार के कारोबारी सत्र में तेजी देखने को मिल रही है। सुबह शुरुआत में कंपनी के स्टॉक 6 फीसदी से ज्यादा चढ़कर 7,349.20 रुपये प्रति शेयर पर पहुंच गया था। बजाज फाइनेंस के शेयर 4.91 फीसदी की उछाल के साथ 7,220.65 रुपये प्रति शेयर पर कारोबार कर रहा था। शेयर में आई तेजी के बाद बजाज फाइनेंस का एम-कैप 445,689 करोड़ रुपये हो गया। नवबंर 2023 में आरबीआई ने बजाज फाइनेंस के ईकॉम और इंस्टा ईएमआई कार्ड के जरिये लोन की मंजूरी पर पाबंदी लगा दी थी। केंद्रीय बैंक ने डिजिटल लोन के प्रावधानों का पालन न करने की वजह से यह कदम उठाया था। रबीआई के इस फैसले से चौथी तिमाही में बजाज फाइनेंस के मुनाफे में 4 फीसदी की गिरावट आई। इसके अलावा कंपनी के शेयर भी 5 फीसदी तक फिसल गए।

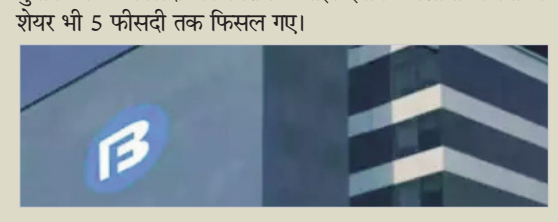

आईपीएल में आज होगा आरसीबी और गुजरात का मुकाबला

बेंगलुरु (एजेंसी)। आईपीएल में शनिवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) की टीम गुजरात टाइटंस के खिलाफ उतरेगी। आरसीबी को इस मैच में अपने घरेलू मैदान का लाभ मिलने की उम्मीदें रहेंगी। ये दोनो टीम अंकतालिका में काफी पीछे हैं। आरसीबी दस मैचों में छह अंक लेकर तालिका में सबसे नीचे है जबकि टाइटंस के दस मैचों में आठ अंक हैं और वह आठवें स्थान पर है। ऐसे में प्लेऑफ के लिए अपनी उम्मीदें बनाये रखने के लिए दोनो ही टीमों को ये मैच हर हाल में जीतना होगा।

इन दोनो ही टीमों की संभावना चेन्नई सुपर किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स को पिछले मैचों में मिली हार से बनी हैं। इन दोनों ही टीमों को अब हर मैच जीतने के साथ ही दूसरी टीमों के परिणामों पर भी आधारित रहना होगा। आरसीबी के लिए अब तक इस सत्र में अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने सबसे अधिक रन बनाये हैं। इस मैच में भी टीम को उनसे इसी प्रकार के प्रदर्शन की उम्मीदें रहेंगी। आरसीबी की ओर से विराट के अलावा कप्तान फाफ डु प्लेसी और रजत पाटीदार ने भी अच्छी बल्लेबाजी की है पर अन्य बल्लेबाजों ने निराश किया है। वहीं टीम के गेंदबाज भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं जिससे टीम अपने स्कोर का बचाव नहीं कर पायी है। ऐसे में तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज , यश दयाल, कर्ण शर्मा और स्वप्निल सिंह को अब अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। इन गेंदबाजों में इस मैच में गुजरात के बल्लेबाजों को बड़ा स्कोर बनाने से रोकना होगा। गुजरात के पास कप्तान शुभमन गिल , साई सुदर्शन और डेविड मिलर सहित कई अच्छे गेंदबाज हैं पर टीम को निरंतरता की कमी से लाभ नहीं मिला है। टीम अभी तक एक ईकाई के रूप में अच्छा नहीं कर पायी है। इसी कारण वह करीबी मुकाबले हारी है।

गुजरात के पास राशिद खान जैसा शानदार स्पिनर है पर वह भी अब तक प्रभावित नहीं कर पाये हैं। राशिद ने हालांकि अंतिम ओवरों में आक्रामक बल्लेबाजी की है। राशिद ने दस मैचों में आठ की इकॉनॉमी रेट से आठ विकेट लिये

हैं। पिछले साल उन्होंने 8 . 24 की इकॉनॉमी रेट से 27 विकेट लिये थे। उसके तेज गेंदबाज उमेश यादव और मोहित शर्मा ने विकेट लिए हैं पर काफी रन भी दिये हैं।

कुल मिलाकर देखा जाये तो ये मैच रोमांचक रहेगा। इसमें टॉस पर भी काफी कुछ परिणाम आधारित रहेगा। बल्लेबाजी पिच होने के कारण टॉस जीतने वाली टीम बड़ा स्कोर बनाना चाहेगी।

टीम

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर - फाफ डु प्लेसी (कप्तान), ग्लेन मैक्सवेल, विराट कोहली, रजत पाटीदार, अनुज रावत, दिनेश कार्तिक, सुयश प्रभुदेसाई, विल जैक्स, महिपाल लोमरोर, कर्ण शर्मा, मनोज भंडागे, मयंक डागर, विजयकुमार विशक, आकाश दीप। मोहम्मद सिराज, रीस टॉपले, हिमांशु शर्मा, राजन कुमार, कैमरून ग्रीन, अल्ज़ारी जोसेफ, यश दयाल, टॉम कुरेन, लॉकी फर्ग्यूसन, स्वप्निल सिंह, सौरव चौहान।

गुजरात टाइटंस- शुभमन गिल (कप्तान), डेविड मिलर, मैथ्यू वेड, रिद्धिमान साहा, रॉबिन मिंज, केन विलियमसन, अभिनव मंधार, बी साई सुदर्शन, दर्शन नालकंडे, विजय शंकर, अजमतुल्लाह उमरजई, शाहरुख खान, जयंत यादव, राहुल तेवतिया, कार्तिक त्यागी, शशांत मिश्रा, स्पेंसर जॉनसन, नूर अहमद, साई किशोर, उमेश यादव, राशिद खान, जोशुआ लिटिल, मोहित शर्मा और मानव सुतार।

कीस को हराकर इगा स्वियातेक मैड्रिड ओपन फाइनल में

मैड्रिड (एजेंसी)। इगा स्वियातेक ने मेडिसन कीस को सीधे सेटों में हराकर मैड्रिड ओपन के फाइनल में प्रवेश कर लिया जहां उनका सामना एरिना सबालेंका से होगा। शीर्ष वरीयता प्राप्त स्वियातेक ने कीस को 6.1, 6.3 से मात दी। अब वह सबालेंका से खेलेंगी जिन्होंने चौथी रैंकिंग वाली एलेना रिबाकिना को 1.6, 7.5, 7.6 से हराया है। पुरूष वर्ग में दानिल मेदवेदेव 31वीं रैंकिंग वाले जिरि लेहेका से पहला सेट 4.6 से हारने के बाद क्वार्टर फाइनल मैच से रिटायर हो गए। उन्हें दाहिने पैर में चोट लगी थी और उपचार भी लेना पड़ा। लेहेका का सामना अब 35वीं रैंकिंग वाले फेलिक्स आगर एलियास्सिमे से होगा।

विराट का अनुभव टी20 विश्वकप के लिए अहम रहेगा : अगरकर

-आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में है अंतर

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के मुख्य चयनकर्ता अजित अगरकर ने विराट कोहली की प्रशंसा करते हुए कहा है उनका अनुभव बहुमूल्य है और वह टी20 विश्व कप में हमारे लिए बेहद अहम हैं। अगरकर ने कहा कि इसी कारण हम आईपीएल में उनके स्ट्राइक रेट को लेकर विचार नहीं कर रहे क्योंकि हम जाने हैं कि वह शीर्ष स्तर के खिलाड़ी हैं।

विराट ने अब तक 10 पारियों में एक शतक और चार अर्धशतकों के साथ 500 रन बनाए हैं पर उनके 147 से कुछ अधिक का उनका स्ट्राइक रेट को कम बताया जा रहा है। वहीं अन्य बल्लेबाजों ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड का स्ट्राइक रेट 194 से अधिक हैं। इसके अलावा फिल सॉल्ट 180 से अधिक और सुनील नारायण 182 से अधिक हैं। अगरकर ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि हम इस पर चर्चा कर रहे हैं। वह आईपीएल में शानदार बल्लेबाजी कर रहे हैं इसलिए कोई चिंता की बात नहीं है।'

विराट का अनुभव बहुमूल्य है पर अगरकर का मानना है कि अगर बड़े स्कोर वाले मैच होते हैं तो बल्लेबाजी क्रम में पर्याप्त पावर हिटर हैं। अगरकर ने कहा कि आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अंतर है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अनुभव बहुत अहम होता है। अगरकर का सीधा कहना है कि विश्वकप कप का दबाव अलग होता है। इसलिए वह कोहली के स्ट्राइक रेट को लेकर चिंतित नहीं हैं। विराट कोहली के नाम टी20 वर्ल्ड कप में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड है

महिला क्रिकेट : भारत टेस्ट, वनडे और टी20 श्रृंखला के लिए दक्षिण अफ्रीका की करेंगी मेजबानी

मुम्बई (एजेंसी)। बेंगलुरू - भारत जून और जुलाई में 1 टेस्ट, 3 एकदिवसीय और 3 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों के लिए दक्षिण अफ्रीका महिला टीम की मेजबानी करेगा। कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) के एक अधिकारी ने बताया कि वनडे और टी20 मैच बेंगलुरु में खेले जाएंगे, जबकि टेस्ट मैच चेन्नई में खेला जाएगा।

वनडे मैच 16 जून से एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में होंगे, जबकि एकमात्र टेस्ट 28 जून से एमए चिदंबरम स्टेडियम में शुरू होगा। इसके बाद टीमें पांच, सात और नौ जुलाई को टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिए बेंगलुरु लौटेंगी। इस टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला की अहमियत इसलिए भी ज्यादा है क्योंकि सितंबर-अक्टूबर में बांग्लादेश में महिला टी20 विश्व कप खेला जाएगा।

सफेद गेंद प्रारूप की श्रृंखला मूल रूप से पिछले साल के आखिर में खेली जानी थी और यह आईसीसी भविष्य दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) का हिस्सा थे, लेकिन पिछले साल अक्टूबर और नवंबर के बीच भारत में आयोजित 50 ओवर के आईसीसी पुरुष विश्व कप के कारण उन्हें आगे बढ़ाना पड़ा। सीमित ओवरों की श्रृंखला में अब एक टेस्ट मैच को भी शामिल कर लिया है।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) और क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) पारंपरिक प्रारूप में महिला क्रिकेट को और अधिक प्रोत्साहन देने चाहता है। गौरतलब है कि भारत ने पिछले साल दिसंबर में मुंबई में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक-एक टेस्ट खेला था। भारत ने उन मैचों में इंग्लैंड को महिला टेस्ट क्रिकेट में सबसे बड़े 347 रनों से और ऑस्ट्रेलिया को 8 विकेट से हराया था।

पांड्या के चयन हो अगरकर ने सही बताया, उसका कोई विकल्प नहीं

मुंबई । बीसीसीआई चयनसमिति के प्रमुख अजित अगरकर ने आगामी टी20 विश्व कप क्रिकेट के लिए ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या के चयन को लेकर कहा कि हमारे पास उनका कोई विकल्प नहीं था। अगरकर के अनुसार कोई अन्य खिलाड़ी वो भूमिका नहीं निभा सकता जो पंड्या निभाते हैं। अगरकर के अनुसार हार्दिक के होने से टीम में संतुलन आता हैं, साथ ही वह जिस प्रकार खेलता है वैसे कोई नहीं खेल सकता। साथ ही कहा कि टीम चयन में आईपीएल प्रदर्शन की भूमिका नहीं रही है। उन्होंने ये बात इसलिए कही कि पंड्या आईपीएल में गेंदबाजी और बल्लेबाजी में विफल रहे हैं। इसी कारण कई लोगों ने हार्दिक को टी20 विश्व कप टीम का उपकप्तान बनाए जाने पर सवाल उठाये थे। इसके अलावा पंड्या की फिटनेस भी अच्छी नहीं रही है। अगरकर ने कहा कि उपकप्तानी को लेकर कोई बात नहीं हुई। उसने अभी तक मुंबई इंडियंस के लिए सारे मैच खेले हैं। वहीं टी20 विश्वकप में अभी समय है। वह फिट है तो वह जो कर सकता है, उसका कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा कि वह चोट के बाद लंबे समय में वापसी कर रहा है। हमें उम्मीद है कि वह अपनी फिटनेस पर काम कर रहा है। गेंदबाजी करने पर वह रोहित को काफी विकल्प और संतुलन दे सकता है। अगरकर ने कहा कि जब तक वह फिट रहता है तो हम जानते हैं कि वह क्या कर सकता है। वह टीम को कितना संतुलन देता है। मुझे नहीं लगता कि इस समय एक क्रिकेटर के तौर पर वह जो कर सकता है, उसका कोई विकल्प है, खासकर जब बात उसके गेंदबाजी करने के तरीके की हो। उन्होंने कहा कि वास्तव में अपने संतुलन के साथ वह रोहित को अलग-अलग संयोजनों में खेलने का विकल्प देता है, इसलिए हमारे लिए उसकी फिटनेस अहम है और अब तक किस्मत से, वह एक खिलाड़ी के तौर पर ठीक-ठाक प्रदर्शन कर रहा है।

रुतुराज को टी20 विश्व कप के लिए शामिल नहीं करने पर भड़के श्रीकांत

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान के श्रीकांत ने बल्लेबाज रुतुराज गायकवाड़ को टी20 विश्व कप के लिए शामिल नहीं किये जाने पर नाराजगी जतायी है। श्रीकांत ने इस मामले में भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) चयनसमिति को भी आड़े हाथों लिया है। श्रीकांत ने कहा कि टीम चुनने में बहुत ज्यादा पक्षपात हुआ है। श्रीकांत ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि रुतुराज को इस टीम में जगह मिलनी चाहिये थी। उन्होंने 17 टी20ई पारियों में 500 से अधिक रन बनाए। इसके अलावा उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शतक भी बनाया था। वहीं टीम में रिजर्व के तौर पर शामिल शुभमन गिल फार्म में नहीं हैं, इसके बाद भी उन्हें जगह दी गयी। साथ ही कहा कि शुभमन अगर असफल भी होते हैं तो भी उन्हें अवसर मिलता है। टेस्ट, एकदिवसीय और टी20 में असफल होने पर भी उन्हें जगह मिल जाती है। श्रीकांत ने आईपीएल के इस सत्र में रुतुराज के अच्छे प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने 10 पारियों में 500 से अधिक रन बनाये हैं। इसके बाद भी उन्हें टी20 विश्व कप के लिए राष्ट्रीय टीम में नहीं है। श्रीकांत ने इसके साथ ही आक्रामक बल्लेबाज रिंकू सिंह को जगह ना मिलने पर नाराजगी जतायी है। उन्होंने कहा कि रिंकू कठिन हालातों में भी दबाव में नहीं आने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने अंतराष्ट्रीय क्रिकेट में भी प्रभावशाली प्रदर्शन किया है।

पीसीबी ने आईसीसी से कहा , चैंपियन्स ट्रॉफी में भारत के मुकाबले एक ही शहर में रखें

लाहौर(एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) अगले साल होने वाले चैंपियन्स ट्रॉफी में भारतीय टीम के क्वालीफाइंग दौर के मुकाबलों को एक ही जगह रखना चाहता। इसी कारण पीसीबी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से कहा है कि इन मुकाबलों को कराची, रावलपिंडी और लाहौर को में से किसी एक जगह पर रखा जाए। आईसीसी के महाप्रबंधक वसीम खान ने भी हाल ही में लाहौर का दौरा किया था जहां उन्होंने पीसीबी के शीर्ष अधिकारियों के साथ चैंपियन्स ट्रॉफी की तैयारियों पर बात की थी। तब पीसीबी ने उन्हें सलाह दी थी कि सुरक्षा कारणों से भारतीय टीम के यात्रा कार्यक्रम को कम से कम रखा जाए।'' ऐसे में वह क्वालीफाइंग दौर के मैच कराची में चाहता है।

भारत और पाक अभी केवल आईपीसी टूर्नामेंटों में खेल रहे हैं पर इसके बाद भी भारतीय टीम के पाक जाने की कोई संभावनाएं नजर नहीं आती हैं। इससे पहले एशिया कप में भी भारत ने सुरक्षा करणों से पाक जाने से इंकार कर दिया था। तब भारत के मुकाबले श्रीलंका में हुए थे। वहीं पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी के अनुसार इस बार किसी अन्य देश में मुकाबले नहीं रखे जाएंगे और सभी टीमों को पाक में ही खेलना होगा। पीसीबी ने आईसीसी ने कहा है कि वह भारतीय क्रिकेट बोर्ड पर चैम्पयंस ट्रॉफी में खेलने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल करे। पीसीबी के अनुसार उसने चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए अपनी ओर से तैयारियां शुरु कर दी हैं।

चेलसी से हारकर टोटेनहम की चैम्पियंस लीग की उम्मीदों को झटका

लंदन - चेलसी के हाथों 2.0 से मिली हार के साथ टोटेनहम की चैम्पियंस लीग फुटबॉल के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीदों को करारा झटका लगा। प्रीमियर लीग में टोटेनहम की यह 4 दिन में दूसरी हार थी। उसे आर्सनल ने रविवार को 3.2 से हराया था। इंग्लैंड को अगले सत्र में चैम्पियंस लीग में चार ही कोटा स्थान मिलेंगे। टोटेनहम तालिका में 5वें स्थान पर है और चौथे स्थान पर काबिज एस्टोन विला उससे 7 अंक आगे है।

शैफाली की शानदार पारी से भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने तीसरा टी20 जीता, सीरीज में 3-0 की बढ़त मिली

सिलहट (ईएमएस)। शैफाली वर्मा की अर्धशतकीय की सहायता से भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने तीसरे टी-20 मुकाबले में बांग्लादेश को सात विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम पांच मैच की टी20 सीरीज में 3-0 से आगे हो गयी है। इस मैच में जीत के लिए मिले 118 रनों के लक्ष्य का पीछा करने सलामी बल्लेबाज शेफाली और स्मृति ने तेजी से खेलते हुए पहले विकेट लिए 91 रन बनाये। शेफाली ने 38 गेंदों में आठ चौकों की सहायता से 51 रन जबकि मंधाना ने पांच चौके, एक छक्का लगाते हुए 47 रन बनाये। शेफाली ने इस मैच में अपना नौवां अर्धशतक पूरा किया। इन दोनो के आउट होने के बाद कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 6 और ऋचा घोष ने 8 रन बनाकर भारतीय टीम को जीत के लक्ष्य तक पहुंचाया। इस प्रकार भारतीय टीम ने 18.3 ओवर में ही तीन विकेट पर 121 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। इससे पहले आज भारतीय टीम ने टॉस जीतकर मेजबान टीम को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया। बांग्लादेश की टीम के लिए सलामी बल्लेबाज दिलारा अख्तर ने 39 और कप्तान निगार सुल्ताना ने 28 रन बनाये। इनके आउट होने के बाद अन्य बल्लेबाज एक के बाद एक आउट होते चले गये। इस प्रकार मेजबान टीम निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट पर 117 रन ही बना पायी। भारत की ओर से राधा यादव ने 22 रन देकर दो विकेट लिए जबकि रेणुका सिंह, पूजा वस्त्राकर और श्रेयंका पाटिल ने एक-एक विकेट लिया।

अब बॉलीवुड में नजर आयेंगे रसेल

मुम्बई । अपनी आक्रमक बल्लेबाजी के लिए मशहूर वेस्टइंडीज के क्रिकेटर आंद्रे रसेल अब बॉलीवुड में भी कदम रख रहे हैं। रसेल पिछले कई साल से भारत में आईपीएल खेल रहे हैं। रसेल के प्रशंसक भी भारत में काफी हैं, इस कारण भी उन्हें भारत में रहना पसंद है। रसेल का कहना है कि उन्हें भारत में बहुत प्यार मिलता है। अब वह अभिनेत्री अविका गौर के साथ एक गाने में डांस करते दिखेंगे। ये गाना 9 मई को रिलीज होगा। रसेल ने कुछ दिन पहले ही इस गाने की शूटिंग का पहला शॉट देने की एक तस्वीर भी साझा की थी। रसेल शांता स्वभाव के हैं और आईपीएल में केकेआर की ओर से खेल रहे हैं। हाल ही में उन्होंने अपना जन्मदिन भी भारत में ही मनाया था। रसेल ने अबतक 30 से ज्यादा टीमों की ओर से लीग क्रिकेट खेला है। इस सत्र में वह आईपीएल में केकेआर की तरफ से खेलते हुए रसेल को प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है वह 9 मैचों में केवल 179 रन ही बना पाये हैं। वहीं उन्होंने 9 विकेट लिए हैं।

रोहित ने चार स्पिनरों के चयन पर कहा, हालातों के अनुसार लिया फैसला

-आईपीएल प्रदर्शन को नहीं दिया अधिक महत्व

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने आगामी टी20 विश्व कप क्रिकेट के लिए टीम में चार स्पिनरों के चयन को लेकर कहा कि इसमें आईपीएल प्रदर्शन को अधिक महत्व नहीं दिया गया। विश्वकप के लिए भारतीय टीम में शामिल चार स्पिनरों में कुलदीप यादव और युजवेंद्र चहल कलाई के स्पिनर हैं जबकि अक्षर पटेल और रविंद्र जडेजा ऑलराउंडर हैं।

रोहित ने चार स्पिनरों को लेकर कहा कि हमने वेस्टइंडीज में काफी क्रिकेट खेली है। वहां के हालातों के अनुसार हमें चार स्पिनर चाहिये थे जिनमें से दो आक्रामक स्पिनर कुलदीप और चहल का रखा गया है जबकि दो स्पिन ऑलराउंडर अक्षर और जडेजा। इससे टीम को संतुलन मिला है। साथ ही कहा कि विरोधी टीम को देखकर हम अंतिम ग्यारह का चयन करेंगे। रोहित ने कहा कि बीच के ओवरों में टीम की जरूरतों का भी ध्यान रखा गया है।

वहीं शिवम दुबे को शामिल करने और रिंकू सिंह की उपेक्षा पर रोहित ने कहा कि हमें यह समझना होगा कि पिचें और विरोधी टीम संयोजन कैसा होगा। हमें बीच के ओवरों में आक्रामक बल्लेबाज की जरूरत है। शीर्षक्रम ठीक खेल रहा है। दूसरे विकल्प भी हैं। हमने शिवम को आईपीएल और उससे पहले कुछ मैचों में उसके प्रदर्शन के आधार पर रखा है पर इसकी कोई गारंटी नहीं है कि अंतिम एकादश कैसी होगी। उन्होंने कहा कि 70 से 80 फीसदी टीम के खिलाड़ियों के नाम आईपीएल से पहले ही तय कर लिए गये थे। उन्होंने कहा कि आप अंतिम एकादश को ध्यान में रखकर ही उसके हिसाब से सोचते हैं। अंतिम 15 के बारे में बात आईपीएल से काफी पहले ही शुरू हो गई थी। कुछ स्थानों को लेकर हमने आईपीएल में विचार किया। आईपीएल में प्रदर्शन हर दिन बदलता है। कोई भी आकर शतक बना सकता है या पांच विकेट ले सकता है। हमें आईपीएल से पहले ही अपनी 70 से 80 फीसदी टीम पता थी।

रोहित ने कहा कि हरफनमौला दुबे और हार्दिक पंड्या को अपनी भूमिका पूरी तरह से निभानी होगी। उन्होंने कहा कि मैं उनसे वही करने की अपेक्षा करता हूं जो वे आईपीएल में कर रहे हैं। शिवम ने आईपीएल में एक भी ओवर नहीं डाला है पर वह अनुभवी क्रिकेटर है जो लाल गेंद से क्रिकेट में काफी ओवर डालता है। उन्होंने कहा कि कौशल वाले गेंदबाजों के लिए टी20 प्रारूप में सफल होने की संभावना अच्छी होती है। अगर हमें जरूरत हुई तो शिवम को कुछ ओवर डालने पड़ेंगे। इसी तरह से हार्दिक को भी जो आईपीएल में नियमित गेंदबाजी कर रहा है। उसने अभी तक सारे मैच खेले हैं ऐसे में

फिटनेस का कोई मामला नहीं है। उन्होंने कहा कि आफ स्पिनर को नहीं चुनने का कारण यह भी था कि वॉशिंगटन सुंदर, आर अश्विन पिछले काफी समय से नहीं खेला जबकि अक्षर अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, इसलिए उनको ही शामिल किया।

ओलंपिक के लिए सिंधु, प्रणय सहित सात भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों को मिला टिकट

नई दिल्ली । आगामी पेरिस ओलंपिक के लिए तक सात बैडमिंटन खिलाड़ियों को क्वालीफाइंग टिकट मिला है। इसमें पीवी सिंधु, एचएस प्रणय और लक्ष्य सेन जैसे शीर्ष खिलाड़ी शामिल हैं। सिंधु , प्रणय और लक्ष्य ने पहले ही ओलंपिक में जगह पक्की कर ली थी पर अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन महासंघ ने तय कट ऑफ तारीख के बाद आधिकारिक तौर पर अब इनके क्वालीफाई करने की पुष्टि की है। ओलंपिक खेल के नियमों के अनुसार कट ऑफ तारीख पर ही क्वालिफिकेशन रैंकिंग के आधार पर पुरुष और महिला एकल से शीर्ष 16 खिलाड़ी ओलंपिक के लिए क्वॉलिफाई करते हैं। इसमें सिंधु 12वें स्थान पर रहीं जबकि पुरुष एकल में प्रणय और लक्ष्य क्रमशः नौवें और 13वें स्थान पर रहे।

यूएई में फिर बारिश-आंधी, स्कूल-दफ्तर बंद, उड़ानें कैंसिल

अबू धाबी। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में बारिश ने एक बार फिर तबाही मचाना शुरु कर दिया है। भारी बारिश और आंधी के चलते कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानें को रद करना पड़ा है। यूएई में भारी बारिश और तूफान के चलते ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया। आज भी यूएई में भारी बारिश होने की संभावना है। मौजूदा मौसम के कारण देश के सभी सरकारी स्कूलों में आज छात्रों की ऑनलाइन कक्षाएं होंगी। वहीं, ज्यादातर कंपनियों के कर्मचारी वर्क फ्रॉम होम कर रहे हैं। पार्क और समुद्र तट बंद कर दिए गए हैं। अबू धाबी के कुछ इलाकों में गुरुवार को सड़कों पर पानी भर गया, जबकि जेबेल अली, अल मकतूम इंटरनेशनल एयरपोर्ट, दुबई इंडस्ट्रियल सिटी, दुबई इन्वेस्टमेंट्स पार्क और जुमेरा विलेज ट्राएंगल में तेज हवाएं चली हैं। बता दें कि 14-15 अप्रैल को भी भीषण बारिश के चलते अरब प्रायदीप के क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुए थे। इस दौरान दुबई में 1949 के बाद से सबसे अधिक बारिश हुई थी जो एक रिकार्ड थी। दुबई की एमिरेट्स एयरलाइन ने संयुक्त अरब अमीरात में खराब मौसम के कारण कई उड़ानें रद्द करने की घोषणा की।

पाकिस्तान में हादसा : पहाड़ी से फिसलकर नाले में गिरी बस ; 20 की मौत, कई घायल

पेशावर। उत्तर पश्चिम पाकिस्तान में शुक्रवार को एक बड़ा हादसा हो गया। जहां एक यात्री बस पहाड़ी इलाके से फिसलकर नाले में गिर गई, जिसमें सवार कम से कम 20 लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए हैं उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि घटना गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र के डायमेर जिले में काराकोरम राजमार्ग पर हुई। बस रावलपिंडी से हुंजा जा रही थी। इस दौरान चालक ने बस से नियंत्रण खो दिया और बस पहाड़ी से फिसलकर सीधे नीले में जा गिरी जिसमें कम से कम 20 यात्रियों की मौत हो गई और करीब 15 लोग घायल हो हुए है जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारी ने बताया कि यह साफ नहीं हो सका है कि बस में कितने यात्री सवार थे। अधिकारी ने बताया कि बचाव कार्य जारी हैं और शवों को अस्पताल पहुंचाया जा रहा है। अस्पताल के एक सूत्र ने बताया कि मृतकों में तीन महिलाएं भी शामिल हैं। मरने वालों की संख्या और बढ़ने की आशंका है क्योंकि घायलों में से कई की हालत गंभीर है। गिलगित बाल्टिस्तान के मुख्यमंत्री हाजी गुलबार खान ने घटना पर अफसोस जाहिर करते हुए प्रशासन को घायलों को तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान करने का निर्देश दिए हैं। गिल्टगिट-बाल्टिस्तान सरकार के प्रवक्ता फैजुल्लाह फराक ने कहा कि दुर्घटना के बाद चिलास अस्पताल में आपातकाल घोषित कर दिया गया है। घायलों को इलाज जारी है।

एक ऐसा देश जिसकी कुल आबादी 39 है, इनमें शामिल है 35 लोग और 4 कुत्ते

वॉशिंगटन। अमेरिका के नेवाडा में स्थित देश मोलोसिया की कुल आबादी 39 है, जिसमें 35 लोग और 4 कुत्ते शामिल हैं। यह एक माइक्रोनेशन है। इस देश के अपने अलग कानून, परंपरा, यहां तक की अलग करेंसी भी है। यहां के राष्ट्रपति बेखौफ होकर खुलेआम सड़कों पर घूमते नजर आ जाएंगे। इतना ही नहीं, अपने देश के हर नागरिक को वो पहचानते हैं और मिलना-जुलना भी होता है। बता दें कि 1977 में केविन बॉघ और उनके एक दोस्त को अलग देश बनाने का विचार आया था। ऐसे में दोनों ने मिलकर मोलोसिया को एक माइक्रोनेशन के रुप में स्थापित किया। तब से लेकर अबतक केविन इस छोटे से देश के राष्ट्रपति हैं। उन्होंने खुद को वहां का तानाशाह घोषित कर रखा है, जबकि उनकी पत्नी को मोलोसिया की पहली महिला का दर्जा मिला है। केविन ने अपने जिस दोस्त के साथ माइक्रो नेशन मोलोसिया के स्थापना की कल्पना की थी, उसने थोड़े समय के बाद ही इस आइडिया को त्याग दिया। लेकिन केविन के मन में ये आइडिया घर कर गया और उन्होंने अपने इस शौक को आगे जारी रखा। यहां रहने वाले ज्यादातर नागरिक केविन के रिश्तेदार हैं, जो इस देश के बॉर्डर के आस-पास रहते हैं। लेकिन इस देश को अभी तक दुनिया की किसी भी सरकार से मान्यता नहीं मिला है। इस छोटे से देश में दुकान, लाइब्रेरी, श्मशान घाट के अलावा कई अन्य सुविधाएं मौजूद हैं। कई लोग इस अनोखे देश का टूर करने आते रहते हैं। लेकिन अंदर आने के लिए टूरिस्ट को अपने पासपोर्ट पर स्टैम्प लगवाना पड़ता है। पिछले 40 सालों से केविन यहां आने वाले पर्यटकों को अपने छोटे से देश की सैर करवाते हैं। ये टूर कुल 2 घंटे का होता है। घूमने आने वाले लोगों का कहना होता है कि ऐसे मिलनसार तानाशाह कम ही देखने को मिलते हैं। मोलोसिया की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, इस देश का कुल क्षेत्रफल 11.3 एकड़ है, जिसके राजधानी का नाम बॉघस्टन है। वहीं, 26 मई को नेशनल हॉलीडे होता है।

चीन में बारिश से हाईवे ढहा, 48 की मौत

बीजिंग। साउथ चीन के गुआंग्डोंग प्रांत में तेज बारिश के कारण नेशनल हाईवे एस12 का एक हिस्सा ढह गया। इस हादसे में 48 लोगों की मौत हो गई और 30 से ज्यादा लोग घायल हैं। हादसा मीझोउ पहाड़ी के पास रात दो बजे हुआ, जिसमें सडक़ का एक लेन 18 मीटर तक नीचे ढह गया। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के मुताबिक हाईवे ढहने से 20 गाडिय़ां नीचे गिर गईं, इनमें 54 से ज्यादा लोग सवार थे। घटना की जानकारी मिलने पर 500 राहत कर्मियों ने बचाव कार्य संभाला। चीन सरकार ने मामले में जांच के आदेश दिए हैं।

लॉस एंजिल्स में पुलिस अधिकारी फिलिस्तीन के समर्थन में नारे लगाने वाले छात्रों को गिरफ्तार करते हुए।

चीन ने लॉन्च किया मून मिशन, इस पर पाकिस्तान का सैटेलाइट ; 53 दिनों में चांद के सबसे अंधेरे हिस्से से सैंपल लाने का लक्ष्य

बीजिंग। भारत के चंद्रयान-3 मिशन के बाद अब चीन ने भी अपना मून मिशन लॉन्च कर दिया है। इस मिशन का नाम चैंगई-6 मिशन है और इसमें पाकिस्तान का आईक्यूब-क्त सैटेलाइट लगा हुआ है। इस सैटेलाइट में 2 कैमरे हैं, जो चांद की सतह की तस्वीरें लेंगे। मून मिशन को हैनान द्वीप के वेन्चांग स्पेस साइट से लॉन्ग मार्च 5 रॉकेट के जरिए लॉन्च किया गया। ग्लोबल टाइम्स के मुताबिक, इस प्रोब का लक्ष्य चांद के दूर वाले हिस्से (जहां अंधेरा होता है) पर जाकर सैंपल इकट्ठे करके इन्हें धरती पर भेजना है। चीन का यह प्रोब 53 दिन तक चांद पर रहेगा, यानी 25 जून को यह धरती पर लौट आएगा। प्रोब शुरुआती कुछ दिन पृथ्वी की कक्षा में गुजारेगा और बाद में चांद की तरफ रवाना हो जाएगा। चीन ने साल 2030 तक इंसान को चांद पर भेजने का लक्ष्य रखा है। यह मिशन भी उसी टारगेट का हिस्सा है। अभी तक चांद पर जा चुके सभी 10 लूनर मिशन पास वाले हिस्से (जो हमें दिखता है) पर ही पहुंचे हैं। ऐसे में अगर चीन का मिशन सफल रहता है तो वो ऐसा करने वाला पहला देश बन जाएगा। चैंग ई-6 साउथ पोल-एटकेन बेसिन पर लैंड करेगा। यह चांद के तीन सबसे बड़े और प्रमुख जमीनी हिस्सों में से एक है। इसलिए इसकी साइंटिफिक वैल्यू बहुत ज्यादा है। चीन ने दूसरे देशों के साथ स्पेस को-ऑपरेशन बढ़ाने और रिश्तों को मजबूत करने के लिए उनके पेलोड ले जाने की घोषणा की थी। इसके तहत चीन पाकिस्तान के अलावा फ्रांस, इटली और यूरोपियन स्पेस एजेंसी का पे-लोड लेकर रवाना हुआ है।

53 दिनों का मिशन, 2 किलोग्राम सैंपल, जहां अब तक कोई नहीं गया, चांद पर उस जगह लैडिंग की योजना

ओटावा (एजेंसी)। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ स्पेस वॉर में कंधे से कंधा मिलाने के लिए चीन तैयार नजर आ रहा है। इसी क्रम में चीन ने चंद्रमा के सुदूर हिस्से से नमूने एकत्र करने के लिए शुक्रवार को अपना मिशन लॉन्च कर दिया है। चांग%ई-6 जांच चीन का अब तक का सबसे जटिल रोबोटिक मून मिशन है और एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बनने के लिए बीजिंग के प्रयास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। 'चांग' चंद्र अन्वेषण का नाम चीन के मिथकों में मिलने वाली एक देवी के नाम पर पड़ा है। चंद्रमा के दूरस्थ हिस्से को पृथ्वी से नहीं देखा जा सकता है।

53 दिनों का मिशन, 2 किलोग्राम सैंपल करेगा जमा

53-दिवसीय मिशन अभूतपूर्व है और यह चीन के तेजी से परिष्कृत और महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अन्वेषण कार्यक्रम में नवीनतम प्रगति होगी, जो पहले ही चंद्रमा के सुदूर हिस्से पर एक रोवर उतार चुका है, ऐसा करने वाला पहला देश बन गया है। चंद्रमा का रहस्यमय सुदूर भाग रेडियो खगोल विज्ञान और अन्य वैज्ञानिक कार्यों के लिए आदर्श है, लेकिन संचार बनाए रखने के लिए रिले उपग्रह की आवश्यकता होती है। सीएनएसए के अनुसार, चांग-6 में चार उपकरण- ''ऑर्बिटर, लैंडर, एसेंडर और री-एंट्री मॉड्यूल'' हैं। इस मिशन के जरिये चंद्रमा पर धूल और चट्टानों के नमूने एकत्र करने के बाद एसेंडर उन्हें ऑर्बिटर तक पहुंचाएगा, जो नमूनों को री-एंट्री मॉड्यूल को स्थानांतरित करेगा।

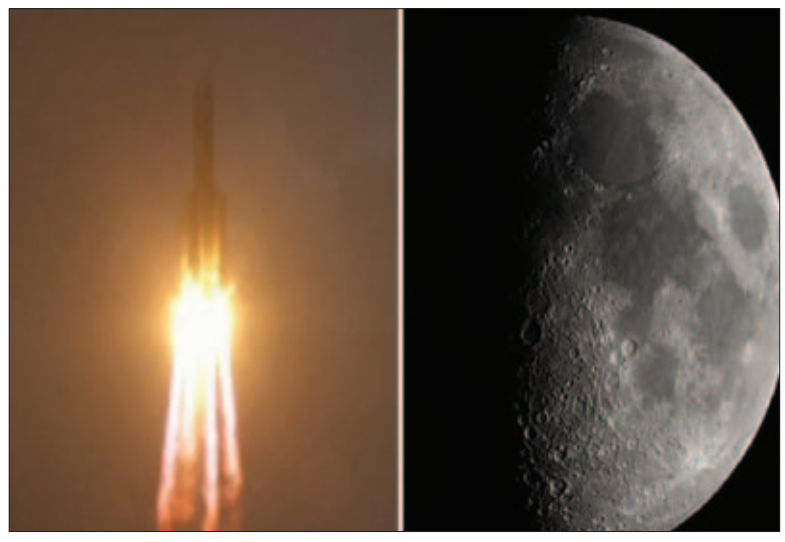

चंद्रमा की देवी के नाम पर मून मिशन

इस मिशन के जरिये चंद्रमा पर धूल और चट्टानों के नमूने एकत्र करने के बाद एसेंडर उन्हें ऑर्बिटर तक पहुंचाएगा, जो नमूनों को री-एंट्री मॉड्यूल को स्थानांतरित करेगा। इसके बाद, यह मॉड्यूल इन नमूनों को पृथ्वी पर लाएगा। सीएनएसए ने इससे पहले कहा था कि मिशन का उद्देश्य स्वचालित तरीके से नमूने एकत्र करना और फिर चंद्रमा के दूरस्थ हिस्से से उन्हें लेकर लौटने जैसी प्रमुख प्रौद्योगिकियों में सफलता हासिल करना है।

चंद्रयान-3 ने की थी चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैडिंग

चीन ने मंगल ग्रह पर भी रोवर भेजे हैं। इससे पहले, चीन ने 2030 तक चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्री को उतारने की अपनी योजना की घोषणा की थी। भारत, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास रोवर उतारने वाला पहला देश है। पिछले साल, भारत का चंद्रयान-3 लैंडर और प्रज्ञान रोवर वहां सफलतापूर्वक उतरा था। पृथ्वी के सम्मुख कभी न आने वाला चंद्रमा का दूरस्थ हिस्सा रेडियो खगोल विज्ञान एवं अन्य वैज्ञानिक कार्य के लिए उपयोगी है।

स्थानीय चुनावों के खराब नतीजों के बाद दबाव में प्रधानमंत्री सुनक

-40 साल में पार्टी का सबसे बुरा प्रदर्शन

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन के मौजूदा पीएम ऋषि सुनक की पार्टी के लिए आगामी चुनाव की राह मुश्किलों भरी दिखाई दे रही है। पार्टी को चुनाव में कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, स्थानीय चुनावों के खराब नतीजों के बाद रातोंरात स्थिती बदल गई है। इन चुनाव नतीजों को 40 साल में सत्तारूढ़ कंजर्वेटिव पार्टी का सबसे बुरा प्रदर्शन बताया जा रहा है।

कंजर्वेटिव पार्टी विपक्ष की लेबर पार्टी से पीछे छूटती दिखाई पड़ रही है। इतना ही नहीं ब्लैकपूल दक्षिण उपचुनाव में टोरी को मिले बहुमत भी पलट गया है। ऐसे में विपक्षी दल को लाभ मिलने के बाद भारतीय मूल के नेता सुनक को खुद की पार्टी के लोगों का विरोध झेलना पड़ सकता है। यह संभावना जताई जा रही है।

स्टर्मर ने एक प्रचंड जीत करार दिया

आम चुनाव से पहले उपचुनाव के आए नतीजे को लेबर पार्टी के नेता सर कीर स्टर्मर ने एक प्रचंड जीत करार दिया। साथ ही उन्होंने इस नतीजे को पार्टी के पक्ष में एक समग्र चुनावी जनादेश के रूप में घोषित किया।

ब्लैकपूल पूरे देश की आवाज

उपचुनाव को लेकर स्टर्मर ने कहा, ब्लैकपूल पूरे देश की आवाज है। यहां के लोगों को ऋषि सुनक की कंजर्वेटिव पार्टी को सीधा संदेश भेजने का मौका मिला और उनका संदेश था कि वह बदलाव के लिए वोट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सुनक के लिए यह स्पष्ट संदेश है कि अब बदलाव का समय है। आम चुनाव का समय है।

सबसे खराब प्रदर्शन

दरअसल, ब्लैकपूल साउथ में लेबर उम्मीदवार क्रिस वेब ने कंजर्वेटिव के नेता डेविड जोन्स को उस निर्वाचन क्षेत्र में हराया, जहां टोरी ने साल 2019 में जीत उपलब्ध की थी। प्रख्यात सर्वेक्षक प्रोफेसर जॉन कर्टिस ने का कहना है, हम पिछले 40 वर्षों में स्थानीय सरकार के चुनावों में कंजर्वेटिव पार्टी के सबसे खराब प्रदर्शन को देख रहे हैं।

भारत के खिलाफ बाइडेन ने ऐसा क्या कहा... व्हाइट हाउस को देनी पड़ रही सफाई

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन फिर भारत विरोधी बयान देने की वजह से सुर्खियों में हैं। अक्सर दूसरे देशों के मामले में दखल देने वाले बाइडेन ने भारत को एक जेनोफोबिक देश कहा है। बता दें कि जेनोफोबिया से ग्रसित उन्हें कहा जाता है जो अजनबियों से डरते हैं या बाहरी अपचरित व्यक्तियों से नफरत करते हैं। अब मामले के तूल पकड़ने के बाद व्हाइट हाउस की तरफ से बयान भी सामने आ गया है। व्हाइट हाउस ने अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन की जेनोफोबिक टिप्पणी पर सफाई देकर स्पष्ट किया है कि उन्होंने एक व्यापक बिंदु पर टिप्पणी की थी कि देश में अप्रवासियों का होना कितना जरूरी है और कैसे इनके कारण हमारा देश मजबूत बनता है। वह इस बारे में बात कर रहे थे। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन जीन-पियरे ने कहा कि अमेरिकी सहयोगी और साझेदार अच्छी तरह से जानते हैं कि बाइडेन उनका कितना सम्मान करते हैं।

बाइडेन ने भारत के साथ चीन, रूस और जापान को भी जेनोफोबिक देश बताया था। 2024 में फिर से सत्ता में आने के लिए वाशिंगटन में फंड रेसिंग प्रोग्राम में अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था के बढ़ने का एक कारण आप और कई अन्य लोग हैं। क्यों? क्योंकि हम अप्रवासियों का स्वागत करते हैं। बाइडेन इस साल होने वाले अमेरिकी चुनान में राष्ट्रपति पद की रेस में रिपब्लिकन उम्मीदवार और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ मैदान में हैं। उन्होंने अक्सर अपने प्रतिद्वंद्वी की आप्रवासी विरोधी बयानबाजी के लिए आलोचना की है।

भारत के खिलाफ शिकायत करने संयुक्त राष्ट्र पहुंचा पाकिस्तान, कर डाली इतनी सारी शिकायतें

वॉशिंगटन (एजेंसी)। देश में जो कुछ भी गलत होता है उसके लिए भारत को दोषी ठहराने की पाकिस्तान की लंबे समय से चली आ रही आदत का एक और उदाहरण, इस्लामाबाद संयुक्त राष्ट्र के दरवाजे पर पहुंच गया है। पाकिस्तान की तरफ से नई दिल्ली पर अतिरिक्त-न्यायिक और अतिरिक्त-क्षेत्रीय कार्य करने के अविवादित सबूत का आरोप लगाया है। पाकिस्तानी धरती पर हत्याएं. भारत द्वारा %व्यवस्थित अभियान% चलाने का पाकिस्तान का आरोप तब आया है जब कई देशों ने आतंकवादी समूहों द्वारा सीमा पार हमलों को चिह्नित किया है, जिन्हें वहां सुरक्षित आश्रय प्रदान किया गया है।

26 अप्रैल को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपनी शिकायत में, पाकिस्तान, जिसका सीमा पार आतंकवादियों को भेजने का संदिग्ध रिकॉर्ड है। उसने अंतरराष्ट्रीय कानून, देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के उल्लंघन का दावा करके एक विडंबनापूर्ण हंगामा खड़ा कर दिया। इसमें आगे दावा किया गया कि भारतीय एजेंटों द्वारा संचालित एक नेटवर्क सक्रिय रूप से सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से भर्ती, वित्तपोषण और इन गतिविधियों के निष्पादन को

नियंत्रित करने में लगा हुआ है। अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए इन कार्रवाइयों की गंभीरता और निहितार्थ को देखते हुए, मैं संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से भारत द्वारा किए गए अंतरराष्ट्रीय कानून के इन उल्लंघनों को तुरंत संबोधित करने और निंदा करने का आग्रह करता हूं।

पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने लिखा कि भारत के राज्य-प्रायोजित आतंकवाद को तत्काल रोकने और इसका सम्मान करने का आह्वान करता हूं। सभी देशों की संप्रभुता और ऐसे सभी अपराधियों को जवाबदेह ठहराने के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करते हैं। इसने गैर-न्यायिक हत्याओं पर गार्जियन की एक हालिया रिपोर्ट का भी हवाला दिया, जिसे भारत ने झूठा और दुर्भावनापूर्ण प्रचार के रूप में स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया है।

हर साल 25 कुंवारी लड़कियों को चुनकर अपना सेक्स गुलाम बनाता है तानशाह

प्योंगयांग (एजेंसी)। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन हर साल 25 कुंवारी लड़कियों को चुनते हैं। इन लड़कियों को चुनकर वे अपने प्लेजर स्क्वाड का हिस्सा बनाते हैं और अपने महल में रखकर शारीरिक संबंध बनाते हैं। रिपोर्ट में 30 साल की कोरियन यूट्यूबर और लेखिका ओनमी पार्क ने दावा किया है कि लड़कियों को चुनने में उनकी खूबसूरती के साथ राजनीतिक वफादारी को भी देखा जाता है। पार्क का दावा है कि प्लेजर स्क्वाड में शामिल करने के लिए उनकी भी दो बार खोज की गई थी लेकिन पारिवारिक स्थिति के कारण उन्हें नहीं चुना गया। ओनमी 2007 में 13 साल की उम्र में उत्तर कोरिया से भाग गई थीं। इसके बाद वह दक्षिण कोरिया और फिर अमेरिका चली गईं।

पार्क का कहना है कि लड़कियों को चुनने का काम बड़े स्तर होता है। सनकी तानशाह के लोग इसके लिए स्कूलों में जाकर भी सुंदर लड़कियों की तलाश करते हैं। एक बार जब उन्हें कुछ सुंदर लड़कियां मिल जाती हैं, तब उनकी पारिवारिक और राजनीतिक स्थिति की जांच की जाती हैं। उन सभी लड़कियों के नाम हटा दिए जाते हैं, जिनके परिवार के सदस्य उत्तर कोरिया से भाग गए हैं। या जिनके रिश्तेदार दक्षिण कोरिया और दूसरे देशों में हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, लड़कियों की पारिवारिक स्थिति की परख के बाद अगला कदम उनका मेडिकल परीक्षण होता है। मेडिकल जांच का मकसद ये देखना होता है कि लड़की वर्जिन हैं कि नहीं। इसके बाद कुछ और मेडिकल जांच से लड़कियों को गुजरना होता है। किसी लड़की के शरीर पर कोई छोटा सा निशान भी अयोग्यता की वजह बन सकती है। तमाम जांच के बाद जो लड़कियां चुनी जाती हैं, उन्हें राजधानी प्योंगयांग भेज दिया जाता है। लड़कियां जब प्लेजर स्क्वाड का हिस्सा बन जाती हैं, उनका काम सिर्फ और सिर्फ यौन सुख देना होता है। पार्क ने कहा कि किम जोंग उन के पिता किम जोंग इल का मानना था कि किशोर लड़कियों के साथ यौन अंतरंगता उन्हें अमर कर सकती है। किम जोंग इल ने इसके लिए 1980 के दशक में कुछ सुंदर लड़कियों को चुनने का फैसला लिया था। 2011 में 70 साल की उम्र में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मौत हो गई और उनके बेटे किम जोंग उन के हाथ में सत्ता आ गई। किम जोंग उन भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं।

पार्क का कहना है कि इस स्क्वाड में भी तीन अलग-अलग विभाग हैं। कुछ लड़कियों को मालिश में ट्रेनिंग दी जाती है। एक वर्ग किम और उसके करीबी लोगों के मनोरंजन के लिए गायन और डांस में माहिर होता है। तीसरा समूह यौन गतिविधियों के लिए होता है। इसमें शामिल लड़कियों को किम के साथ यौन संबंध बनाने

होते हैं। सबसे सुंदर लड़कियों को किम के पास भेजा जाता है। कम सुंदर लड़कियों को जनरलों और दूसरे राजनेताओं के पास भेजा जाता है। ओनमी पार्क का कहना है कि इस दस्ते की महिलाएं जब 25 साल की उम्र को पास कर लेती हैं, तब उन्हें रिटायर कर दिया जाता है। आमतौर पर उनकी शादी किम के अंगरक्षकों से कर दी जाती है। प्लेजर स्क्वाड की महिलाओं को सुरक्षा सेवाओं के सदस्य से शादी करने का विशेषाधिकार है।

संक्षिप्त खबरें

यूसील में पेंशन के मुद्दे पर प्रबंधन व यूनियन के बीच बैठक आज,

जादूगोड़ा :यूसील कर्मचारियों के लंबित पेंशन के मुद्दे पर यूसील प्रबंधन व चार मजदूर संगठनों के बीच कल शनिवार को बैठक होगी .यह बैठक दिन के 11:00 बजे बुलाई गई है.जिसकी पुष्टि यूरेनियम मजदूर संघ महामंत्री आनंद महतो ने की. उन्होंने कहा की बेसिक का 30 प्रतिशत के आधार पर उनकी यूनियन पेंशन का मांग रखेगा वही बैठक में वर्षो से अटके पोस्ट रिटायरमेंट मेडिकल सुविधा में उनकी प्राथमिकता सूची में शामिल है इस बैठक में यूरेनियम मजदूर संघ की ओर से आनंद महतो , चंद्र शेखर पंडित समेत सिंहभूम यूरेनियम मजदूर यूनियन, जादूगोड़ा लेबर यूनियन व यूरेनियम कामगार यूनियन के प्रतिनिधि शिरकत करेंगे।

जादुगोडा यूसिल लेबर यूनियन द्वारा झंडोत्तोलन कर इंटक का स्थापना दिवस मनाया

जादूगोड़ा: 3 मई 1947 में इंटक का स्थापना हुआ था इस दिन पुरे विश्व में और हमारे पुरे भारत में दिवस मनाया जा रहा है जादुगोडा यूसिल लेबर यूनीयन के उपाध्यक्ष और झारखंड प्रदेश इंटक संयुक्त सचिव महेन्द्र मिश्रा द्वारा झंडोत्तोलन कर इंटक का स्थापना दिवस मनाया गया । कार्यक्रम में मौजूद संजय हांसदा, विक्की गोप, छोटू माझी,जे एनमार्डी, लखन मार्डी,संजय हांसदा, राजू मुखी,संजय भूमिज आदि ।

मतदाताओं के बीच मार्गदर्शिका वितरित

लोहरदगा। लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 अंतर्गत शुक्रवार को स्वीप गतिविधि के अंतर्गत पलाश (जेएसएलपीएस) द्वारा कुडू , किस्को एवं पेशरार प्रखंड में स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत स्वीप बैनर के तले सखी मंडल की दीदियों के द्वारा बैठक का आयोजन कर मतदाता शपथ लिया गया तथा सबको 13 मई को मतदान करने के लिए जागरूक किया गया। बताया गया कि इस बार मतदान सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक होना है। इसलिए अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए अतिरिक्त समय मिल रहा है। इसलिए चुके नहीं, मतदान अवश्य करें।

बिना जांच के किसी के ऊपर टिप्पणी बर्दाश्त नहीं करूंगा: अवधेश उरांव

लोहरदगा । विगत कुछ दिनों से आदिवासी छात्र संघ के लोहरदगा जिला अध्यक्ष अवधेश उरांव का लोहरदगा संसदीय क्षेत्र से बीजेपी के प्रत्याशी समीर उरांव के साथ फोटो वायरल किया जा रहा है,वायरल फोटो के मामले में आदिवासी छात्र संघ के अध्यक्ष अवधेश उरांव ने अपनी प्रतिक्रिया दी है और कहा यह फोटो पुराना है वर्ष 2024 के रामनवमी उत्सव को लेकर केंद्रीय महावीर मंडल कुडू के द्वारा संचालन ऑफिस का उद्घाटन किया जा रहा था। जिसमें केंद्रीय सरहुल संचालन समिति कुडू के प्रतिनिधियों को भी बुलाया गया था जिसमें मैं और सरहुल संचालन समिति कुडू के सचिव -जतरु उरांव मेहमान के रूप में उपस्थित हुए थे। उस कार्यक्रम में लोहरदगा संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी समीर उरांव भी उपस्थित हुए थे उसी कार्यक्रम में सभी लोगों को समीर उरांव के द्वारा सभी मेहमानों को सम्मानित किया गया था। अवधेश उरांव ने कहा कि मैं आदिवासी छात्र संघ का जिला अध्यक्ष हूं मैं अपने छात्रों के हक और अधिकार के लिय लड़ाई लड़ता हूं हमलोगों का उस कार्यक्रम में जाना एक सामाजिक और भाईचारगी था। ना कि राजनीतिक हमारे फोटो को इस प्रकार वायरल करके हमारे ऊपर आरोप लगाया जा रहा है जो काफी ही गलत है हमलोग किसी पार्टी से तालुकात नहीं रखते हैं, न ही किसी राजनीतिक पार्टी का हिस्सा हैं और जो भी इस तरह के कार्य कर रहे हैं उनके ऊपर सामाजिक करवाई किया जाएगा।

ट्रक मालिकों की बैठक आज

लोहरदगा। ट्रक मालिकों की महत्वपूर्ण बैठक 04 मई शनिवार को आयोजित की गई है। इसकी जानकारी देते हुए कंवलजीत सिंह ने बताया कि ट्रक ऑनर एसोसिएशन के संरक्षक सह रास सांसद धीरज प्रसाद साहू के निदेर्शानुसार 04 मई दिन शनिवार को प्रातः 11:00 बजे से श्री साहू जी के आवास साहू सदन,थाना रोड में सभी माइंस में चलने वाले ट्रक मालिको की एक आवश्यक बैठक रखी गई है, जिसमें अमतीपानी ,न्यू अमतीपानी(चिरोड़ीह)कुजाम, गुरदरी ,सेरेगदाग,जालिम ,भैंस बथान ,विमरला, पाखर सहित सभी ट्रक मालिकों को आमंत्रित किया गया है। बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा एवं निर्णय लिए जाएंगे।

चतरा में सुरक्षाबलों ने एक दर्जन आईईडी किया बरामद

चतरा। जिले के कुशमाहा जंगल से सुरक्षाबलों ने शुक्रवार को एक दर्जन आईईडी बरामद किया। बम निरोधक दस्ते की टीम ने बरामद आईईडी को मौके पर नष्ट कर दिया है। जानकारी के मुताबिक, चतरा जिले के प्रतापपुर थाना क्षेत्र स्थित कुशमाहा जंगल में सर्चिंग के दौरान सीआरपीएफ और जिला पुलिस की संयुक्त टीम ने डेढ़-डेढ़ किलो के एक दर्जन आईईडी बरामद किया, जिसे बीडीएस की टीम ने मौके पर नष्ट कर दिया। इलाके में सुरक्षाबलों का सर्च अभियान जारी है।

जेपी पटेल के 5 मई को केरेडारी एवं पिपरवार दौरा को लेकर विधायक अंबा प्रसाद ने गठबंधन के साथियों के साथ की बैठक

विस्थापितों के हक अधिकार को बचाना है तो महागठबंधन प्रत्याशी को जीत दिलाना होगा:अंबा

बिभा संवाददाता

केरेडारी : आगामी 5 मई दिन रविवार को लोकसभा के महागठबंधन प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल का केरेडारी एवं पिपरवार दौरा मे जनसंपर्क करना कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ है। जिसकी तैयारी को लेकर केरेडारी में महागठबंधन के नेता एवं कार्यकताओं के साथ बैठक हुई। उक्त बैठक में मुख्य रूप से स्थानीय विधायक अंबा प्रसाद मौजूद रही। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सह 20 सूत्री उपाध्यक्ष रविंद्र कुमार गुप्ता एवं संचालन दिलदार अंसारी ने किया। बैठक में लोकसभा प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल को भारी मतों से विजयी बनाने एवं आगामी रविवार को होने वाले जनसंपर्क अभियान को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। जिसमे निर्णय लिया गया कि रविवार को प्रखंड के सभी 16 पंचायत एवं पिपरवार क्षेत्र के तीन पंचायतों में जनसंपर्क अभियान चलाया जाएगा जिसका रूट चार्ट भी बनाया गया। विधायक अंबा प्रसाद ने संबोधित करते हुए कहा कि विस्थापितों के हक अधिकार को बचाना है तो महागठबंधन प्रत्याशी को जीत दिलाना होगा। पूरे लोकसभा क्षेत्र में जयप्रकाश भाई पटेल को सभी वर्ग जाति, समुदाय का भरपूर सहयोग मिल रहा है, आने वाले 20 मई को एकजुटता का परिचय देते हुए हाथ छाप का बटन दबाकर लोकसभा प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल को विजय बनाना है। महागठबंधन के सहयोगी माले नेता पैरु प्रताप ने अनुशासन में रहकर जनसंपर्क अभियान चलाने की बात कही। वहीं झामुमो नेता विनेश पासवान ने कहा कि महागठबंधन प्रत्याशी को जीत दिलाने के लिए जो भी जिम्मेदारी मिलेगी उसका निर्वहन ईमानदारी से करूंगा। वहीं प्रखंड अध्यक्ष रविंद्र गुप्ता ने महागठबंधन के घटक दलों से जनसंपर्क अभियान में शामिल होने का आह्वान किया है, और बताया कि रविवार को सुबह 6:30 बजे से प्रखंड के राजाबागी से जनसंपर्क अभियान की शुरूआत होगी जो देवरिया, बारियातू, कंडाबेर, बेलतू, हेवई, मनातू, पांडू, बेगबरी, चट्टी बरियातू, पचड़ा, किचटो, बचरा उतरी, पताल, बुंडू, सलगा, पेटो, कराली, केरेडारी एवं गरीकला में कार्यक्रम समाप्त होगी। बैठक में मौके पर मुख्य रूप से प्रमुख सुनीता देवी, विधायक प्रतिनिधि सुरेश साव,चंदन गुप्ता, नरेश साव, बालेश्वर साव, उमेश साव, संतोष कुमार शर्मा,विनेश पासवान, अनिल कुमार तिवारी विजय देवा, झामुमो नेता गुप्तेश्वर प्रसाद महतो, संदीप कुमार नायक,पैरू प्रताप, रामकुमार दुबे, विनोद साव, राम अवतार साव, लाल मोहन गिरी, दिगंबर साव, मंजू देवी, ईश्वर राम, गीता देवी, मोहन साव, जागेश्वर साव, छकन भोक्ता, चंद्रिका रजक, रंजीत कुमार साव, गजेंद्र यादव, भागीरथ साव, मनोज साव, गणेश साव, संजीत साव, प्रभु यादव, करमजीत यादव, सिकंदर यादव, जितेंद्र यादव सहित कई लोग मौजूद थे।

मतदानं पदाधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण

बिभा संवाददाता

लोहरदगा। लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 में प्रतिनियुक्त मतदानं पदाधिकारियों (पीठासीन पदाधिकारी, प्रथम मतदानं पदाधिकारी, द्वितीय मतदानं पदाधिकारी और तृतीय मतदानं पदाधिकारियों) का प्रशिक्षण आज शुक्रवार को नदिया हिन्दू प्लस टू उच्च विद्यालय लोहरदगा में आयोजित हुआ। प्रशिक्षण में निर्वाचन में सभी पदाधिकारियों के दायित्व, सेक्टर पदाधिकारी द्वारा पोलिंग पार्टी, रिटर्निंग ऑफिसर व जिला निर्वाचन पदाधिकारी के बीच महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में किये जाने वाले कार्य की विस्तृत जानकारी मास्टर ट्रेनर्स द्वारा दी गई।पदाधिकारियों को बताया गया कि उनके अधीन सभी मतदान केंद्रों की गहन जानकारी उन्हें होनी चाहिए। पदाधिकारियों का कार्य मतदान के पूर्व, मतदान दिवस और मतदान के उपरांत सभी समय होता है। सभी मतदान केंद्रों के पहुंच पथ की जानकारी, मतदान केंद्र में उपलब्ध आधारभूत संरचनाओं की जानकारी होनी चाहिए। अगर नहीं है तो उसकी जानकारी दी जानी चाहिए। मतदाताओं निर्भीक होकर मतदान कराने में सभी पदाधिकारी के कार्यों की जानकारी दी गई। मतदान दिवस के पूर्व मतदान के लिए प्रतिनियुक्त पोलिंग पार्टी, मतदान सामग्री की उपलब्धता, आदर्श आचार संहिता का अनुपालन सुनिश्चिता जैसे कार्यों की जानकारी दी गई। मतदान के दिन किसी ईवीएम या वीवीपैट में खराबी आने पर आवश्यक कार्रवाई, समय समय पर रिटर्निंग ऑफिसर को विभिन्न रिपोर्ट भेजे जाने समेत अन्य विस्तृत जानकारी पदाधिकारियों को दी गई।

झाममो के वरिष्ठ नेता सह विधायक प्रतिनिधि ने भाजपा का दामन थामा

बिभा संवाददाता

खरसावां : झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता सह विधायक प्रतिनिधि परीक्षित महतो ने आज अपने 400 समर्थकों के साथ भाजपा का दामन थामा। खरसावां विधानसभा क्षेत्र के नेगटासाई के आम बागान में आयोजित सभा में उन्होंने खूंटी के लोकसभा प्रत्याशी सह मंत्री अर्जुन मुंडा की सभा में आज उन्होंने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की । इस अवसर पर जमशेदपुर के सांसद विद्युत वरण महतो, खरसावां के पूर्व विधायक मंगल सोय और जिलाध्यक्ष उदय सिंहदेव उपस्थित थे।

बता दें कि श्री महतो राजद के जिला अध्यक्ष के साथ 2009 के लोकसभा चुनाव में जमशेदपुर से लोजपा के प्रत्याशी भी रह चुके हैं। श्री महतो के भाजपा के दामन थामने से इस क्षेत्र में भाजपा को मजबूती मिली है। बता दें कि परीक्षित महतो पिछले 20 सालों से इस क्षेत्र में सक्रिय राजनीति में हैं। वे वर्ष 2001 से 2009 तक राजद के जिला अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने 6 साल पूर्व झा मु मो का दामन थामा और इस क्षेत्र से विधायक दशरथ गागराई के प्रतिनिधि थे ।उन्होंने भाजपा में जाने की मुख्य वजह इस क्षेत्र की उपेक्षा बताई ।उन्होंने कहा कि 6 साल पूर्व किए गए कोई भी वादे पूरे नहीं किए गए।उन्होंने अर्जुन मुंडा के नेतृत्व पर अपना विश्वास जताया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश का भविष्य बताया।

राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में भाग लेने को ले ताइक्वांडो खिलाड़ी देवघर रवाना

बिभा संवाददाता

लोहरदगा: तीसरा झारखंड राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए लोहरदगा जिले से 15 खिलाड़ी प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए शुक्रवार को देवघर रवाना हुए। महल बॉमपास टाउन देवघर में सब जूनियर कैडेट जूनियर और सीनियर वर्क की दो दिवसीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता होनी है। इस दो दिवसीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता का आयोजन 4 एवं 5 मई को होगा। प्रतियोगिता में शामिल होने जा रहे खिलाड़ियों में आयुष्मान कुमार, आकांक्षा कुमारी ,राखी कुमारी, साक्षी कुमारी ,संतोषी कुमारी, आर्यमन प्रताप सिंह , आयुष्मान प्रताप सिंह, प्रिंस कुमार, रोशन कुमार ,ऋतिक पाल, बिजेंदर उरांव, पंकज उरांव ,राहुल कुमार राम आर्यन पाल, प्रिंस दुबे शामिल हैं। वहीं इस दौरान ताइक्वांडो कोच अरविंद यादव एवं खिलाड़ियों को डिवाइन पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर ज्ञान गंगा सिंह , और एच एस इंपीरियल पब्लिक के डायरेक्टर इरशाद अंसारी, डिवाइन पब्लिक स्कूल बारीडीह के डायरेक्टर आननदीप सिंह, प्रिंसिपल किरण सिंह, सहित अन्य लोगों ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देकर रवाना किया।

जेपी पटेल ने कटकमदाग प्रखंड में चलाया जनसंपर्क अभियान

बिभा संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग लोक सभा क्षेत्र से इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी जय प्रकाश भाई पटेल ने शुक्रवार को कटकमदाग प्रखंड में जनसंपर्क अभियान चलाया। जिसमे सलगांवा, लुटा, नावाडीह, पकरार, सलगा, सुलताना, बेन्दी, अडरा, तिलैया, चीची, कटकमदाग बांका, बानादाग, पसई, मसरातू, रेवाली, रसूलीगंज, सिरसी नृसिंह स्थान चौक, खपरियावा, बन्हा चौक, नवादा चौक, बेस में जनसम्पर्क अभियान चलाया। मौके पर कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह, चंद्र शेखर मिश्रा, बिनोद कुशवाहा, धीरेंद्र दूबे, सुनील कुमार ओझा, विरेन्द्र सिहं, उदय कुमार साव, असगर अली, मो जमालुद्दीन, संदीप कुमार, अजय कुमार, मनोज कुमार, राजेश कुमार, बिनोद सिंह, संजय कुमार, पिन्टू सिंह, नवीन कुमार सिह, विक्रम सिंह, राहुल कुमार, राजेंद्र प्रसाद, शोनू कुमार, किरण देवी, मनोज कुमार कौशिक कुमार समेत कई नेता व कार्यकर्ता मौजूद थे।

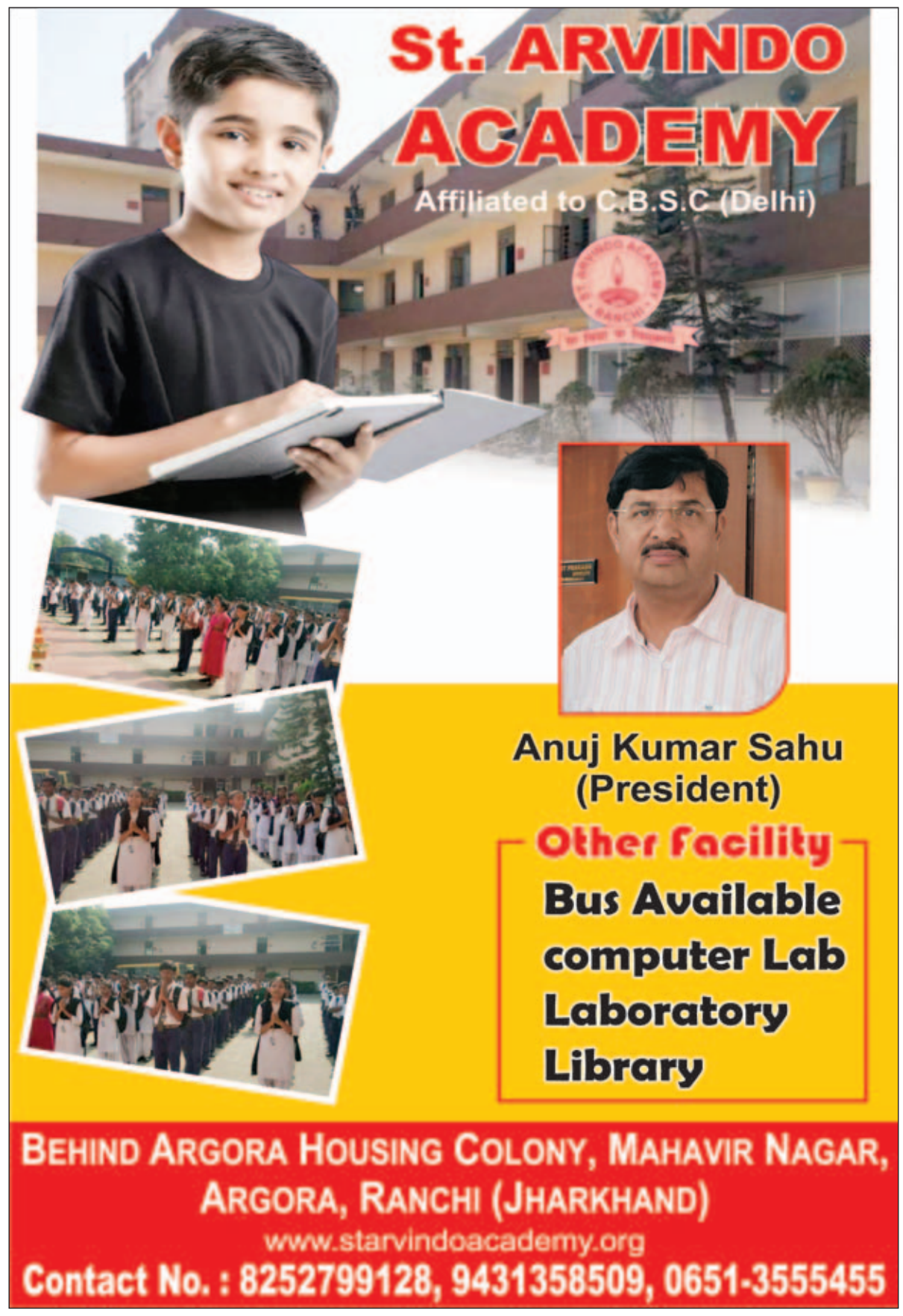

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक संजय कुमार के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। संपादक कविता साहू *पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com